रटनी खढ़

रटनी खढ़

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

RATNI KHARDH

Collection of Long Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-22-3
दाम: 251/- (भा.रु.)

चारिम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2014)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक
ढेरपर बैसल फुलबारी लगौनिहार
तथा नव विहान अननिहारकेँ
समरपित

कथाक सत्तैर-

किरदानी

रामरूप प्रसाद जे छह मास पहिनहि लेबर-कमिश्नरक पदसँ सेवा-निवृत भेल छला, गाम एला।

नव लोकक आगमनसँ गाममे चहल-पहल शुरू भेल। जेते मुँह तेते बोल, कियो 'बौआ भाय' तँ कियो 'बौआ काका' तँ कियो 'लाल बौआ' कहि-कहि रामरूप प्रसादकेँ सम्बोधित करैत। धिया-पुताकेँ मतलबे कोन जे के आएल के गेल। जुआन-जहानसँ लऽ कऽ चेतन-अधवेशू धरि अपन-अपन हाजरी दर्ज करबए पहुँच रहल छला। केना नै पहुँचतैथ, गामक पहिल बेकती जे एते नमहर हाकिम छैथ...। किए बुझत जे हाकिमपना चलि गेलैन, खलिये रामरूप छैथ।

बेठेकानो आमक गाछपर गोला फेक पाकल आम तोड़ने तँ अनठेकानो ने ठेकाने बनि जाइए, तहिना अपन गामक पूर्वपीठिया देखि जँ गौंआँ रामरूप बाबूकेँ भेँट करए अबै छैथ तँ अपन सामाजिकतो ने निमाहि लइ छैथ। जाबे धरि कमिश्नर साहैब काज करै-जोकर छला ताबे धरि गाम दिस तकबे ने केलैन आ जखन अथबल, श्रमहीन भऽ गेला तखन गाम मोन पड़लैन। गाम कि मोन पड़लैन, मोन पड़लैन पिताक पुश्तैनी भूमि। पुश्तैनी भूमि तँ हजारो लाखो अछि मुदा से नहि, केते खेत आ ओकर केते मूल्य भेल। खाएर, किछु हुअए मुदा स्वयं देशक नागरिक होइक नाते एते तँ अधिकार सभकेँ छइहे जे जे मन फुरै, जेना मन फुरै तेना अपन सम्पैतिक उपयोग करए। चाहे बेल रोपए आकि बगूर। मुदा एहनो की नै होइए जे अनकर गोरहा, चौमासकेँ बाँस-गाछ रोपि अछाह

करि नष्ट कऽ देल जाइए?

चाह-पर-चाह, पान-पर-पान रामरूप बाबू दिससँ चलि रहल अछि, लोकक आवा-जाही अछिए। लोको लाज तँ ओहने ने लाज भेल जेहेन वैदिक लाज होइए। ओना, किछु गोरे जे भरि दिन रौद-वसातमे रहै छैथ हुनकर दुनियोँ तँ अँगने भरिक छैन, ओकरा आनसँ मतलबे कोन? जेतबे अँगना रहत तेतबे पथार पसारब। मुदा फुसन काका कमिश्नर साहैबसँ भेँट करए एला।

फुसन काका गामक ओहेन लोक जिनका अदहा गामक लोक फुसियाह झुट्ठा कहै छैन तँ अदहा गामक लोक उचितवक्तो आ ठाँहि-पठाँहि बजनिहार सेहो तँ कहिते छैन। ई तँ अद्भुत खेल अछि जे एके गोरे दुनू केना? साल-दू-साल फुसन काका कमिश्नर साहैबसँ जेठे रहैथ, मुदा जेठ-छोट उमेरेटा सँ नै मानल जाइए दोसरो-तेसरो कारण छै, खाएर जे छइ। फुसन काका कमिश्नर साहैबक बगलेमे बैस पहिने तँ दोसर-तेसरक बात सुनलैन मुदा चाह पीला, पान खेला पछाइत अपनो मुँह खोललैन-

“जुगो पछाइत दुनू गोरे एकठाम भेलौं, सभ हरेलहा समय हेरा गेल। केम्हर-केम्हर उदए भेलै?”

कानून-कायदाक लोक रामरूप बाबू तँए शास्त्रीय भाषाक बोध नहि। मुदा तैयो अपन बात रखैत बजला-

“अपन जे पाँचो बीघा चौमास अछि तइमे सागवानक खेती करब।”

कमिश्नर साहैबक बात सुनि फुसन कक्काक मन कड़कलैन। कड़कलैन ई जे दसे बीघा नकोर जमीन गाममे अछि, तेहेन चौरियाह गाम अछि जे केकरो घर छै तँ अगवास नहि आ अगवास छै तँ गाछी-कलम नहि, तैठामक खेतमे सागवानक खेती गाममे हएत! वन विभागकेँ बोनक जंगलेटा सुझै छै मंगल नै सुझै छइ। दुनियाँक कोन एहेन उपजा

अछि जेकरा मिथिलांचलक भूमि अंगीकार करैक शक्ति नै रखैए, मुदा ई तँ विचारणीय भेल। बर्खाक कटाउ हौउ आकि बाढ़िक आकि वायु प्रदूषण, गाछ-बिरीछ तँ जरूरी अछिए। मुदा जैठामक गाछ फलो दइए, लकड़ियो दइए, नीक ऑक्सिजनो दइए तेकरा छोड़ि जे एकमुश्त पनरह बरख सम्पैतकेँ घेराबन्दी कऽ लेब.! तहूमे जेकर उपयोग अपना जिनगीमे नहि.!

मुदा बजला किछु ने। हड़ताली कर्मचारी जकाँ मुँहमे ताला झुलौने रहला, तरे-तर हूँहकारी भरैत रहला। चारूकात घुमा-घुमा मुड़ी डोलबैत रहला। मन केम्हरो, शकल-सूरत केम्हरो घुमि रहल छैन! समाज दिस नजैर पड़िते मन हुमड़लैन। हुमड़लैन ई जे समाजोकेँ की डोराडोरि छै जे डाँड़ सक्कत रहतै। बिनु डोराडोरिक समाज केमहर करखन ससैर जाएत तेकर कोनो ठेकान छइ। नीक करू आकि अधला, किछु गोरे तँ संग पुरनिहार हेबे करता, जखन समूह संग पुरनिहार तखन समाजक जँ विरोधो अछि तँ समर्थनो तँ अछिए। समाजे पाबि ने कियो शक्तिशाली बनैए। भलेँ समाज जेहेन होइ। नमहर भेने नमहर आ छोट भेने छोट। तहिना नीकक बनने नीक आ अधलाक बनने अधला...।

मुदा लगले फुसन कक्काक मनमे उठलैन, एक तँ ओहिना पाइ-कौड़ीबला लोक रामरूप बाबू छैथ, तैपर सरकारक बीच अपन हश्तियो छैन। बढ़ा-चढ़ा कऽ बजबे करता, अनेरे दसटा फलतुआ लोको संग देबे करतैन। गपे-सप्पमे विचार भेद भेने ने गारि-मारि अबैए, किए ने औत.?

फुसन कक्काक गुमी देखि रामरूप प्रसाद बुझलैन जे भरिसक विचार नीक लगलै। अपन विचारकेँ आरो मजगूती दैत बजला-

“एकटा बात बुझल अछि किने?”

‘एकटा बात’ सुनि फुसन काका चौंकला। चौंकैक कारण भेलैन जे गामक बात आकि बाहरक। मन गवाही देलकैन जे बाहरसँ मतलबे की

आ गाममे रहै छी हम आ हमरे नै बुझल रहत... ।

अह्लादित अतिथि जकाँ आँखि-भौ, मुँह बिहुसबैत पुछलखिन-

“से की?”

मुँह बाउल बच्चा जकाँ फुसन काकाकेँ बुझि चहरा दैत रामरूप बाबू कहलखिन-

“खाली अपने खेतीक बात नै अछि, गामक जे कियो सागवानक खेती करए चाहता सभकेँ सरकारी अनुदान दिआ देबैन। हमहूँ ओही विभागसँ ने जुड़ल छी।”

जहिना तामस उठला पछाइत बुधियार, गिलास भरि पानि पीब तामसकेँ दबैत अछि तहिना फुसन काका पानक खिल्ली बदलैत, रीशकेँ कम केलैन। मुदा पेटक वायु डिरियए लगलैन। डिरियए ई लगलैन जे जो रे अन्हरा लोक, अन्हरा गाम आ अन्हराएल अन्हरा...। कहू.! जे मिथिलांचलक भूमि ओहन सक्कत-सक्कत गाछ-बिरीछकेँ पेटमे समेटने अछि जेकर तख्तामे बन्दूकक गोली नै छेद सकैए, ओहन गाछ जे प्रकृतिक रंगक संग ओहन-ओहन फलो दइए जेकर तुलना कोनो आन भूमि नै कऽ सकैए, तैठाम जँ लोकक एहेन धारणा बनि जाए जे पनरह-बीस सालक खेती एक बेर पूजी लगौलासँ भऽ जाएत, बाँकी साल निगरानी भरि, तखन खेतबलाक हाथमे पनरह-बीस बरख धरि काज की रहल?

रामरूप बाबूक विचार सुनि फुसन काका जेना मनक लोकसँ आगू बढ़ि संकल्पित लोक पहुँच गेला। समाजकेँ अपन गाम-समाजक विचार अपना ढंगसँ करए पड़तै। मुदा से ओहिना करत आकि समाजक नीक-अधलाक विचार करैत करत? कोन गाम एहेन अछि जइमे शिक्षाक मदमे गैर सरकारीसँ लऽ कऽ सरकारी धरि करोड़ोमे नै चलि रहल अछि, मुदा शिक्षाक स्तर की अछि..!

अकछैत मन फुसन काकाकेँ विचार देलकैन- “कियो कीमती हरिअर-सुखाएल तरकारी बुझि अपना खेतमे सांगरीए लगा लेत तँ लगा लगाबह! मुदा अपन की हएत से विचार करैत करह... ।”

उठैत-उठैत फुसन काका बजला-

“अखन रहब किने?”

फुसन कक्काक मोनक बात जे हौउ, मुदा रामरूप बाबू बजला-

“जेना अहाँ सभ रहए देब तहिना ने रहब?”

सभ बातक जवाब टटके नीक नै होइ छइ। चुपे-चाप फुसन काका विदा भेला। मुदा मन कहलकैन-

“एहेन किरदानी आकि किरदानी केनिहारक बास समाजमे उचित नहि.!”

गामक ओहेन परिवारमे रामरूप प्रसादक जन्म भेल छेलैन जेकरा समाजमे सुभ्यस्त मानल जाइ छेलै। पनरह बीघासँ ऊपर जमीन, पिता मेहनती किसान, कहियो परिवार चलबैमे खाँच नै भेलैन। तैसंग समाजमे पैंचो-पालट करिते छला। गाममे स्कूल नै रहने रामरूप ममहरेमे रहि मिडिल पास केलक। मिडिल पास केलाक पछाइत होस्टलक खर्च पिता दिअ लगलखिन। आन विद्यार्थी जकाँ रामरूपकेँ कहियो ने भेलैन जे कोर्सक किताब नै अछि आकि फीसक दुआरे परीक्षे छुटि गेल। मैट्रिक पास केलाक पछाइत पिताकेँ अपन हाथक मेहनत कएल पाइक मोल लालमे बुझि पड़लैन। एते तँ बात ऐछे जे पितोकेँ कहियो हाँट-दबार करैक मौका रामरूपक प्रति नै भेटलैन। कहियो कानमे भनक नै लगलैन जे आन-आन जकाँ ताड़ी-दारू करैए। तैसंग साले-साल पासक फल सुनि मनमे गदगदी चढ़िते गेलैन। कौलेजमे नाओं लिखबैक प्रश्न जखन रामरूपक उठलैन तखन पिता स्पष्ट कहि देलखिन-

“ऐ धनकेँ जेते चला-बना पुरा सकब तेते तँ पुरेबे करब मुदा जखन

नै पूरत तखन खेतो-पथार तँ ऐछे, मुदा जँ तोहर विचार आगू पढ़ैक छह तइमे नै रोकबह। अखने तोरा समय छह, पछाइत जखन घर-परिवारमे ओझरेबऽ तखन एहेन समय थोड़े भेटतह, से नहि तँ अनुकूल समय छह हमर खर्च तोहर पढ़ाइ।"

बी.ए. पास केलाक पछाइत देश स्तरक तँ नहि मुदा राज स्तरक प्रतियोगिता परीक्षा रामरूप जरूर पास केलैन। जइसँ समैयक अनुकूलता पबैत कमिश्नर भऽ रिटायर केलैन। जाबे तक नोकरी केलैन ताबे तक गाम बिसैर गेल छला मुदा काजसँ पलखैत भेने, सेवा निवृत भेने आब गाम मोन पड़लैन। मोन पड़लैन पिताक चास-बास...। ओना, समाजो, परिवारो आ पितोक देल जिनगीक साइयो-हजारो धरोहर सम्पैत अछि मुदा ऐठाम से नहि। पितोकेँ पूर्वजक देल आ अपन अरजल खेते-पथार भरि अछि। समय किछु हौउ, मुदा एहनो परिवारक कमी मिथिलाक पेटमे नै अछि, आ ओकरा नकारलो नहियेँ जा सकैए, जे पुर्वाक देल सम्पैतकेँ, खेत-पथारकेँ लाड़ि-चारि अपन जिनगी निमाहैत ओइ सम्पैतकेँ अमानत रखि ऐगला पीढ़ीकेँ बिनु कहनौं-सुननौं सुमझबैत आएल अछि। तहिना रामरूपो बाबूकेँ अपन पिताक चास-बासपर नजैर पड़लैन।

जेठ मासक सौंझका झकासक पछाइत पूर्बाक लहकीमे ओसारपर बैस पटनेसँ गामक आनन्द रामरूप बाबू लइ छला। तही बीच चाहक कप नेने पत्नी पहुँचलैन। ओना, आँखिक टकटकी रहैन मुदा ज्योति विहीन। पत्नीकेँ नै देखि पौलैन...।

ओना, कादम्बरी बुझैत जे केम्हरो मन भँसि गेल छैन तँए कप बढ़बैत बजली-

"चाह पीब लिअ, भक टुटि जाएत।"

कहि बगलेक कुरसीपर बैस अपनो चाह पीबए लगली। चाहक चुस्की लैत रामरूप बाबू बजला- "गाममे बहुत सम्पैत अछि ओकर

उपयोग केना करी तैबीच नजैर घुसिये ने रहल अछि।”

बहुतो एहेन तँ छैथे जिनका ठोरेपर बरी पकै छैन। प्रश्न पुरल आकि नै पुरल, उत्तर पहिने दऽ देता। भलें उत्तर नूनगर भेल आकि कड़ू आकि मीठनोन, तेकर चिन्ता नहि। तहिना कादम्बरियो छैथ। केना नै रहती। अर्थशास्त्री पिताक बेटी, तैपर अपनो आनर्सक संग एम.ए. अर्थशास्त्रेसँ केने छैथ। बजली-

“आइक पूजीमे करोड़ोक सम्पैत अछि, बेच कऽ बैंकमे जमा कऽ लिअ, लाखोमे आमदनी बढ़ि जाएत।”

गरूड़ जहिना कागभुसुण्डीक बात धियानसँ सुनैत तहिना रामरूप बाबू पत्नीक बात सुनलैन। मुँहमे तँ ताला लगौने रहला मुदा भीतरे-भीतर मन हौंरए लगलैन। अपन नोकरीक जिनगी मोन पड़लैन, जिनगी भरि पाइए हँसोंथलौं, जइसँ पटना सन शहरमे दस कट्ठाक घराड़ीमे तीन मंजिला मकान बनेलौं, पेंशन भेटैए, बैंकोमे ऐछे! तखन जँ बाप-दादाक देल जमीन बेच समाजसँ नाक कटाएब, ई हमरा सन लोक लेल केते उचित हएत? बच्चाक महिरम जेना माए-बाप बुझैए तहिना ने खेतो अरजनिहार खेतक बुझै छइ। की केकरो दस कट्ठाक चौमास पूर्वज अहीले देलैन जे जा बेटा बेच कऽ बैंकमे रखि लिहऽ जे खूब सुइद हेतह। आकि ओ बारहो मासक कामधेनु बुझि देलैन? मुदा आइक बहरबैयाक जे रूप-रंग कहियौ आकि नव कृषक संस्कृति पकैड़ लेलक अछि ओइसँ उपजा-वाड़ीक रूप की वएह रहत? ने राधाकेँ नअ मन घी हेतैन आ ने राधा नचती। ने गाछमे डारि हएत आ ने कियो मचकी झूलता...।

रामरूप बाबूक मन हुमड़लैन, पत्नीक पैत्रिक सम्पैत नै छिऐन- पैत्रिक सम्पैतिक माने पारिवारिक विचारधारा- ओ अपन छी, ओकर रक्षा के करत? नहि! पत्नीक विचार नै सुनबैन। कोनो परिस्थितिमे खेत नै बेचब। विचारक दृढ़ता मुँह फोड़ि निकललैन- “बाप दादाक मान-

सम्मानसँ जुड़ल जमीन अछि, ओकर उपयोग केना हएत ई विचारणीय भेल।”

अखन धरिक जिनगीमे रामरूप बाबू पत्नीक विचारकेँ अङेज नेने छला। सेहो ओहिना नहि, हुकुमदारी करैत-करैत एहेन मोड़ बनल जाइमे दुनू बेकती निर्णय केलैन जे दरमाहा पत्नीक हाथ जेतैन आ ओ घर चलौती। जइसँ जेना पुरुखक कलंक उठैए जे फल्लाँ फल्लाँठाम, से तँ झूठ भइये जाएत। अँगने नहि तँ राधा नचती केतए? मुदा ऊपर-फटकी आमदनी तँ बिनु आड़ि-मेड़क होइए, ओ केना हिसाबमे औत? ओना, अइले घोंघौज दुनूक बीच भेलैन, मुदा ओ परिवारक हिसाबसँ बाहर रहल। मुदा ओकरा केना कामयाबी बनाबी यएह ने भेल बुधियारी। जहिना कादम्बरीक मन छेलैन जे पतिक सोलहन्नी कमाइ हाथ आबए, सएह भेबो केलैन। जे निर्णयक पछाइत रामरूप बाबू मासे-मासे चेक पत्नीक हाथ दैत रहलखिन। तइसँ एते तँ भेबे केलैन जे मछट्टा जाइक जरूरत नै पड़लैन। नून-सँ-हरदी तकक भार कादम्बरीएपर रहलैन। जइसँ कादम्बरियो अपनाकेँ बेरोजगार नहियेँ मानली। ओना, कादम्बरी पतिक आदमनीकेँ ओइ थर्मामीटरसँ नपैत जइसँ छह बजे साझसँ बारह-एक बजे रातिमे थाकल-मारल अबैक कारण की? नोकरीक ड्यूटी दिनका छैन, तखन?

मुदा लगले मन मुड़ि जाइन। मुड़ि ई जाइन जे अपनो देह भरिक स्वत्रंताक अधिकार जँ पुरुखकेँ नै भेटए, तँ पुरुखपना केतए औत? मुदा तैयो एते तँ इमानदारी रामरूप रखिते छैथ किने जे आमदनीकेँ छिड़ियबै नै छैथ, किछु-ने-किछु मोटगर काज तँ सम्हारिये लइ छैथ। पटना सन शहरमे दस कट्ठा घराड़ीक बीच तीन मंजिला मकान तँ हुनके कमाइक छिऐन आकि कियो दोसर देलकैन। अनेरे झूठ-फूसक गपक नाँगैर पकड़ैले वौआएब। ओना, दुनू परानीक बीच खौटका बनियेँ गेल। रामरूप बाबूक विचार जैठाम छैन तइसँ कादम्बरीक विचार हटल रहबे कएल। जमीनक

नीक उपयोग भेने ने सम्पैतिक नीक सुख भेटै छइ। जँ ओकर उपयोगे ने हएत तँ माटिक धरती माटि छोड़ि सोनाक थोड़े भऽ जाएत। हँ, उपयोग केलाक पछाइत माटियो सोना बनै छइ। तैठाम कादम्बरीक हटल विचार ई जे खेत बेच बैंकमे रखने निश्चित आमदनीपर पहुँच जाएब तइ हिसाबसँ परिवार चलत। ने हाथ मैल आ ने पएर मैल हएत। धारक महार टुटिते दू तरहक धारा निरमित भइये जाइए। एक जे मुख्यधारा ओकर जगह बना पेटमे समटैए तँ दोसरो एहेन ऐछे जे अपना धारामे आरो धफार पैदा कऽ दोसर दिस रेड़ैए। ओना, अखन धरि दुनू परानीक बीच केतेको दिन एहेन प्रश्नपर मतभेद होइत रहलैन। समझौतौ होइत रहलैन, मुदा कादम्बरीक आइक प्रश्न रामरूप बाबूकेँ किछु दोसर दिशामे मोड़ि देलकैन। रंग-बिरंगक प्रश्न मनमे उचड़ए लगलैन। की अपन समाज टुटि गेल? आकि अपन जिनगी टुटि गेल? एकरा की मानल जाए? माए-बापक सेवा इतिहास शास्त्र-पुराणक पन्नाक पाछू पड़ि गेल? ऐ उमेरमे केकर आशा.?

विचारमे मोड़ एलैन। एक तँ ओहिना दुनियासँ हटल छी तैपर जँ दुनू बेक्तियो हटि-हटि कऽ रहब सेहो नीक नहि।

बिहुसैत रामरूप बाबू पत्नीकेँ बौसैत बजला-

“अनेरे छोट-छीन बातक पाछू बेसी पड़ब नीक नहि।”

पतिक सह पबिते कादम्बरी छिड़ियाइत बजली-

“ओही दिनसँ अहाँकेँ जनै छी जइ दिन बात काटि देलौं!”

जहिना छिड़ियाइत बातकेँ समेटल जाइत तहिना पत्नीकेँ समटैत रामरूप बाबू बजला-

“सभ दिन तँ महल्लाक सभ सेवा निवृत भेल लोक एक घण्टा-दू घण्टा एकठाम बैसते छी, तही बीचमे किए ने विचारि लेब। अनेरे किए हम बधुआएब आकि अहीं बधुआएब।”

पतिक विचार कादम्बरीकेँ नीक लगलैन। लड़-जड़क बाहुल्यक

कारणे तँए अपन पक्ष मजगूत होइत देखलैन। तेतबे नै देखलैन तैसंग ईहो देखलैन जे पति-पत्नी–पुरुष-नारी–क बीच अदौसँ किछु-ने-किछु वैचारिक मन-भेद होइत आबि रहल आ होइत रहत, मुदा फेर केना सम्बन्ध बनल रहल?

हारल-थाकल-मारल बटोही जकाँ पतिक बगे-वाणि कादम्बरीकेँ बुझि पड़लैन। जीतल पति-पत्नी तँ ओ ने जे अपन आ अपन परिवारक कोनो समस्या दोसराक बीच नै रखि दुनू मिलि समाधान करैत दौड़ैत जिनगी बितबैत मृत्युक धाराकेँ कूदि टपि जाएत? मुदा से तँ नै भेल! ओझराइत बाटक बात देखि कादम्बरी बजली-

“सभसँ बड़ौ समाज। भने अपन बात विचारैले रखि हुनको सबहक विचार देखबैन, नीको बुझि पड़त आ अधलो, जे नीक हएत ओकरा पकैड़ लेब, जे अधला बुझि पड़त ओकरा छोड़ि देबइ। सएह ने? तइले जँ दुनू संगियोँ-साथीमे मुँह फुलौने रहब, सेहो नीक नहि। दुनियाँक इतिहास गबाही अछि जे विषम परिस्थितिमे पुरुखो आ महिलो एक दोसराक संग छोड़ने अछि। मुदा एहेन पौराणिक गलती अपना जिनगीमे नै उतरए देब। लगभग चालीस बरख पूर्वसँ जहिना हाथ पकड़ा-पकड़ी केने एलौं, तहिना पकड़ने चलब।”

पत्नीक विचार रामरूप बाबूक घोर-मट्ठा भेल मनकेँ जेना फरिछाएल पीबै-जोकर पानि बना देलकैन। बजला किछु ने। मुदा आँखि जरूर अँखिआ लेलकैन। अँखिआ ई लेलकैन जे नीक भविस दिस अपनाकेँ बढ़बए चाहि रहली अछि। रामरूप बाबूक आँखि-मे-आँखि मीलिते जेना कादम्बरीकेँ बुझि पड़लैन जे भरिसक पति ऐगला काज दिस बढ़ैले कहि रहला अछि। काजे ने बोलीकेँ बिलमबै छइ। जँ से नै हएत तँ काजे बिगड़ि जाएत! आ जखने काज बिगड़त आकि अनधुन गरियौनाइ शुरू करत! तइसँ नीक जे रौतुका भोजनक ओरियानमे किए ने लगि जाइ। पति लगसँ उठि कादम्बरी भनसाघर तँ विदा भऽ गेली मुदा मनक

दोसर खरी उचैर गेलैन। उचैर ई गेलैन जे अखन तक कहियो ओहेन भोजन नै केलौं जेहेन मनुखक हेबा चाही। पढ़ल-लिखल परिवार रहितो कहाँ कहियो ऐपर विचार केलौं! एक भोजन श्रमक पूर्व होइए दोसर अन्तक पछाइत, जखन लोक आराम करए जाइ छैथ। गरिष्ठ पाक जेते आरामक अवस्थामे हेतै ओते काजक अवस्थामे थोड़े हेतै? मुदा ईहो केना मानल जाए जे सबहक दिन आकि सबहक राति एके रंग होइ छै...। चौकाक बटलोहीक एक डेग पाछूए हटल कादम्बरी ठाढ़, मुदा विचारतंत्र तेते सक्रिय जे सभ अंग शिथिल पड़ि गेलैन। नजैर टकटकी जकाँ बनि गेलैन।

दुनू परानीक बीच तीन दिनक पछातिक समय बनल जे सभकेँ पूर्व जानकारी देला पछाइत विचारि लेब। तैबीच हुनको सभकेँ समय भेटतैन आ ऐबोक जानकारी रहबे करतैन। अपनो ओइ हिसाबसँ तैयारी करब।

दोसर दिन जेना कादम्बरीकेँ पानि चढ़ि गेलैन तहिना मलेटरी जकाँ समैपर नीन तोड़लैन। केना ने तोड़ितैथ? भोरुका बसंती-वयार केकरा नै बजारि छातीपर बैसए चाहैए। मुदा एहनो तँ लोक छैथे जे नीनकेँ तोड़ै छैथ। जँ नीन अपने नै टुटए चाहैत तँ ओकरा तोड़लो जाइए किने। कादम्बरियो नीनकेँ तोड़लैन।

समैपर उठि अपन सभ जवाबदेहीक काज सम्हारि बैसारक बीचक योजना बनबए लगली। चारि बजे सौंझका समय अछि। चौबीसो घण्टामे सभसँ नीक समय, नीकक माने विचारक अनुकूल मौसम। भोजनो तँ वएह ने नीक जे मौसमक अनुकूल हुअए। जँ से नहि, आ चैत-बैशाखमे नबका दालि खाएब तँ पेट हड़हड़ेबे, गड़गड़ेबे, पड़पड़ेबे, झड़झड़ेबे करत किने। मुदा जँ अपनो भोजनक विचार मनुख नै करत तँ नै करह। कोइ काहू मगन कोइ काहू मगन.! अपन करनी अपन धरनी अपन मरनी हेतै आकि अनकर? नीक हएत जे ओहेन भोजनक तैयारी करी जे सभकेँ सुपाच्य होइन...।

कादम्बरीक मन मानि गेलैन जे नीक विचार बुधि देलक। मुदा लगले दोसर जोरसँ धक्का दैत कहलकैन-

“सुपाच्च तँ वएह ने जे शरीर पचबए? आकि सुपाच्च बौस? जँ सुपाच्च पदार्थ सुपाच्च तँ केकरो काँच दूध पचै छै आ केकरो नै पचै छइ। केकरो गर्म दूध पचै छै आ केकरो नै पचै छइ। तखन?”

कादम्बरीक मन फेर दोसर घुरछीमे ओझरा गेलैन। एक तँ अदहे मुट्ठी टीक लोक रखैए, तहूमे जँ दसटा चिड़चिड़ी घोंसिआ जाउ तँ टीक खोलिते-खोलिते नोंचा जाएत आकि एकेबेर जड़ियेसँ कटा कात भऽ जाएत? तैपर सँ पुछबै जे तोरा अपसियाँत भेने हमरा की.! से जेहेन हएत तहिना कादम्बरीक मनमे पनपल। पनपल ई जे जिनका जे सुपाच्य होइ छैन, माने सभ दिन खाइ छैथ, हुनका लेल वएह पाक नीक हएत...।

एकमुँहरी विचार होइते फेर मन घुड़ियेलैन। घुड़ियेलैन जे जँ कोनो नीक बौस बनि जाए जे किनको नहियोँ नीक भेने मन घुमि जाइन तखन की कहबैन जे अहाँले नै तैयार छी? मन ठमकलैन। ठमैकते निआरली जे बेकता-बेकतीक विचारानुकूल पाकक ओरियान कऽ लेब। पेट तँ जंजाल छीहे ने। जँ से नहि, तँ हजार रसगुल्ला आ बीस किलोक रेहुक पेट जे बनौता हुनका लेल किए ने जंजाल छी...।

भोजनक सूची तैयार होइते कादम्बरी खोज-भाँज लगबए निकलबे करती जे किनका लेल की नीक। तहूमे समय लगबे करत। गप्पोकेँ कि नाँगैर होइ छै, ओकरा कि लोकक देह जकाँ आँखिक नीचाँ मुँह आकि दुबगली कान आकि मुँहक नीचाँ पेट जोड़ैक काज छै आकि कैलाशसँ मानसरोवर आकि मानसरोवरसँ गंगोत्रीक काज छै...। ओकरा तँ सौंसे दुनियाँ देखैक विचार होइ छइ। जँ से नहि, तखन ऐ प्रश्नक उत्तर कथी जे ‘अहाँक दुनियाँ केहेन, तँ अपना सन।’

रामरूप बाबूकेँ खाइ-पीबैक धैनियेँ-फिकिर नहि। तेकर कारण

अछि जे शुरूहेसँ अपन दरमाहा पत्नीकेँ सुमझा पाक-साफ भऽ गेल छला। से नीके छेलैन। नीक ई छेलैन जे पत्नी जहिना अपन भाएकेँ प्रेमसँ भोजन करबैथ तहिना पतिक भाएकेँ सेहो। तइसँ नीक जे ऐ बरहबर्खा रोगसँ छुट्टीए लऽ लेब नीक। तँए मन खुशी, किए कियो कहता फल्लाँ बाबू भरि पेट खैयोले ने देलैन आकि अमुक वस्तु बनबैक लूरिये ने छेलैन। किएक तँ मनुखेक मुँह छिऐ। बेटा बेरमे राजा छी आ बेटी बेर भीखमंगा!

समयसँ पूर्व कादम्बरी अपन विचार तीन बेर सभकेँ डेरे-डेरे पहुँच सुना चुकल छेली। मुदा रामरूप बाबू चुपे रहला। चुपे ऐ दुआरे रहला जे नव प्रश्न उठत, नव दिशा विचारैक प्रश्न हएत ओ तँ अपन अनुभवक संग समयसँ रस्ता मिलबैत आगू बढ़त। जँ से नहि, तखन समचीन केना हएत। ओना, अपनो मन ओतए ठाढ़ भऽ ऐगला जिनगीक बाटक दिशा ताकि रहल छेलैन, जँ से नै तकता तँ आनक जिनगीकेँ जहिना अपने बुझै छैथ तहिना ने आनो बुझतैन। सभ अपन मनक मालिक छी। सबहक अपन मन ओतए चढ़ि कुचैरते तँ अछि जे भाय, दुनियाँमे सभसँ बेसी बुधियार, सभसँ बेसी इज्जतदार छियौ, टिटही जकाँ हमरेपर अकास टिकल अछि...।

..तहिना कि दोसराक मन पाँखि लगा उड़ि नै कुचड़त जे 'हमहूँ छी।' तखन ओइ कुचरा-कुचरीमे अनघोल हएत की नहि? तइसँ नीक ने जे मुँहमे ताला लगा रहब। अनेरे मन वौअबै छी। भाय, जेकर माए-बाप मरत ओकरा जँ नीन पकैड़ लइ वा ओङ्गहए लगए तखन दोसराक गति की हेतइ। मुइला पछाइत हौउ आकि जनमला पछाइत, ओकर जे ऐगला प्रक्रिया छै ओ तँ अपने करए पड़ै छै किने...।

चारि बजिते सभ आमंत्रितजन पहुँचला। मुदा बैसैमे फेड़-फाड़ भेल। फेड़-फाड़ ई जे आन दिन जेना अबैत गेला बैसैत गेला, से नै भेल। अपन-अपन गर अँटकारि-अँटकारि जोड़ लगि-लगि सभ कियो बैसला। मैनेजर साहैब जे बैंकसँ सेवा निवृत भेल छैथ, तिनका आ डॉक्टर

साहैबकेँ खूब पटै छैन, जँ दुनूकेँ समय भेटैन तँ भरि-भरि राति सौन जकाँ बिद-बिदाइते रहि जेता। मुदा जैठाम सभ दौग कऽ आगाँ बढ़ए चाहैए तैठाम मैनेजर साहैब आकि डॉक्टर साहैब छुटि जाथि, सेहो तँ नीक नहियेँ...।

जहिना डॉक्टर साहैब मैनेजर साहैब लग बैसला तहिना सेवा निवृत इंजीनियर साहैब डायरेक्टर साहैब लग बैसला। फैक्ट्रीक डायरेक्टर साहैब सेहो सेवा निवृत छैथ। दुनूक विचारक विनिमय अपन रहैन, तँए बेसी हेम-छेम छैन। चाह उसरैत-उसरैत पान चलए लगल, मुदा पानक पछाइत जे परसल जाइए ओ अनका मुहेँ परसल जाएत आकि अपना मुहेँ। जेम्हर पान परसा गेल ओम्हरसँ प्रश्न उठल-

"की बात छिऐ यौ रामरूप बाबू?"

प्रश्न उठौलैन डॉक्टर साहैब। ओना, डॉक्टर साहैब बजैमे फड़कोर छैथे, नजैरे तेहेन छैन जे लगले कोनो बातकेँ पकैड़, सामाजिक-पारिवारिक कोनो समस्याकेँ शरीरक रोगे जकाँ एक्स-रे करा मेडीसीन आकि सर्जरीक दुनू विचार ठाँहि-पठाँहि दऽ दइ छथिन। ओना, सभ दिन लोकक बीच रहै छैथ, अखनो अपनाकेँ अथबल नै बुझि रहला अछि, भलेँ नव तकनीकक मारिक चोट किए ने जिनगीकेँ धकियबैत होइन। खाएर, जे छैन ओ तँ हुनकर बेकतीगत छिऐन। ओना, काने-कान बीआ-बान कादम्बरी कइये चुकल छेली, मुदा अपन जिम्माक आ गरिमाक मेनटेनो करब छैन्हे।

चौमास जकाँ चौकियाएल विचार रामरूप बाबूक रहबे करैन, बजला-

"गाममे पिताजीक अमलदारीमे पनरह बीघा जमीन छल, हुनका जीविते नोकरी भेल। हम नोकरी दिस बढ़ि गेलौं। बाबू खेतीएपर अँटैक गेला। दुनू परिवार दू दिस भऽ गेल। चारि पाँच बर्खक पछाइत, आगूए-पाछू दुनूक मृत्यु भऽ गेलैन, किरिया-कर्म भेला पछाइत जे गाम छोड़लौं,

से छोड़नहि छी।"

रामरूप बाबूक नमहर प्रश्न, दू जिनगीक प्रश्न, एक किसानीक दोसर नोकरिहाराक। तहूमे दुनूमे लगलगाउ नहि, सोलहन्नी नबक शुरूआत। सबहक मन ठमकलैन। अपन जिनगीमे भेल घटना आ बिनु भेल घटनाक दू थर्मामीटर होइ छइ। जिनगीक प्रश्न छी, तँए सभ सबहक मुहोँ देखैथ आ आगू सुनैक प्रतिक्षो करैथ...।

कादम्बरीक मन प्रश्नक उत्तर दइले चटपटाइत रहैन। कारणो छल दुनू परानीक बीच उठल दू दिशाक बाट। मुदा पनचैतियो तँ पनचैती छिऐ, ओहिना पनचैती आ पर-पनचैतीक चलैन समाज पकड़लक आकि खूब नीक जकाँ जोति-कोरि, गोला फोड़ि चिक्कन बनबैले पकड़लक। पनचैती आकि पर-पनचैती ओहिना थोड़े उठि कऽ ठाढ़ भेल। ओहिना कोनो चीज सोझे ठाढ़ होइए आकि ओकरा ठाढ़ रहैक गर बनौला पछाइत होइए। तँए पनचैतियोक ठाढ़ होइक अपन गर छइ। पहिने पहिल पक्ष अपन विचार रखता, ओइ विचारकेँ पञ्चवेदीमे वेदसँ नहाएल-धुअल जाएत, तेकर पछाइत ने दोसर पक्षक विचार, विचारमे औत? जँ से नै आनब आ पनचैतीकेँ निर्णय तक नै पहुँचऽ देबै तखन विचारक उलंघनक दोखी के हएत। तहूमे परिवारक दुनू परानीक बीचक छी, पतिक प्रति अपन अशिष्टता सोझहाँ आबि जाएत। तइसँ नीक जे डॉक्टर किसुन भायकेँ कहिये देने छिऐन तँए हुनके इशारा कऽ दिऐन...।

कादम्बरी सएह केलक। मुदा डॉक्टर साहैब अपन विचारमे डुमल रहैथ। चारि भाँइक पिताक भैयारीमे विचारक भिन्नता परिवारकेँ मटिया-मेट कऽ चौकिया देलक। तँए कोनो परिवारक प्रश्न छी, बिनु बजने दोखियो तँ नहियेँ हएब। बेर-बेर कादम्बरीक इशारा डॉक्टर साहैब देखि-देखि अनठबैत रहला। डॉक्टरो साहैब छह-पाँचक कमाइ नै केलैन। कियो कम्पनी उपहार देलकैन, तेतबे धरि। तँए सोझ विचार, भाय जे नै बुझिऐ तेकरा लगले किए ने मानि लिऔ। जे कोट-कचहरीक केस जकाँ पचास-

पचास बरख रगड़ैत रहियौ। तइसँ केकर नीक हएत। लोको रगड़ाएत सरकारो घँसाएत...।

चुपा-चुपी देखि इंजीनियर साहैब बजला- "सबसँ पहिने दियाद-वादक भाँज लगबए पड़त, गाममे रहनिहार भलेँ मारि-दंगा कऽ बलजोरियो कऽ सकैए मुदा जे बाहरसँ गौंआँक बीच जेता हुनका तँ नापि-जोखि कऽ जाएब नीक हेतैन। अपन सुपत केते जमीन बँचल छैन, ओ बिना बुझने केना किछु करता।"

इंजीनियर साहैब अपने गामक भगौआ भेल छला। मुदा से अपने गलतीसँ। जखन घर बनबैक झोंक चढ़लैन, तखन अपन पैत्रिक घराड़ी दियाद-वादक हाथे बेच लेलैन। ओना, देलखिन परिवारेकेँ, से इज्जत तँ रखलैन मुदा जखन अपन रहैक मिथिलांचलक बास बेच लेलैन, जेकरा करखनो नीक नै कहल जा सकैए आ जखन पाइ-कौड़ी जोर मारलकैन तखन गाम मोन पड़लैन। मनसूबा यएह जे बेसीए कऽ कीनि लेब। मुदा जिनगी भरिक समीक्षा केलाक पछाइत जे इंजीनियर साहैबक किरदानीक समीक्षा समाज आकि दियाद-वाद केलैन तँ ऐठाम आबि अँटैक गेला जे इंजीनियर साहैबसँ केकरा की लाभ भेल? तँ किछु ने! तखन पढ़ल-लिखल आ बिनु पढ़ल-लिखलमे की अन्तर भेल, मुरुखोसँ मुरुखपने केलैन। एकमुट्ठी भोजन करा कियो भूखलकेँ तृप्त बुझैत मुदा जिनगीक भूखक तृप्तता बिना जिनगी ठाढ़ भेने नै होइ छइ। जीवन बनबैक लूरि इंजीनियर साहैबकेँ, मुदा कहाँ एको परिवार गढ़ि सकला...। ई बात दियाद-वादक मन मानि नेने छेलैन। तँए केतबो नाँगैर पट-पटा कऽ रहि गेला दियाद-वाद ओइ घराड़ीपर नहियेँ आबए देलकैन। कियो अपने बेथे बेथाएल तँ कियो जमीनकेँ जंजाल बुझि ओइ भीड़ जेबो ने करै छैथ...।

चुपा-चुपी देखि कादम्बरीक मन भीतरे-भीतर खौंझाइत रहैन जे नीमकहराम सभ भऽ गेला। केहेन कऽ बुझा-सुझा कहबो केलिऐन आ

खुएबो-पीएबो केलिऐन। मुदा कियो पीठपोहू हुअ नै चाहैए। पाशा बदलैत बजली-

"एके काज लेल बेर-बेर बैसार करब नीक नै हएत, तँए.?"

कादम्बरीक प्रश्नमे पुछरी जोड़ि मैनेजर साहैब बजला-

"मानि गेलौं जे पनरह बीघा छेलैन, तइमे नै सोलहन्नी तँ अठन्नियोँ मानि लिअ। अदहो तँ साढ़े सात बीघा बँचबे कएल हेतैन। मुदा साफे नै बँचलैन, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए।"

मैनेजर साहैबक मन बैंकक सुइद दिस भागैन जे छबे मासमे जखन सुइद मुइर भऽ चलए लगै छै तखन लाखक पूजी पानिमे दहलाइए...।

मैनेजर साहैबक बोल इंजीनियर साहैबकेँ नीक नै लगलैन। नीको केना लगितैन, मन गवाही दैत रहैन जे जहिना छोटका-बड़का सैयो पार्ट मिला मशीन गढ़ल जाइए तहिना तँ परिवारो छी। तँए, अपन प्रश्नपर अड़ान दैते बुझि पड़लैन जे साइकिलक भौल्टू जकाँ गरदैने लगसँ परिवार कटि गेल अछि। कहू जे केहेन लीला छी जे एक माए-बापक सन्तान, बेटा-बेटी भेने केना सम्पैतिक अधिकारी आ नै अधिकारीक अधिकार अछि। तेतबे किए, जँ पाँच या सात भाँइक भैयारी छी तँ जेठौंस बँटैत-बँटैत छोटका सोलहन्नी बँटा जाइए आकि रहबो करैए।

गप-सप्पकेँ टेढ़-टूढ़ होइत देखि रामरूप बाबू बजला-

"मानि गेलौं जे पनरह बीघामे साढ़े साते बीघा बँचल, तेकरा केना उपयोग करी से तँ विचारल जा सकैए।"

टुटल दाँतक मुँहमे पान गलगलबैत डायरेक्टर साहैब बजला-

"अपन कएल काज कहै छी। अपनो गाममे पाँच बीघा जमीन अछि, मन भेल जे पूर्वजक देल सम्पैत छी पच्छिम लेल छोड़ि दिऐ। तखन तँ भेल ओइकेँ उपजाउ बना दिऐ आकि परती बना दिऐ माने

उत्पादित राखल जाए आकि परती जकाँ? कोनो कि पाबैन-तिहार छी जे अनको आन सम्हारि देतै आ एक-आधटा एकादसीक जरूरत हेतै तँ दैयो देतइ। जँ उर्वर-उपजाउ बनल रहत तँ सुगमतासँ आगूक काज बढ़ौल जाएत आ नहि जँ परती बना राखल जाएत तँ मुरदा-साड़ा लग बैस कऽ कानब हएत। भाय, संस्कृति आ मातृभूमिक सेवा कथी छिऐ तेकरा ने नीक जकाँ बुझए पड़त। जैठाम कण-कणमे भगवान आ कण-कण शक्ति सम्पन्न अछि तैठाम केना कि कएल जाए, एना जँ धिया-पुताक गर्दाक घर-अँगना बना खेलब, तँ बेर झुकैत उजैर-पुजैर जाए पड़त।”

डायरेक्टर साहैबक बातमे डॉक्टर साहैबकेँ रस भेटलैन। टिटकारी दैत बजला-

“भाय साहैब, अपने तँ टटके खेतपर पहुँचल छी, तँए समयानुकूल विचार अपनहि दऽ सकै छिऐ?”

डॉक्टर साहैबक टिटकारी डायरेक्टर साहैब नै परेख सकला। अपन पूछ खिखिर जकाँ मोटगर बुझि पड़लैन...।

अठनियाँ मुस्कान भरैत बजला-

“देखू, अपन सोलहन्नी विचार नै छी मुदा जखन एक महान अर्थशास्त्री कानमे घोरि कऽ पीआ देलैन जे देखिऔ, अपना ऐठामक माने मिथिलांचलक किसानी जिनगी बेठेकान अछि। तहूमे बहरबैयाक लेल। गाममे रहनिहार तँ ओ भेला जे धार फुलाइते गाँज-डेली लऽ धारक कात जा हियासऽ लगैत जे अमार केमहरसँ आबि रहल अछि। से तँ बहरबैयाक बुत्तासँ बाहर अछि। तँए नीक हएत जे एकेबेर पूजी लगा बीस सालक खेती करि लिअ।”

ओना, डायरेक्टर साहैब कुशियारक गुल्ली बना-बना अपन बात राखए चाहै छैथ, जे जखने तरो मीठ, ऊपरो मीठ आ मनो मीठ तखन तँ मिठाइ बनबे करत। बड़ हएत तँ भुसबाक बदला लड्डू बनि जाए...।

नाँगैर पकैड़ ऐंठैत डॉक्टर साहैब बजला- "एहेन नफगर जँ खेती हुअए तँ तेलोसँ चिक्कन। तहूमे अपन इलाका, सत-सत बेर लोक एक-एकटा खेतमे धान रोपैए आ तैयो दहा जाइ छइ। मुदा धन-धरतीक धैर्य तेते धीरजवान छै जे आँखि खोइलियो आ आँखि बन्न कैयो कऽ सदिकाल यएह कहैत जे धरती अहीं हमरा अन्न दइ छी, हृदयमे जमा कएल पानि दइ छी, अपन सिनेह-सिक्त कएल पुरबा-पछियाक रूपमे हवा दइ छी, जिनगी लेल की ने दइ छी, मुदा सभ किछु दैतो हे धरती छाती हटौने छी।"

डॉक्टर साहैबकेँ भँसियाइत देखि रामरूप बाबू बातकेँ समटैत बजला-

"बड़ सुन्नर प्रश्नक उत्तर आबि रहल अछि, एकबेर खेती करैमे ओकरा लगबैमे, जँ बीस बरख दोहरा कऽ ओइमे पूजी नै लागए आ बीस बर्खक पछाइत बीसो सालक उपजासँ बेसीक हिसाब आबि जाए तँ किए ने कएल जा सकैए।"

रामरूप बाबूक विचार सुनि डायरेक्टर साहैबकेँ आरो मनसूबा जगलैन। बमछैत बजला-

"सेवा-निवृत भऽ गेलौं तँए कि ऐ देहमे दम नै अछि? रामरूप बाबू, अपने गाम जा देखि-सुनि आउ। सागवान-गाछक खर्च सरकारी अनुदानपर आ लगबैयोमे जे खर्च औत सेहो सभ सरकारीए अनुदानपर हएत।"

डायरेक्टर साहैबक बमछी देखि डॉक्टरो साहैबकेँ मन बमछैत रहैन। मुदा अपन जखन सीमा अँकैथ तँ देखैथ जे जहिना बजौल हम छी तहिना तँ डायरेक्टरो साहैब छैथ, अनका ऐठाम एहेन किछु नै हेबा चाही जे घरबैयाक प्रतिष्ठापर कोनो कचोट होइ। तँए गुम्म। मुदा तरे-तर डॉक्टर साहैबक मन ई बमछैन जे कहू केहेन भोतलोह सन विचार दऽ

रहला अछि। जखन बीस बर्खक खेतक काज हाथसँ छीना जाएत तँ खेतपर रहनिहार लेल ओ हाथ की करत? तहूमे जे धरती दुनियाँक सभसँ नीक अछि, ओ फल-फूल विहीन खेतीमे फँसि जाएत, तखन केहेन रमणगर जनकक फुलवाड़ी हएत? एक तँ जन-जनक फुलवाड़ी तैपर विश्वामित्र सन ऋषिक आगमनक संग सखी-सहेलीक संग सीता आ लक्ष्मणक संग रामक मुस्कान.!

जहिना समय उसरनपर आएल तहिना विचारोकेँ उसारिये देब सभ नीक बुझलैन। डॉक्टर साहैब बजला- "रामरूप बाबू, गाम जा पहिने खेत ठेकना लिअ, डायरेक्टर साहैब खेतीक भार उठाइए लेलैन, तखन शुभ काजमे अनेरे बिलम करब नीक नहि।"

बैसार समाप्त भेल। मुदा जहिना नअम् मासक बेथा माइयेटा बुझै छैथ तहिना नअम् जिनगीक बेथा रामरूप बाबूक मनमे कचकलैन।

बैसारक तेसर दिन, दू दिन बीचक समय अहीमे चलि गेलैन जे की करब, केना करब, के संग देत आकि नै देत। एहनो संगी तँ होइते अछि जे सदिकाल तूम्मे फेड़फाड़ करैए। एहनामे केतए बिसवास कएल जा सकैए.?

कुरसीपर बैसल रामरूप बाबू असकरे विचारि रहल छला। सरकारी सर्टिफिकेट अछि जे आब अहाँ काज करै-जोकर नै छी, तैपर बलउमकी करै छी। कोन जरूरत पूर्वजक सम्पैतिक अछि, जे गाममे अछि। गौंआँ जोति-कोरि कऽ खाए आकि परती बना कऽ गाए चरबए, गामक सम्पैतिक हक तँ ओकरे ने भेल। जिनगीमे गाम छोड़ि पेट पकड़लौं, तैयो मन वौआइते अछि। मुदा दस गोरेक बीच जुआन हारि गेल छी, जँ पाछू हटब तँ अनेरे वएह सभ मुहेंपर थुकता जे रमरूपबाक कोन ठेकान, कोनो कि मनुख छी, धन जमा केने कथी हेतै, जखन जुआने नै तखन ओहेन मनुखक मोजरे केते। मुदा विचार जेना विचार भूमिकेँ खोदि देलकैन। खोदि ई देलकैन जे जखन दुनू परानी दस गोरेक बीच अपन विचार

स्थापित करए गेलौं, तखन जे निर्णय भेल ओ दुनू गोरेक ने भेल। कोनो काज लेल आ केतौ जाइ लेल संगीक संग गप-सप्प करैत रस्ता कटि जाइए...। तही बीच कादम्बरी चाह नेने पहुँचली।

पतिक सोगाएल सूरत देखि कादम्बरी व्यंग्यवाण छोड़ली- "मन बड़ खनहन जकाँ बुझि पड़ैए?"

कादम्बरीक वाण रामरूप बाबूकेँ छातीमे बेध देलकैन। बजला-

"मन खनहन की रहत मुदा खरहर तँ अछिए। यएह सोचि रहल छी जे अनेरे बेसी देरी किए करब। काल्हिए-परसूसँ किए ने काजमे हाथ लगा दिऐ।"

'हाथ लगाएब' सुनि कादम्बरी सहमली। सहमली ई जे 'विचार देब' आ 'विचारकेँ हाथक काजसँ मिलबैत चलब' तँ भीन बात भेल! तखन? तखन तँ यएह ने जे पति छैथ, जेना संग दइले कहता तेना देबैन। ई बात ऐछे जे दुनू परानी बूढ़ भेलौं, मुदा ईहो तँ आशा ऐछे किने जे जँ रस्ता-पेरा मन झूकत तँ दोसरक आशासँ ठाढ़ हेबे करब किने। धनक लोभ छी, मुइलो अछियापर सँ उठि कऽ आबि लोक लाठी भाँजैए। छोड़बो नीक नहियेँ हएत...।

बजली- "हम तँ जीवनसंगिनी भेलौं, कर्ता-धर्ता तँ अहीं भेलौं, तखन जे जेना सामर्थ रहत से तेना भाँज पुड़ैत रहब।"

कादम्बरीक आस भरल आसक विपरीत दिशामे रामरूप बाबूकेँ आस लगिते मन बढ़लैन। मन बढ़लैन ओइ दिशामे जैठाम अपनाकेँ समाजक ओहन लोक जे सभसँ बढ़ल-चढ़ल अपनो बुझै छैथ आ समाजो मानै छैन, जे दोसराक लेल की केलखिन! कोन मुँह लऽ कऽ समाजक बीच जाएब? मुदा सोझहामे कादम्बरी, तँए बात बदैल बजला- "गामक लोक बड़ टेढ़ होइए, अनेरे कहत जे अहाँ बाबरी कटबै दुआरे केशकट्टा दियाद छोड़लौं आ आइ मरै बेरमे समाजक आगिये संस्कार चाहै छी।

तरवन की कहबै?”

रामरूप बाबूक विचार कादम्बरी नै परेख पौली। बजली- “केकरो अनकर सम्पैतपर जाएब जे कियो मुँह दुसत? अपन सम्पैत छी। चाहे मन्दिर बनाँउ, आकि असमसान, अपना विचारे कियो करैए। तैठाम गौंआँ किए बाजत?”

कादम्बरीक बोल जेना रामरूप बाबूक मनमे बलबोल जकाँ बुझि पड़लैन। मुदा बजला किछु ने...।

जिनगीक रक्षा केना कएल जाए, तेकरा खेल बुझै छैथ। हँ एहेन गाम-समाज अरवनो अछि जे अतिथि सत्कारक विधि-बेवहार बँचा कऽ रखने अछि। रामरूप बाबू समाजक बेटा नै बनि पेला, ई दोख अखनो केकर कलंक भेल। काल्हुक लेल कोन अंक निर्धारित हएत। मुदा कादम्बरी तँ गामक पुतोहु भेलखिन। जखने गाम पएर देथिन तखने समाजक बाल-अबाल सभ अड़ियाइत कऽ अँगने लऽ जेतैन। ओइ संग अपनो रहैक ठौर-ठेकान बना नै चलब तँ समाजक कोनो ठेकान छइ। एकटा मारि-पीटि भेने सौंसे गामक लोक जहिना निपत्ता भऽ जाइए तहिना मारि-पीटि करैकाल सेहो तँ गोलियाइते अछि...।

निर्णय केलैन जे समाजक नीक-अधला समाजक भेल, अपने केना ओइमे प्रवेश करब, ई अपन काज भेल। बजला- “तीन दिन मानि कऽ चलू। तीन दिन रहैक खेनाइ-पीनाइक फास्ट-फुड ओरियानक संग रहैक घरक जोगार सेहो केने चलब।”

“हँ मोटा-मोटी दू गोरेक बोझहा भेल। मुदा आब तँ गामे-गाम सवारियो जाइते अछि। काल्हिये भोरक प्रोग्राम रखू।”



तिथि: 14 जुन 2014, शब्द संख्या: 5309

सगहा

जेठ मास उतारपर, स्कूल-कौलेज, कोट-कचहरीक गरमी छुट्टीक मजा कियो दार्जिलिंग तँ कियो कश्मीर तँ कियो समुद्री इलाका मुम्बइ पहुँच-पहुँच उठा रहल छैथ...। आइ धरि कहाँ कहियो बुझै छेलौं जे ऐ बेरक गरमी तीस-चालिस सालक पछाइत भेल, चाहे बरखे एहेन भेल आकि शीतलहरीए एहेन भेल!

रमाकान्त सेहो कौलेजसँ सोझे गाम चलि आएल। इण्टर साइंसक विद्यार्थी, इण्टरक पछाइत जिनगीक अनेको बाट फुटै छै, देखि अपनो जिनगीक बाट तकैक खियालसँ, बाटे चललासँ ने बातो बनै छै आ नाशो होइ छइ। खियाल ई जे पिताजी दस बीघा खेतबला किसान छैथ, तँए नीक हएत जे इण्टरक पछाइत एग्रीकल्चरे कौलेजमे पढ़ि वंशकेँ आगू बढ़ाएब।

पिताजीक मूल सम्पैत तँ ओही मुरतीमे समाएल छैन किने, जे केना हाथ पहुँचा पकैड़ दस बीघा जमीनपर ठाढ़ अपन इज्जत-आबरू, मान-सम्मान, बँचबैत आएल अछि, ओही परिवारक ने विधि-बेवहार, किरिया-कर्मकेँ काल-क्रमसँ धारक धार अनवरत बहैत रहल, तखन ने परिवारक समुचित समग्र विकास भेल, आगू बढ़ल आकि एक-भग्गू बनि अर्थक गंगा तँ टपि गेलौं, मुदा जमुना, सरस्वती, त्रिवेणी गंगा टपब तँ नहियेँ कहल जा सकैए। गाम ऐबते रमाकान्त किसुनलाल ऐठाम पहुँचल। एक तँ जेठ मासक रौद तैपर धरती तबधल! ओना, तीन बेर बरखो भेल मुदा तैयो जेठ अपन रंग पकड़िये लेलक...।

दू छिट्टा ठढ़िया साग बाड़ीसँ आनि किसुनलाल दरबज्जापर तराजू-सेरसँ जोखै छला। सौदो तँ ओहन सौदा छी जे लगले पानि चढ़ा तौल लिअ, सबाइयो बढ़ि जाएत आ पानि चढ़ाएब छोड़ि दियौ तँ मनुखे जकाँ सेर-पौआ कमि जाएत। मुदा किसुनलाल ओहेन किसान जे बाड़ीसँ टटका काटि आनि पहिने सागकेँ तौल मुट्ठी बान्हि, पछाइत पानि चढ़ौता जे लेवालकेँ जेहेन भाग हेतै तेहने ने सागो हेतइ। जिज्ञासा भरल आवाजमे रमाकान्त किसुनलालकेँ पुछलकैन-

“काका, अहाँ तँ जिनगीक चारिमपनमे पहुँच गेलिऐ, तैयो देखै छी.?”

आगूक बात रमाकान्त जीह तर दाबि लेल, मुदा किसुन काका ओकरा अधला नै बुझलैन। खोदि-खोदि जहिना घाउ बहाएब बहौनिहारक काज छी, से बुझि किसुनलाल पुछलखिन-

“बौआ, साग देखि मन झुझुआइत हेतह, मुदा अपन जिनगीकेँ दू कट्ठा बाड़ीमे समेट बारहो मास सागक खेती करै छी आ अपना ढंगक मनुख बनि अपन जिनगीक बाट धेने जा रहल छी।”

किसुनलालक बात रमाकान्त अदहे-छिदहे बुझलक, मुदा जिज्ञासा तँ सौंसे बुझैक रहै, बाजल-

“से की?”

एक काजक अन्तिम घड़ी, पतियानी काज लगल, नहाएब, खाएब आराम करब तखने ने तीन-बजिया गाड़ी पकैड़ कोसी-कमलाक छहर छछाड़ैले जाएब...। तँए, प्रश्नकेँ समटैत किसुनलाल बजला-

“बौआ, अखन अहाँ कौलेजमे परबेसे केलौं हेन तँए हमरो औरुदा भगवान अहींकेँ दैथ, मुदा एकटा बात कहि दइ छी जे जहिना गाछ-बिरीछ, फल-फूलक गाछ रोपल जाइ छै तहिना जिनगीकेँ सेहो रोपल जाइ छइ। हम अपन जिनगी अही दू कट्ठा चौमासमे रोपि देने छिऐ आ

दस किलो साग सभ दिन अनै छी, जे चौबीसो घण्टाक बुतात होइए।"

कोनो चीजकेँ बुझब-बुझाएब आ करब-कराएब दुनूक दू रूप भेल, एक भेल थियोरी आ दोसर भेल प्रेक्टिकल। ओहुना कहल जा सकैए, जानब आ जानि कऽ करब। जँ प्रेक्टिकलक बेर थियोरीक प्रश्न उठौल जाएत तँ ओ प्रेक्टिकलक बाधक भेल। ओना, प्रेक्टिकल करैसँ पहिने थियोरीकेँ नीक जकाँ चलिया ली। जँ से नहि, आ घेरा लत्तीक फड़ सेरियबैकाल जँ कियो पुछि दैथ जे सुपाच्यक दृष्टिसँ घेरा केहेन तरकारी होइए, तँ निश्चित रूपेँ मन बँटेबे करत। जखने मन बँटाएत तखने नजैर बँटाएत आ नजैर बँटेने घेराक बतियाकेँ कड़चीक सांगहक धक्का लगबै करतै। आ जखने कड़चीक मारि लगतै तँ ओ सड़ि जाएत.!

ओना, एक्के प्रश्नपर ठाढ़ भेल रमाकान्तो मने-मन विचारैत आ किसुनलालो। मुदा दुनूक अपन-अपन बुधि-विवेक, तँए अपना-अपना रस्ते दुनू विचार करैत। रमाकान्तक मनमे उठल, अखन हमरा नै एबा चाही, अखन काजक बेर छै, तहूमे किसानक लेल। स्कूल-कौलेज जकाँ दस बजिया थोड़े छी। भरि दिन ने काजक धुमसाही खेती-पथारीक रहैए, मुदा किरिण डुमला पछाइत तँ खेतिहर किसान असथिर होइते हेता, नीक हएत जे हुनकेसँ आगू बुझैक समय लऽ ली...।

रमाकान्तसँ फराक विचार किसुनलालक मनमे उठलैन। मनमे उठलैन जे कोनो जिज्ञासुकेँ जँ मुस्की मुड़ियबैत दरबज्जापर सँ विदा नै केलौं, तँ अतिथि सत्कार केना भेल? मुदा अतिथो सत्कार तँ काले-क्रमे ने नीक होइ छै...।

अपने बेथे जहिना रमाकान्त बेथाएल तहिना किसुनलालो। मुदा समय केकरा छोड़लक जे अहाँकेँ छोड़ि देत, पकैड़ चलू आकि गुड़ैक-गुड़ैक गुड़कैत चलू, मुदा...।

सामंजस करैत रमाकान्त बाजल- "काका, आएल तँ छेलौं किछु

बुझैले, मुदा अहाँक व्यस्ता देखि किछु पुछैक साहसे नै होइए?”

रमाकान्तक प्रश्न सुनि किसुनलालक मनमे भेलैन जे एहेन काज समय चुकब नै भेल, समयकेँ बँचबैत चलब भेल। बजला-

“बौआ, बाल-बोध रहितो ठेकनगर छह। बड़बढ़ियाँ समय अगुआ बजलह। दिनक काज करैक ओरियान लेल भिनसरमे एक-डेढ़ घण्टा आ साँझू पहरकेँ दिनक उसरनक ओरियान करैबेर एक-डेढ़ घण्टा समय खाली रहैए, तैबीच तोरा जे सुविधा हुअ। आबह, एक गामक, एक समाजक ने सभ कियो छी, एकर विचार तँ अपने सभ ने करबै। जँ से नै करबै तँ एके देशमे बम्बै किए इण्डिया बनि गेल आ अपना सभ किए गामे-गमाइत रहि गेलौं।”

किसुनलालक बात सुनि मुस्की दैत रमाकान्त बाजल- “कौल्हुका समय रहए दियौ काका?”

कहि चलि गेल...।

दुनू छिट्टाक सागकेँ किसुनलाल अध-अध सेरक मुट्ठी बना, सैंति जलसिक्त करैत नहाइले गेला।

सगहा जातिक वंशमे किसुनलालक जन्म भेल। अपन वंशक रक्षा करैत किसुनलालो अपन बाप-दादाक पुश्तैनी-घराड़ीपर बसोवास छैथ। ओना, सगहा वंश बाँस, खरही, रजनीगंधा आ अड़िकंचन जकाँ फूल-फड़क आशा छोड़ि समय पकैड़ वंश वृद्धि करैए तहिना किसुनलालो अपन वंशक रक्षा अपना लूरिये-बुधिये कइये रहला अछि। सगहा वंश एना फुटल, एके वंशक बीच बिआहक प्रश्न उठल। फौगनहैट लहकी दऽ देने रहै मुदा रहै माघे। कन्या देखए घटक सभ आएल रहैथ, संयोग एहेन बनल जे बथुआ साग तोड़ने कन्योँ आ कन्याक माइयो बाध दिससँ अबैत रहथिन। घटकक बीच एकटा गामक जमाइयो रहथिन। वएह चुटकी सुतारि रस्तेपर कन्याक संग कन्याक माइयोकेँ सभकेँ देखा देलकैन।

तत्वनात तँ घटक किछु ने बाजल, मुदा गाम गेला पछाइत समाद पठौलक जे सगहा जातिक छी तँए कुटुमैती नै करब। आर्थिक दृष्टिसँ किछु सम्पन्न तँ रहबे करैथ।

चारि-पाँच बीघाबला किसान परिवारमे किसुनलालक जन्म भेल। गामेक स्कूलमे जखन पढ़ैत रहए आ स्कूल-कौलेजक खिस्सा-पीहानी सुनलक, तखने मनमे रोपि लेलक जे एम.ए. तक जरूर पढ़ब। संकल्पेसँ जहिना संस्कारो फड़ै-फुलै छै तहिना किसुनलालोक फड़ल-फुलाएल।

गामक मिडिल स्कूल तक किसुनलालकेँ पढ़ैमे कोनो असुविधा नै भेल। आध मीलपर स्कूल, टोले-टोल जाइत-अबैत। तहूमे पँचमा तक महिनाक फीस-फास रहबे ने करइ, छठा-सतमामे अढ़ाइ रुपैआ महिना लगइ। तँए कोनो पैघ समस्या नहियेँ। ओना, आइक जे परिस्थिति खर्चक हिसाबसँ बनि गेल अछि ओकरा जँ मोटा-मोटी देखब तँ जेते खर्चक पछाइत कियो डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर आकि ओकिल बनि तैयार होइ छला ओते खर्च अखन केते विद्यार्थीकेँ मिडिल स्कूलसँ पहिने भऽ जाइ छइ। सत्ताक मदारी खेल तँ ऐछे जे एक दिस शिक्षाकेँ अनिवार्य आ फ्री अधिकारक बात अछि तँ दोसर दिस खर्चक ठेकाने ने अछि! जे जेतए छैथ से तेत्तै तबाह.!

मिडिल स्कूलसँ निकलला पछाइत किसुनलालक मन वौआएल नहि। जहिना कियो संकल्पित बाट पकैड़ चलै छैथ तहिना किसुनलालो हाइ स्कूलमे नाओं लिखौलक। ओना, हाइ स्कूल बहुत दूर नहि, मुदा पएरे अबै-जाइबला लेल लगो नहियेँ। आइक परिस्थितिमे तेज सवारी आ रोड भेने जेते दूरपर जा कियो चाह-पान-जलखै करैए तेते दूरपर, सवारी आ रस्ता–पेराक दुर्दशा दुआरे विद्यार्थीकेँ छात्रावासमे रहए पड़ै छल। अपना ऐठामक मौसमो तँ प्रतिकूले अछि मुदा बिना अनुकूल बनौने काजो तँ नहियेँ चलत। प्रतिकूल ई जे जँ पाँच किलो मीटरपर स्कूल अछि बैशाख-जेठमे भिनसुरका पढ़ाइ होइए, एक दिस जाइकाल नीक रहल मुदा दोसर

दिस छुट्टीक पछाइत साढ़े एगारह बजे अबैकाल केहेन होइए से तँ सबहक सोझहेमे अछि। तहिना बरसातमे एक तँ रस्ता-पेरापर पानिक बेगो चलैत आ खच्चा-खुच्ची सेहो रहबे करए। चिकनि माटिक थालकेँ धोइयोमे देरी लगबै करै छइ। तहिना बर्खो-बुन्नीक कोनो ठेकान नहियेँ अछि, अध'रस्तेमे जँ कहीं शुरू भेल तँ स्कूल छोड़ाइए देत! तहिना जाड़ोक मास। जहिना दस बजे भिनसरे बुझि पड़ै छै तहिना पाँचे बजे साँझसँ ओस खसए लगै छइ। खाएर जे छै, ओही बीचमे ने जिनगीक पथो-परिवहन छै...। अँटावेश करैत किसुनलाल छह मास होस्टलमे रहि आ बाँकी छह मास घरेपर सँ स्कूल आएब-जाएब शुरू केलक। छह मासक छात्रावासक जिनगी किसुनलालकेँ जिनगीमे ठाढ़ होइक बाट देखौलक। बाइस सेर चाउर, पाँच सेर दालिक संग दस रुपैआ महिना, बस ई भेल भोजनक खर्च। बैसारी काज केनिहारकेँ जलखैक ओते जरूरतो नहियेँ पड़ैए। किसुनलाल मैट्रिक पास केलक।

लोअर प्राइमरी स्कूलमे बच्चा कौलेजक पढ़ाइक गीतो गबै छल आ खिस्सो–पीहानी सुनबो-कहबो करै छल, ओइ घाटपर किसुनलाल पहुँच गेल। पाँच बीघा जमीनबला खेतक उपार्जनसँ निश्चित रूपसँ कौलेजमे विद्यार्थी नै पढ़ा सकै छैथ। ओना, कागजी नक्शा किछो बनौल जा सकैए तेकर कारण खेतीक जे पैदावारक दशा अछि, जे बाढ़ि-रौदीसँ आक्रान्त अछि, जैठाम परिवारकेँ अन-वस्त्र जुटाएब कठिन छै तैठाम कौलेजमे बाल-बच्चाकेँ पढ़ाएब कठिन अछिए। पिताक दशा-दिशा देखि किसुनलाल, अपना भरे कौलेजमे पढ़ैक निर्णय तखन केलक जखन एम.ए. पास ओहन-ओहन चेहरा अपन जिनगीक खिस्सा-पिहानी सोझहामे आबि ठाढ़ भऽ टाल ठोकि कहैत-

'हमहूँ मनुखे छी। भाय, रातिकए अस्पतालमे भैयारीक संग मुर्दा उठा-उठा कौलेजक खर्च जुटेलौं...।'

तँ कियो कहैत- 'प्रतिदिन खर्चक हिसाबसँ कारोबार कऽ

पढ़लौं...।'

तहिना कियो ट्यूशन तँ कियो आन-आन काजक हिसाब किसुनलालकेँ जोड़ि कऽ कहलक...। ट्यूशनकेँ अधार बना किसुनलाल एम.ए. तक पढ़ैक विचार मनमे रोपलक।

जाबे कियो मनकेँ पकैड़ संकल्पित बाटक बातपर राजी नै करौत ताबे तक जिनगीक बाट एकमुहाँ केना बनत? काँकोड़क बच्चा जकाँ, माइक पेट फटिते, सह-सह करैत सभ सभ दिस विदा होइत, तहिना जँ विवेकी मनुखोक हुअए तँ ओकरा की कहबै.? दुनियाँक बोनमे जहिना अनेको पैघ-पैघ गाछ दुनियाँकेँ छाहैर देने अछि तहिना सोझ बाटो तँ रोकनै अछि। सोझ बाट लेल सोझ दिशा-दशा होइ छै, मुदा बोनक गाछ तँ बेठेकान जनमल अछि। जैठाम जेकरा अनुकूलता भेटलै तहीठाम से जनैम, हवा-पानि पीबैत बाटेपर ठाढ़ भऽ गेल अछि। रंग-रंगक फल-फूल फला गेल अछि। अपन-अपन सीमामे सभ महिराइन बनि गेल अछि। महिराइन ई जे जैठाम जेहेन माटि-पानि छै तैठाम तेहेन अन-फल-फूल-तरकारी जे पूर्व-जनक देल जिनगी छैन, ओकरो नकारल नै जा सकैए। जँ से हएत तँ हजारो रंगक एक वस्तु जेना सागकेँ कोन मौसम अनुकूल अछि, जे मनुखोक जिनगी लेल अनुकूल हएत, तेकर गहन विचार हमर सगहा पूबजन जीह तोड़ि नचैत ठाढ़ जिनगी दुनियाँकेँ देखा चुकल छैथ।

छह बर्खक कौलेजिया जीवनमे किसुनलाल जिनगी जीबैक पद्धतिक बीआ जिनगीक चासमे चसिया लेलक। जिनगीक बीआ ई छिटकल जे निश्चित समैयक ट्यूशनसँ अपना भरि दिनक खर्च पुरा लइ छला। पितो कहियो अनदेखी नहियेँ केलखिन। बेर-कुबेर जे हाथ-मुट्ठीमे पाइ आबैन तँ किसुनलालकेँ दैतो छेलखिन आ कहितो छेलखिन-

"बौआ, तोरा पढ़बैले जेते हमरा उचित ओरियान करक चाही, से नै कऽ पाबि रहलियऽ हेन, ऐठामक किसान परिवारक जिनगी सबहक सोझहे अछि, तेकर माने ई नै बुझिहऽ जे पिताक अनुकूल दृष्टि नै छैन।"

पिताक प्रति किसुनलालक एहेन श्रद्धा जे पिताक देल पाइसँ किताब-कलम-कागज छोड़ि, आनठाम केतौ ने खर्च केलक। बजारू जिनगी भेने किसुनलालकेँ पढ़ैक भरपूर समय भेटल। भरपूर ई भेटल जे जहिना कोनो गाममे सम्पन्न पुस्तकालय रहने जिज्ञासु विद्यार्थीकेँ अनमोल-अनमोल फल पबैक केदलीवन भेटैत तहिना किसुनलालोकेँ भेटल। मुदा गाम-गामक पुस्तकालय सभ इतिहासक तरका पन्नामे पड़ि गेने, भाग-दौड़क समयमे ओमहर कियो देखिये ने पाबि रहल अछि! तँए कि एकरा नकारि देब जे समाजमे पुस्तकालय नै छल? जिज्ञासु छात्रक लेल उच्चकोटिक तीर्थ स्थल अधिकांश गाममे छल। उच्च कोटिक ऐ लेल जे सभ यज्ञसँ ज्ञानयज्ञ नमहर होइ छइ। जे स्कूले-कौलेज, प्रवुद्ध-जनक विचार-विनिमयक संग होइत आएल अछि। माने समाजक बीच सार्वजनिक शिक्षण संस्थान पुस्तकालय ओहने बट-वृक्ष रहल अछि। कियो प्रवुद्ध सदैत सुबट्टी देब अपन धर्मक कर्तव्य बुझै छैथ, मुदा जँ विचारक उत्तर ओहो नै भेल जे कान धरि रहल। तँए ईहो नै कहल जा सकैए जे प्रवुद्धक टोपी पहिर कलछपन नै भेल। भेल, खूब भेल। की गामक पुस्तकालय प्रवुद्ध-जनक संग नबयुवककेँ उत्साहित, उद्वेलित नै करैत रहल, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। की ओइ नबयुवकक मनमे कहियो रहैन जे पुस्तकालय जुआ-शराबक अड्डा बनत आकि प्रवुद्ध-जनक सामाजिक विचार-विनिमयक?

..मुदा दोसर पक्ष एकरो नै नकारल जा सकैए जे गाम-गामसँ पुस्तकालय उजैर गेल। जैठाम शिक्षा मदक सरकारी खर्चक ब्यौरा समाजक बीच अबैए तखन ढोलक बदला नंगेरा पीटि-पीटि कहल जाइ छै, पंचायतक ब्यौरामे लाखोक हिसाब। मुदा केते गाम एहेन बँचल अछि जइ गाममे पुस्तकालय अछि? एक तँ जहूठाम किछु हुअ चाहैए तहूठाम एहेन-एहेन घेरा-घेरी अछि जे सभ काजे घेरा जाइए।

किसुनलालकेँ कौलेज जीवनमे पढ़ैक भरपूर समय ई भेटल जे

कौलेजमे रीडिंग रूमक बेवस्था छल। जइमे भरपूर कितावो आ भरपूर समैयो। भिनसरसँ साँझ धरि रीडिंग रूम खुजल रहै छल। गेटपर एकटा चतुर्थ श्रेणीक कर्मचारी जे प्रवेशक समय रजिष्टरमे हस्ताक्षर करबा लइ छला। कर्मचारियोमे इमानदारी छेलैन, भरि दिन काजपर तैनात रहै छला। बीचमे एकटा आरो भेल, किसुनलालकेँ कर्मचारीसँ सम्बन्ध बढ़ल। सम्बन्ध बढ़ैक कारण भेल जे बिनु पढ़ल-लिखल कर्मचारी आगूमे रजिष्टर-कलम रखि अपन ड्यूटी करैथ, ओना, दोहरी ड्यूटी रहैन मुख्य रहैन ओगरवाहि। मुदा केता दिन एहेन भेल जे किसुनलाल छोड़ि दोसर विद्यार्थीक उपस्थिति रीडिंग रूममे नै भेल। असगर किसुनलालकेँ देखि ओहो कर्मचारी टुघरल-टुघरल लगमे आबि बैस जाइथ जइसँ जेना गार्जन अपन बच्चाकेँ आगूमे बैसा पढ़बै छैथ तहिना किसुनलालोकेँ बुझि पड़ैत। मुदा भऽ गेल बीचमे दोसरे। अपन उदार विचार बँटैत कर्मचारी किसुनलालकेँ कहलक-

“बाउ, जेते किताब पढ़ी, कियो रोकत नहि, मुदा तैसंग ईहो कहै छी जे घरोपर लऽ जा रातिमे पढ़ि भिनसरे जमा कऽ देबै तँ ओहो सुविधा भेटत। ऐसँ बेसी हमरा बुते भइये की सकैए।”

कर्मचारीक विचार किसुनलालकेँ एना अपनौलक जे घण्टा-घण्टा दुनू गोरे गप-सप्पमे बितबए लगल। एक चतुर्थवर्गीए कर्मचारीक ड्यूटीक निर्भयता सदैत ओकरा चाइनपर चमकैत। समैयक भरपूर उपयोग किसुनलाल कौलेज जीवनमे केलक।

एम.ए.क नीक रिजल्ट भेलो पछाइत किसुनलालकेँ नोकरीक आशा नहियेँ। तँए जेकर आशे नै तइसँ हटिये कऽ चलब नीक भेल। मुदा किसुनलाल द्वन्द्वमे पड़ि गेल। एक मनमे उठै जे जखन अपना पढ़ि-लिखि कऽ जिनगी बनबै आ जीबैक लूरि भऽ गेल, तखन अनेरे नोकरीक पाछू पड़ब नीक नै हएत। मुदा लगले दोसर विचार मनकेँ दाबि दइ। दाबि ई दइ जे पढ़ल-लिखल लोक जँ नोकरी नै केलक तँ ओकर खिल्ली केतेको

दोहा-फकरासँ उड़ौल जाइए। पढ़ै फारसी बेचै तेल, इत्यादि। लोकक लाजक दुआरे किसुनलाल नोकरी लेल साल भरि दौड़-बरहा करैत रहल, मुदा साल भरिक पछाइत नोकरीक उमेरे बीत गेल। तेकरा ओ अधला नै बुझलक। अधला ऐ दुआरे नै बुझलक जे मन मानि गेल रहै जे स्वतंत्रता आ परतंत्रता लोक अपने सिरजैए। तँए स्वतंत्र देशक स्वतंत्र नागरिक बनब सबहक अधिकार छी।

नोकरीमे केतौ किसुनलालकेँ गरे नै बैसल। एक तँ सरकारी रेकर्डमे जातिक पञ्जी छूटल अछि, तैपर जतियारेक जाल आ पैसाक महजालकेँ किसुनलाल टपि नै सकल। ओना, टपियो सकै छल मुदा विचारक उदासी सेहो बाधा भेल। जँ से नहि, तँ कियो पाँच बीघा खेतबला, जेकर जमीनक मूल्य करोड़मे हेतै, ओ जँ खेत छोड़ि नोकरीक जिनगी धारण करए चाहैए, तरवन किए ने सम्पैतिक हस्तांतरण सेहो कऽ लइए?

..मुदा किसुनलालक अपन जिनगीक धारणा बनि गेल छेलै जे जे सम्पैत अछि ओहीमे अपन अनुकूल जिनगी बना जीवन धारण करब। ओना, चारि-पाँच बीघा जमीन किसुनलालक पितोकेँ, मुदा तीन बीघा जमीनकेँ किसुनलाल जिनगी जीबैक अनुकूल बनौलक। अनुकूल ई जे टुकड़ी-टुकड़ी भेल खेतकेँ समेट, अदैल-बदैल एकठाम केलक। एकठाम केलाक पछाइत जमीन पूर्ण जिनगीक अनुकूल अपनाकेँ बनबैक परियासमे अपन जिनगीक समर्पण केलक। जिनगीक आवश्यकतानुकूल धानक खेत, दलिहनक खेत, रब्बीक खेत आ तीमन-तरकारी, फल-फलहरी लेल ऊँचरस खेत बनौलक। ऊपर दबाकऽ बोरिंग गड़ौलक जइसँ ऊपर-सँ-नीचाँ तकक सिंचाइ भऽ सकए। ओना, बारह मासक सालमे सभसँ मरखाह मौसम बरसात होइए, नै भेल तँ रौदी, तहूमे जैठाम पानिक कृत्रिम साधन नै छइ। आ खूब भेल तँ दाही। ओना, अनुकूल तँ होइते अछि, अनुकूल ई जे समगम पानि भेने ने रौदी होइए आ ने दाही। मुदा हिस्सेदारी तँ तीन सालक भेल। एक हिस्सेदार रौदी, दोसर दाही तेसर

समगम। खाएर जे भेल...।

खेत बनबैत पटौनीक ओरियान बीआ-खादक जोगार करैत किसुनलालकेँ साठि बरखक उमेर गलि गेलैन। सिपाही जकाँ अखन तकक जिनगीमे किसुनलाल आने जकाँ धकिऔलो गेला, मुदा जीबठ बान्हि जिनगीक मोर्चापर ओहिना ठाढ़ छैथ जहिना ठाढ़ होइक विचार जुआनीमे सन्तानक छैन। शुरूहेसँ ओ बुझैक परियास केलैन जे समाजमे केना रातिक बीआ छीटि, रतिचर सभ भरि राति चड़ी करैए। आइक समयक मांग बुझने बिना पारिवारिक वा सामाजिक ढाँचा सुदृढ़ नै भऽ सकैए। जैठाम धर्मक माने माए-बापक सेवा, बाल-बच्चाक सेवाक संग समाजक सेवासँ जुड़ल अछि, जैठाम पोखैर-इनार खुना, विद्यालय-महाविद्यालक निर्माण सेवा रूपमे धर्म बनि फड़ल-फुलाएल, तैठाम आइक परिवेश केहेन हेबा चाही, ई तँ विचारणीय विचार तँ अछिए।

चारि सन्तान किसुनलालकेँ। चारूकेँ अपन-अपन स्वतंत्र जिनगीक दिशा देखा, पाछूसँ धकैल सुपथ-कुपथक विचार करैक बात कहि अपन स्वतंत्र जिनगीमे पहुँच गेला। परिवार अलग नहि मुदा सबहक सभ तरी-घटी बुझैत। तैठाम तँ यएह ने उचित भेल जे केकरो कर्ज कियो ने खाए। अपन-अपन कमाइसँ परिवारकेँ आगू ठेलए।

दोसर दिन रमाकान्त छह बजे साँझमे पहुँचल। ओना, किरिण डुमि गेल छल मुदा दिनक लाली रहबे करए। एक तँ अहुना किसुनलाल किरिण डुमैत दरबज्जापर आबि बैस जाथि, मुदा आइ तँ दरबज्जोपर काजे छैन। तँए समयसँ पहुँचब आरो अनिवार्य बुझि रमाकान्तकेँ अबैसँ पहिने आबि बैस गेला। ऐबते रमाकान्तकेँ अपने लग चौकीपर बैसौलैन। दू-जनियाँ चौकी तँए चारि-पाँच गोरे गोलिया कऽ बैस सकैए। एक आसन, एक सिंहासन, यएह ने भेल गुरुकूलक विचार। रमाकान्तकेँ देखि किसुनलालक मनमे उठलैन, रमाकान्त कौलेजमे पढ़ैए, शिष्टाचार दुआरे जँ चाह नै पीबए तखन केना पुछिऔ जे बौआ चाहो पीबह? तइसँ नीक

जे अपने लाथे बाजब हएत। पोताकेँ नाओं धरा बजला- “जगरनाथ, चाह पीबैक मन होइए?”

झँपले-तोपल किसुनलालक बात, इशारे-इशारामे सभ बुझलक। जहिना दानाक रस भरिते दारीम चहैक जाइए तहिना रमाकान्त चहकल-

“काका, अहाँ अपना जिनगीसँ खुशी छी?”

रमाकान्तक प्रश्न सुनि किसुनलालक मनधारमे जुआर जकाँ उठलैन, उठलैन ई जे जिनगीक चारिमपनमे पहुँच गेल छी, एक दिनका एक घटनाक फल जिनगी नै होइए, तैठाम तँ जिनगीक आधारेपर ने जवाब देल जा सकैए। बजला-

“बौआ, जिनगी सँ खुशीए नै वेहद खुशी छी।”

जहिना रमाकान्तक प्रश्न सोझ-साझ तहिना किसुनलालोक उत्तर सोझ-साझ, मुदा रहस्य तँ रहस्ये बनल रहि गेल अछि। तर्क-वितर्क करैत रमाकान्त बाजल-

“काका, नीक जकाँ नै बुझि पेलौं जे की खुशी आ की वेहद खुशी।”

रमाकान्तक जिज्ञासा देखि किसुनलाल विचारलैन, पहिने शब्दक अर्थ आ पछाइत जिनगीक बेवहारक बीच साम्यताक चर्च करब नीक हएत।

बजला-

“बौआ, खुशी एकसँ शुरू होइए आ वेहद खुशी सीमा-सरहद टपैत होइए। जिनगीसँ ऐ दुआरे खुशी अछि जे अपन स्वतंत्र जीविकाक आधार अछि, झूठ-फूस बजैक कहियो समैये ने भेटल। तँए खुशी छी... ।”

ऐगला बात किसुनलालक कण्ठे लग रहैन आकि बिच्चेमे रमाकान्त पुछि देलकैन- “आ वेहद खुशी?”

रमाकान्तक जिज्ञासा जेहेन उग्र छल, जँ तेहेन उत्तर नै देल जाइत तँ ओ केम्हरो बहैक सकैए। तँए आड़ि-मेड़ सोझ करैत किसुनलाल बजला-

“बौआ, जहिना देशक सीमानपर आन देशक आक्रमणक रक्षामे सिपाही अपन जीवन दान करैए तहिना अपन जिनगी गामक माटि-पानिकेँ दान कऽ देने छिऐ, तँए वेहद खुशी।”



तिथि: 22 जुन 2014, शब्द संख्या: 2860

मनकमना

रामखेलौनकेँ अपन तेहेन भीठगर एको धूर खेत नहि मुदा बच्चेसँ लोकक देखसीसँ सेहन्ता लगल रहै जे अपन एक बीट केरा आ कलमी-सरही मिला पाँचटा आमक गाछ होइतए। पाँचटा ऐ दुआरे जे केरा एकोटा बीट रहने सालमे पान-दसटा घौर हेबे करत, मुदा एकटा आमक गाछसँ मन छुछुआइते रहत। छुछुआइत ई रहत जे कलमी रहल तँ रसगर सरही-ले आ सरही रहल तँ गुदगर कलमी-ले। तेतबे किए, केरा जकाँ कि आम थोड़े होइए जे निश्तुकी मोजरबे-फड़बे करत। गोटे साल मोजरबे ने करत, तँ गोटे साल बिजलोकेमे जरि जाएत, गोटे साल रौदीमे सुड़े लगि जाएत तँ गोटे साल विहाड़िमे फड़लाहा डारिये टुटि कऽ खसि पड़त।

एक तँ गामेक तकदीर फुटल जे जेहो चौथाइ हिस्सा भीठगर जमीन छेलै ओहो कोसीक बान्ह टुटने गामे देने धारक नासी फोड़ि ओहो भीठका जमीनकेँ चौरियोसँ नीचाँ उतारि देलक। जइसँ गामे चोकर आम जकाँ चोकरा गेल। ओना, मछबड़बा सबहक पतरा कहै जे गामे किए गामक लोकोक भाग जगलैन। तेते ने गहींर जमीन गाममे भऽ गेल जे एकरे बान्हि-छेक लोक अपना-अपना खेतमे माछ-मखान उपजौत तँ गामक के कहए, अमेरिका-इग्लैंडक वेपारी पहुँच-पहुँच कीनत। जइसँ बड़का-बड़का होटल, नीक सड़क बनि नीक-नीक गाड़ी दौड़ए लगत। जेहने पूजाक परसाद मखान तेहने मनुखक परसाद माछ भेल। मुदा वैष्णव सभ गाम छोड़ि वृन्दावनक बास करैक विचार करए लगला। मन दुतकारए लगलैन जे गामे मछाह भऽ गेल। लंकाक विभीषण थोड़े छी जे

मन-चीत मारि रावणसँ अराड़ि केने रहब। अपने ने माछ पोसब आ ने खाएब मुदा जखने गेनहारी-पटुआ साग जकाँ वाड़ी-झाड़ीमे माछे उपजत तँ सहरगंजा लोक खेबे करत। बड़बढ़ियाँ खाएत तँ अपना मुहेँ खाएत, मुदा रन्हितोकाल आ कलपर धोइतोकाल जे गंध पसरत, तेकरा केना पेटमे जाइसँ रोकब। चाहे मुँहक माध्यमसँ जाए आकि नाकक माध्यमसँ, जाएत तँ पेटेमे। पेटमे नै जाए, तेकरे ने संकल्प लऽ कण्ठी बान्हि वैष्णव भेलौं। गामक पानि (कलक पानि) गंधक दुआरे ढठा जाएत, अपन कल छोड़ि केकरो कल पानि पीबैबला रहत? सबहक कलक पानि इछाइन-मछाइन महकत किने। ओहन छुतहरो तँ नहियेँ छी जे लगले दुधिया घरहर बनि जाएब आ लगले गोबराह बनि छुतहर भऽ जाएब। जइसँ कण्ठी तोड़ि आन-आन जकाँ मछखौक बनि खत्ता उपछए लगब। मुदा गाम छोड़ि पड़ेबो केना करब? अपन बाप-दादाक खतियानी जमीनक हिस्सा सभ दिनसँ रहल तेकर तियागो केना करब? केकरो हाथे बेच लेब आकि ओहिना छोड़ि कऽ चलि जाएब, मुदा जे कीनत आकि ओहिना दफनौत, करत तँ अपना मने। जँ कहीं खाधि खुनि माछे पोसए लगत, तखन तँ आरो घिनमा-घीन हएत। तैसंग ईहो तँ लोक कहबे करत जे फल्लाँ वंशमे फल्लमा तेहेन बतौर भऽ गेल जे अपने तँ केतए-कहाँ वौआ-ढहना भीख मंगिते अछि जे बापो-दादाक नाक-कान कटा जनम-धरतियोकेँ मेटा लेलक। जखन जनम-डीहे नै रहत तखन मरन-मरौसी केतए रहत...।

जहिना सभकेँ अपनो, अपन बालो-बच्चा आ परिवारोक प्रति किछु ने किछु मनोरथ होइते छै, जैपर चढ़ि मन जीवन-यात्रा करैत रहै छै, तहिना रामखेलौनोकेँ खेनाइ-पीनाइक आशा तँ बोइन-बुत्तापर छेलैहे मुदा फल-फलहरीक मनोरथ मनमे रोपनै छल। गाम देने बड़का सड़क बनने, सड़कक कातक जमीन जहिना आन-आन दफानलक तहिना रामखेलौनो दस धूर भीठ जमीन पकड़लक। ओ जमीन पहिने गौंवैक रहै जे सड़क

बनौनिहारक हाथे बेच लेलक, जइसँ केकरो कोइ विरोध नै केलक। मुदा ई तँ खतरा रहबे करै जे आगू जहिया सड़कपर माटिक काज हेतै तइ दिन ओही सभमे सँ उठौल जाएत...।

घरे सोझे कनियेँ हटि कऽ दस धूर चौमास रामखेलौनकेँ क्षणिक नसीव भेल। खेत अड़ियैबते बिसरभोर भऽ गेलै जे (जमीन) केकरो अनकर थोड़े छिऐ, ई अपन भेल, जेना जे मन फुरत, तेना से करब...।

अपनेमे रामखेलौनकेँ तेना मन मोहिया गेलै जे रंग-रंगक विचार मनमे जागए लगलै। बिसैर गेल जे जे जमीन क्षणिक हाथमे आएल ओकर केते भरोस। जेतबे भरोस तेतबे ने लाभो हएत। जेकर छिऐ ओ केतेकाल रहए देत, तखन तँ ई भेल जे सालक अनुमान कऽ लेब आ तइ हिसाबसँ जेतबे आशा तेतबे आशा। मुदा से रामखेलौनक मनमे एबे ने कएल।

..एबो केना करितै, जेते पानिमे बुधि ठाढ़ छेलै ओतबे तकक ने थाह छेलै। मुदा प्रश्न तँ गहींर पानिक अछि जे रामखेलौन सन-सन लोक लेल अगम भेल। अगममे बेसी लोककेँ डुमैक सम्भावना रहै छै, हेलि कऽ ऊपर होइक कमे रहै छै, जेना गंगा स्नान सभ करए चाहै छैथ, करितो छैथ मुदा कियो माटिक बीचक घाटपर बैस लोटामे भरि-भरि करै छैथ तँ कियो घुट्ठी भरि पानिमे, कियो जाँघ भरि पानिमे, कियो छाती भरि पानिमे तँ कियो माथ डुमा डुमकियो लगा करिते छैथ। तखन तँ भेल जेते पानि तेहेन स्नान आ जेहेन स्नान तेहेन मन-मनोरथक फल...।

किरिण उगिते जेना कियो अपन दिनुका काजे बिसैर जाइए, तहिना रामखेलौनोकेँ बिसरभोर भऽ गेल। भेल ई जे शुरूहेसँ मनोरथ रहै जे एक बीट केरा आ पाँचटा आमक गाछ होइतए। मुदा खेत अड़ियैबते मन तेना उड़ि गेलै जे बिसैर गेल पैछला मनोरथ। मुदा तैयो जेना जमीन जीह घीचने होइ तहिना भोरे सुति-उठि घरवालीकेँ रोबमे कहलक-

"हमरा अबेर भेल जाइए, एको क्षण रूकने काज गड़बड़ाएत।"

कहि चाहो-ताहो ने पीलक कोदारि कान्हपर नेने खेत पहुँचल। बीच खेतमे कोदारि रखि, पुबरिया-उत्तरबरिया कोणपर पहुँच खेतक कोण-काण मिलबए लगल। ओना, कोण-काण मिलबैले चारू कोण मिलाएब जरूरी अछि, मुदा से रामखेलौन सन लोकक मनमे उठबे किए करतै। ओहन भूमिक ने खेतिहर छी जे जेते हाथ-पैरसँ काज करैए तेतबे नजरियोसँ। जँ अपने नीक जकाँ नै बुझैए, तँ की हेतइ। सबहक अपन-अपन नीको होइ छै आ अधलो होइ छइ। अपने मने ने कियो मनकेँ बुझा-सुझा बिसवासमे आनि काज करैए... ।

कोणा-कोणी खेत मीलल देखि रामखेलौन खेतीक मिलान करए लगल। खेतीक लूरि रहितो रामखेलौन केतौ ठौरोपर विचार करैत आ केतौ बेठौरो भऽ जाइ। बेठौर तखन होइ जखन बुधि-विचड़ा मनकेँ बुधि-चितरा रोकि अपन काज आगू करा लिअए। तँए बुधि विचड़ा धकियाइत पाछू पड़ि जाए आ बुधि चितरा आगू भऽ जाइ। जइसँ अपन पहिलुका मन-मनोरथ पछुआ गेलइ।

..मुदा अखन धरिक काज अकास मार्गी छेलै तँए जमीनी कोनो नोकसानो नहियेँ भेल रहइ। किछु काजे आगू बढ़लै जे तामि-कोरि, गोला फोड़ि चौरऽसे बनबैमे लगल अछि। जखन किरिण माथसँ नीचाँ कनियेँ पूब दिस चढ़ैत बुझि पड़लै तखन कोदारि कान्हपर लऽ आँगन आएल। जहिना परदेसीक घरवाली घरक सोलहन्नी जिम्मा बुझि सभ काजकेँ समैपर सम्हारै छैथ मुदा वएह घरवाली घरबलाकेँ घरमे रहने घरे भरिक काजकेँ माने भानसे-भात केनाइटा केँ काज बुझै छैथ। खाएर जे हौउ, मुदा रामखेलौन दुनू बेकतीक बीच तेसर कारण भेल। कारण भेल जे जहिना रामखेलौनक मन खेत पाबिते अपन बोनिहारक रूप बदलैत किसानमे देखैत तहिना पत्नियोँ आनसँ अपना दिस अबैत देखलैन। जइसँ चाँइक बढ़लैन। चाँइक बढ़िते अँगना-घरमे चकोना हुअ लगली, जइसँ

बोनाएल-बिसराएल पतिक काज सेहो कन्हेठ लेली। जइसँ दुनू बेकतीक काजक हिसाबे दिनो बढ़लै।

कहैकाल तँ सभ कहिते अछि जे फल्लाँक दिन-बढ़ल आ फल्लाँक दिन घटल। मुदा की बढ़ल, की घटल, तेकरो तँ तजबीज करए पड़त। चाहे पाथर तर दबाएल, केंकियाइत कियो हुअए आकि हवाइ जहाजपर उड़ैत अकासमे हुअए, ने सुरूजक गति-विधि कमैए आ ने घड़ी-पहरक। तखन दिन केना घटैए आ केना बढ़ैए? मुदा ईहो तँ होइते अछि जे एके स्कूलमे एके शिक्षकक पढ़ाएल एके पोथी पढ़ि कियो शत-प्रतिशत नम्बर हाँशिल कऽ ऊपर चढ़ि जाइए आ कियो नीचाँ धकिया तेते निच्चाँ चलि जाइए जे चिन्हें-पहचीन समाप्त भऽ जाइ छइ। माने ई जे जेना ने ओकरा ओहेन पोथीसँ भेँट भेल होइ आ ने ओहेन शिक्षक आ ने ओहेन स्कूलेसँ। तखन? हँ तखन ई जे दिन-रातिक बँटवारा खाली चाने-सुरूजटा लेल नहि, सभ-ले भेल अछि। जे जेते जिनगी जीबैक ढंग पकैड़ जेते सफर करत ओ ओते अगुआइए आ जे जेते कुढंग आकि बेढंग भऽ चलत ओ ओते धक्का खाइत पाछू मुहेँ धकियाइत-धकियाइत धरतीपर खसैए।

दसे धूर खेत, करबारी हाथ पड़ने पाँचे दिनमे अड़िया चौरस बनि बीआ दइ-जोकर बनि गेल। बेरुका उखड़ाहाक काज केने रामखेलौन किरिण लहसैत पोखैर-झाँखैर दिससँ आबि, डेढ़िएपर चटकुनी बिछा चैनक साँस छोड़लक। आँगन बाहरैत पत्नीकेँ सोर पाड़ि बाजल-

“तेहेन जुग-जमाना भऽ गेल जे केकरोसँ किछु पुछबो गरदैने कटाएब हएत। सोझ मुहेँ, सोझ बात कियो केकरो कहै छइ। काज रहत आमक आ कहि देत कटहरक फड़ बड़ी-बड़ी होइ छइ। मुदा अहाँ तँ कियो आन नइ भेलौं, तँए अहींसँ विचारि खेतीक आगूक काज करब।”

पतिक बात सुनिते जसमतिक मन टिकुली जकाँ अकासमे उड़ि गेलैन। उड़ि ई गेलैन जे पतिक विचारी कोन पत्नी नै बनए चाहै छैथ, मुदा जिनगीक बेढंगपन तेते दूरी बना देने अछि जे चाहितो अनचाहे रहैए।

परिवारक प्रति पति-पत्नीक बिसवास आ पत्नी-पतिक बिसवास जँ नै पाबि सकल तँ श्रद्धा कागजक पन्नाक शब्द भेल। ओना, से बात जसमतिक मनमे नै उठलैन, जहिना परिवारो-परिवारो आ गामो-घरमे ओहेन अभाव तँ ऐछे जे काज-उदमसँ मतलब-माने कम आ देश-दुनियाँक गप करैसँ बेसी रहल। तेहने जसमति, तँए अदहा अँगना बहारब छोड़ि पति लग बैसैले नुर-सुर करए लगली। रामखेलौनक नजैर पत्नीक काजपर पहिनहि पड़ि गेल छल मुदा जहिना डायरीमे लोक अपन काज दर्ज करा रखऽ चाहै छैथ तहिना अपन काजक प्रस्ताव पत्नीक डायरीमे दर्ज करै दुआरे बाजल छल। पत्नीकेँ बैसैक नुर-सुरी देखि रामखेलौन बात अन्त करैत बाजल- “पहिने आँगन बहारि लिअ, हाथ-पएर धोइ, चुल्हि पजारि चाह बनौने आउ। दुनू गोरे एकठाम बैस पीबो करब आ जाबे चाह पीब ताबे गपो-सड़का करि लेब।”

ओना, पतिक बोलमे झाँससँ बेसी जसमतिकेँ मीठाँसे भेटल, तँए पतिक बोलकेँ अपन बात कहि जसमति अपना दिससँ टारि पतिये दिस घुसका ई कहि देलक जे ‘पुरुख-पातरक बोल अहिना होइ छै... ।’

असलमे जसमतिक मन, ‘दुनू गोरे एकठाम बैस चाह पीअब’ सुनि उधिया गेल छेलैन। आइ धरि एहेन कहियो ने भेल छल। गमैया लोक गमैया चालिक दुनू परानी। परदेसी आकि नव विचारक लोकक बीच एहेन बेवधान नहियेँ अछि। जसमतिक उड़ैत मनकेँ रामखेलौन परेख लेलक। परेख ई लेलक जे आँगन बहारि, जारैन-काठी चुल्हि लग रखि, बरतन-बासन कलपर धोइ, चुल्हि पजारि चाह बना, केतबे-कालमे पुरा लेलक! एहेने पानिक ने पत्नी हेबा चाही। एहेन तँ नै ने जे अपन माथ चाह पीबैले दुखाए आ पत्नीक माथ बनबैसँ।

एके ओछाइनपर बैस रामखेलौन दुनू परानी चाहो पीबए लगल आ अपन खेत अधारित गपो शुरू केलक। एक तँ खेतीक पहिल प्रकरण समाप्तिक खुशी तैपर सौंझका चाहक चुहचुही, संग-संग एक

ओछाइनपर पत्नीकेँ बैसल पाबि मुस्कियाइत रामखेलौन बाजल- "खेत ते ढुढुर तैयार भऽ गेल, आब बीआ दइते लहलहा उठत।"

हूँह-कारी भरैत जसमति बजली- "अइमे कोन काल खाएत।"

पत्नीक सह पाबि रामखेलौन बाजल-

"रोपब कथीक बीआ, से तँ विचारि लेब किने?"

पतिक प्रश्न सुनि जसमतिक मन फेर तेते उधिया गेलैन जे थाहे ने रहलैन। जहिना मैट्रिक पास केलाक पछाइत विद्यार्थी एम.बी.बी.एस; इंजीनियरिंग आकि एम.ए. इत्यादि उच्च कोटिक रिजल्ट पौनिहारकेँ उधियाइत अपना बरबैर बुझैत, जे नेनमैत भेल, तहिना जसमतिकेँ सेहो भेल। एके सुरे दस रंगक फलोक नाओं, दस रंगक तरकारियोक नाओं आ दस रंगक अन्नोक नाओं गना देलकैन। ई होशे ने रहलै जे दसे धूरमे की सभ हएत। एहनो चीजक नाओं कहलक जेकर आँट-पेट दसो धूरसँ बेसीए होइ छइ। बेसीए नै होइ छै जे एहनो होइ छै जे अपना लग दोसराक बासो ने हुअ दइ छै...।

दुनू परानी रामखेलौन जिनगीक लीला करैसँ पहिनहि हेरा गेल। माटिक हेरेलहा, पानिक डुमलाहा, बुधिक भोतियेलहा केतए आड़ा लगत तेकर कोनो ठेकान रहै छइ। दुनूक बीच गुमा-गुमी पसैर गेल। दुनूक मन चुल्हिक खोंरना जकाँ दुनूकेँ खोरियबै जे 'झगड़ा ने दन, मुहाँ-मुहीं किए बन्न' मुदा काज मानत हवा-विहाड़ि। जाबे मास-मौसमकेँ ठेकना खेतमे बीआ नै देब, ताबे उपजा केना हएत। दुनू परानीक बीच किछुकाल गुमा-गुमी रहला पछाइत रामखेलौन बाजल-

"बैसलौं विचार विनिमय करैले, भऽ गेल गुमा-गुमी, तखन आगू की करब?"

हेराएल-भोथियाएल जसमति ठकमुड़ा गेली। ठकमुड़ा ई गेली जे अखन तक जे कोनो नव काज करै छेलौं से गामवाली जेठकी बहिनसँ

पुछि लइ छेलौं, दुनू बहिनक सासुर एके गाम, तैठाम ई तेहेन बान्ह बान्हि देलैन जे ओहो पुछब बन्न भऽ गेल। बान्ह ई जे गामक बेसी लोक ठके अछि, कोनो बातकेँ तेना कऽ बुझा देत जे नीकक बदला अधले भऽ जाएत। ओना, ईहो अछि जे किछु लोक जानियोँ कऽ एहेन विचार दोस्तियारैयोमे दैत जे तमाकुलो गाछ मड़ुए जकाँ चौकियाएल जाइए। मुदा से नहि, अधिक लोक ओहन छैथ जिनका समुचित बोध नै छैन, तँए कि ओ दोखी नै भेला? भेला। मुदा ठकक दोख लगाएब अनुचित, हुनका ऊपर ई दोख भेल जे बिनु बुझलो काजक विचार, बुझिनिहार जकाँ दऽ दइ छैथ। ई बुधिक दोख भेल। दोख ई भेल जे हुनका अपन जनकारीक जानकारी भरि देब अछि। अनेको रंगक जानकारी लोक कर्मभूमिमे पबैए। तैठाम ओही नजैरसँ ने देखए पड़त जे के अपन बुधिबलसँ हथियार हथिया रणभूमिमे केते दूर धरि पहुँचल छैथ। ई तँ नहि, जे कियो हथियार उठा जीवन संघर्ष करै छैथ तँ कियो शब्दवाण अकासमे फेकै छैथ...।

अपनाकेँ अनाड़ी बुझि जसमति बजली-

“भानसो-भातक समय भेल जाइए, भरि राति गपे-सप्प करब तखन भानस करखन हएत, करखन खाएब, करखन सुतब।”

पत्नीक बात रामखेलौन बुझि गेल। बुझि एना गेल जे कोनो विचार बहिनसँ विचारि करै छल। तैठाम रतुका काजक बहाना बना बहिनसँ पुछैक गर देखलक...।

बाजल-

“अपन गामवाली जेठकी बहिनसँ विचारब अधला नै भेल मुदा ओइसँ पहिने बुझए पड़त जे ने सभ गामक खेत एक रंग अछि आ ने माटि एक रंग अछि आ ने उपजावाड़ी।”

एक तँ ओहिना जसमतिक मन वौआइत जे बालो-बोध अपन

काजक जश चाहैए, तैठाम तँ सहजे दुनू परानी चेष्टगर छी, तखन जे एहेन हूसल काज भऽ जाए जे काजक जश हुअ आकि अजश मुदा पेटमे लात तँ लगबे करत। जखने पेट लतिऔल जाएत तखने जिनगीक रथ केते दिन पथ पकैड़ पथिककेँ लऽ चलत...।

बजली- “बीचमे की कहि देलिऐ जे ने सभ गाम एकरंग अछि आ ने खेती-वाड़ी?”

पत्नीक बात रामखेलौन बुझि गेल जे कतिया कऽ कतरए चाहै छैथ। मुदा लगले मनमे उठि गेलै जे अपन आकि अपन परिवारकेँ समेट चलब तँ अपने काज भेल किने। किए ने वेचारीकेँ दू गामक दूरी बुझा दिऐन। मुदा ऐगला काज क समय भऽ गेल अछि, जँ जिनगीक कथा-पिहानी शुरू करब तँ रातिये ससैर जाएत। जखने समय ससरत तखने अपन बोझ माथपर चढ़बैत जाएत, तँए नीक हएत जे अखन गप-सप्पकेँ समय लैत विराम दऽ दिऐ आ भानस करै दिस ठेल दिऐन...।

बाजल-

“ने घर केतौ पड़ाएल जाइए, आ ने दुनू परानी केतौ पड़ाएल जाइ छी, तखन एते धड़फड़ेने कोनो गप हएत। ताबे हमहूँ नजैर खिरा गाम दिस देखै छिऐ आ अहूँ देखब। जखन खा-पी, निचेन भऽ ओछाइनपर आएब तखन ऐगला गप-सप्प हेतइ।”

जान छुटैत देखि जसमति पाल-पाल कऽ भानस करए विदा भेली। असकरे रामखेलौन दू गामक दूरीक विचार करए लगल। कोसे भरि हटि रूद्रपुरो अछि आ रामपुरो। मुदा दुनूमे केते दूरी अछि। ओना, दुनू दू परगने नै जिलो रहने लगियो-डण्टाक दूरी अछि मुदा से नहि, पारिवारिक भोजन-साजनक बात अछि, एक गाममे कुरथी दालि प्रमुख अछि जे भोजो-काजमे तेबखाक संग चलैए आ दोसर गामे बेठेकान अछि, जैठाम कोनो दालिक प्रमुखता छइहे नहि। तेकर पाछू दुनूक धरतीक बनाबट

अछि। जइ गाममे कुरथीक प्रमुखता अछि तइ गाममे उचरस जमीन बेसी अछि। तँए तेबखा-कुरथीक उपज बेसी अछि। ओना, ओहन खेतमे गहुमो आ आनो दलिहनक नीक खेती हएत मुदा कृत्रिम पानिक जोगार नै तइसँ लोक कुरथीए-तेबखा उपजबैए। मुदा दोसर गाम तेहेन चापी अछि, जैठाम दलिहनक खेती होइते ने अछि, तँए जिनका जेते ओकाइत से तेहेन दालि अपनो खाइ छैथ आ भोजो-काजमे रन्है छैथ।

..ओना, दुनू गामक धरतियोक सतह अलग-अलग अछि। एक गाममे पचास फीट नीचाँ पानिक लेअर अछि तँ दोसर गाममे अढ़ाइ-तीन साए फीट नीचाँ पानिक लेअर अछि। जेहेन माटि-पानिक मीलान रहत तेहने ने उपजो हएत। तेतबे किए, किछु जगह एहनो होइत जे बालु पबिते पानिक आगमन भऽ जाइए आ किछु जगह एहनो अछि जे बालु रहितो पानि बिलाएल अछि। माटियो की एके रंग अछि, केतौ नीक उपजाउ अछि तँ केतौ ओइसँ दब आ केतौ एहनो अछि जे साफे उपजाउ नै अछि। उपजाउओ की एके रंग अछि, रंग-रंगक अछि। माटि रहितो कोनो खास अन्नो, तीमनो-तरकारी आ फलो-फलहरी खास-खास माटिक खास प्रेमी अछि आ दोसरकेँ तेना नै पकड़ए दिअ चाहैत अछि। माटि-पानिक विचार करैत-करैत रामखेलौन ओहेन सघन वनमे भोतिया गेल जेतए चारूकात अन्हारे-अन्हार बुझि पड़ैत।

जहिना पानि चढ़ल लोहाक औजार काजमे रत-रत करैत आरो पानिक सान चढ़ा लइए आ माटिक परता पाबि भोंथ भऽ जाइए, तहिना जसमतियोक बेवहारिक काज मे पानि चढ़ि रत-रत करै छल, मुदा मनक विचारमे भोथिआइते छलि। ताड़क गाछ जकाँ बिनु-डारि पातक गाछपर चढ़ब जेहने उकड़ू होइ छै, तेहने डारि-पातबला गाछपर चढ़ब असान सेहो होइ छै, मुदा छी तँ दुनू गाछे। भोथियाइत-भोथियाइत रामखेलौनक मनमे उठल, ने खेतीक एकेटा रस्ता अछि आ ने कोनो काजक, तखन अनेरे किए मनकेँ भरियौने छी। दू गामक बात अछि, एक तँ ओहुना

कहल जाइ छै, 'चारि कोसपर पानी बदले आठ कोसपर वाणी।' जखने दू गाम भेल तखने बहुत किछु एकरंगाहो हएत बहुत किछु अलगो हएत। दू गामे किए, गामोमे दू जातिक बीच बहुत रंगक दूरियो अछि, बहुत मिलल़ो अछि।

सौंझका नअ बजिया घड़ी-घण्ट ठकुरवाड़ीमे बजबो ने कएल तइसँ पहिनहि जसमति भानस कऽ, थारी-लोटा अखारि, चिनमारपर रखि, ओसारक पीढ़िया ठीक करैत लोटामे पानि नेने पति लग पहुँच बजली-

"भरि दिनक कोदरवाहिक थाकल-ठेहियाएल छी, चलू पहिने खा लिअ। एक हाथ तेलसँ पएरो ससारि देब।"

पत्नीक आगत-भागत देखि रामखेलौनक मन उड़िया गेल। उड़ियाइत मनमे उठल, कहू जे आन दिन तगेदा करए पड़ै छल जे भानस भेल। मुदा आइ केमहर चान उगल.?

चानो तँ चान छी कखनो चानी देत कखनो चाइन तोड़त। कोनो बात केतौ प्रेमोसँ बाजल जाइ छै आ केतौ दुष्प्रेमोसँ बाजल जाइ छइ। से नहि, रामखेलौन प्रेमसँ बाजल-

"आन दिन कहै छेलौं जे कलेपर पएरो धोइ लेब आ लोटामे पानियों लऽ लेब, आइ इजोरियाक चान उगल कि अनहरियाक।"

आन दिन जकाँ जसमतियोकेँ मन नहि, जेना पतिक प्रति प्रेमक नव इतिहास लिखैत हुअए तहिना मनो मतंग...।

बजली-

"इजोरियाक चान हुअए आकि अन्हरियाक चान, हमरा ओइसँ कोन काज अछि, चान-सुरूज तँ दुनू गोरे छीहे। जखन घरेमे चान-सुरूज अछि तखन केतए इजोत-अन्हार, अकास-पतालमे तकए जाएब।"

सिनेहासिक्त पत्नीक बात सुनि रामखेलौन बामा नजैर पत्नीक दहिना नजैरपर दैत बाजल- "की सभ खेनाइ बनेलौं?"

खेनाइ सुनि जसमति ठमैक गेली। ठमैक ई गेली जे जहिना कुशियारेसँ गुड़, चीनी, मिसरी बनि आनो-आनो वस्तुक संग पकैड़ ओकरो मीठ करि मिठाइ बना दइ छै, मुदा मिसरी आ चीनीक आगू गुड़ो आ कुशियारोक मोल केते अछि, तहिना खाइक वस्तुक विन्यासोकेँ तँ अछिए। जेना गहुमेक रोटियो बनैए, सतुओ बनैए पुड़ियो बनैए आ पकवानो बनैए मुदा पुड़ी-पकवानक आगू सतुओ आ रोटियोक वएह मोल छै? ओकरेटा किए कहबै, तीमनो-तरकारीक तँ वएह गति अछि। जे भँट्टा आकि अल्लू आकि आने कोनोकेँ पका कऽ सन्नो बनौल जाइए, रसगर तरकारियो बनैए आ तेलमे तड़ि तड़ुओ बनैए मुदा तँए कि ओकरा एके कहबै? जहिना मिसरी आगू गुड़, तड़ुआक आगू सन्ना, तहिना ने पकवानक आगू रोटियो अछि...।

लगले मन आगू घुसैक रामखेलौनकेँ अपनेपर पड़ि गेल। अपनापर पड़िते नजैर उठलै। नजैर उठिते, चोन्हियाएल आँखिमे जहिना बिजलोका छिटकै छै तहिना छिटकल। छिटैकते देखलक जे कियो एहनो नारी छैथ जे पतिक पावन व्रत कैँ पूर्ति करेबा लेल अपनो व्रती बनि पतिव्रता छैथ, तँ कियो एहनो तँ ऐछे जे अपन जिनगीक अदहा उमेर पतिक प्रेम-संग रहि, बाल-बच्चा-परिवारक सेवा करैत मुदा अपन मनीषा रहितो आगूओ जिनगीमे ओहने कहाँ रहि पबैए। आ एहनो तँ होइत अछि जे ओकरा धक्का मारि पतीत बना देल जाइ छइ। जेकरा लोक जिनगीक हार कबुल करैत दिन कटिते अछि। ओना, जहिना पुरुखकेँ पतित हेबामे कियो बाधक नै बनैत तहिना नारियोक अछि। अपन मनक मरजी सभकेँ अपन-अपन अछि। चाहे नीक वृत्ति पकैड़ स्वर्ग जाऊ आ अधला वृत्ति पकैड़ नर्क जाऊ, दुनू तँ देवलोकेक बास छी। धर्मराजेक राज छी...।

हाथमे पानि भरल लोटा जखन जसमतिकेँ भारी लगए लगलैन तखन भक्क खुजलैन। भक्क खुजिते मोन पड़लैन जे पतिक प्रश्न तँ भोज्य पदार्थक छल। विरहाएल-वौआएल जसमति हृदय खोलि बजली-

"गहुमक रोटी आ भँट्टाक चोखा बनेलौं?"

बजैबेर जसमति बाजि गेली मुदा लगले मन चनैक गेलैन। चनैक ई गेलैन जे जे पुरुख भरि दिन कोदारि भँजलैन आ हुनका गहुमक रोटी आ भँट्टाक चोखाक खेनाइ केहेन भेल? प्रश्न उठिते जसमतिक मन ओतए जा ठहैर गेलैन जे घरमे जएह रहत तेकरे बना कऽ ने देबैन। मुदा तैयो पतिक ओ सिनेह जैठाम पुरुखक शक्तिक काज पड़ै छै ओ केना बनि पौत। जेना परिवारक हार कबुल करैत जसमति हारल बटोही जकाँ नेप झाड़ैत बजली-

"काल्हियेसँ घरमे आँटा सधल अछि अहाँ बोनाएले रहै छी, मिलपर जाइके छुटिये ने भेल, हाँइ-हाँइके चारि घानी गहुम उला-पीस कऽ रोटी बनेलौं।"

भानसक अपन बढ़ोत्तरी काज पतिक सोझमे जसमति रखि देलैन। पत्नीक बात सुनि रामखेलौन पाछू दिस उनैट तकलक तँ बुझि पड़लै जे अपनो जे काज दुआर-दरबज्जाक करै छेलौं सेहो आ अपनो काज ओ जे करै छेली तहूमे तीन-तेकठ भेल। गहुम-उला कऽ पीसबपर नजैर ऐबते रामखेलौनक मनमे खुशी उपकल। खुशी ई उपकल जे जहिना राहड़िक अरबा आ ओकरे उलौला पछाइत जे दालिक सुआदमे बढ़ोत्तरी होइ छै, तहिना ने उलबा गहुम आ अरबा गहुमक रोटीक सुआदमे सेहो हेतइ। पत्नीक विचारसँ सहमति जतबैत रामखेलौन बाजल-

"बुझलौं बड़ काजुल छी, गहुमक रोटी अमृत छी अमृत, एकरा के दूसत जे अहाँ अधला भोजी छी।"

पतिक हरखित मन देखि जसमति बजली-

"अपना ते एको डाँट भँट्टाक गाछ नहियेँ अछि हाटपर पुरना गाछक भँट्टा सस्ता छेलै वएह एक सेर अनने छेलौं, ओकरे सबटा केँ चोखा बनौने छी।"

'चोखा' सुनि रामखेलौनक मन अखन धरि खसले जेना छेलै तहिना अदहा-अदही खुशी-दुखी पतिकेँ देखि जसमति पोचारा दैत बजली-

"अपनो मन रहए जे, भँट्टाकेँ पहिने मोटगरे-मोटगरे तड़ि लेब आ ओकरे झोड़गर तीमन करितौं। मुदा ने घरमे तेल छेलए आ ने कोनो मसल्ला। नूनटा छेलए, दाबापर सँ चारिटा मिरचाइ तोड़ि अनलौं आ चोखा बना लेलौं, तरकारीक कोनो रस्ता नै सुझल केना करितौं।"

जसमतिक बात सुनि रामखेलौन मगन भऽ गेल। जहिना सत् बात बजला पछाइत, निरोग फल पेला पछाइत आ दुनियाँक रस-सभसक परिचय भेलापर होइत। बाजल-

"भगवानकेँ के कहए जे भगवानक बापो नै तिरियाक सोभावकेँ पकैड़ सकैए। हम तँ हमहीं छी... ।"

मुस्की दैत पुनः,

"लाउ लोटा।"

लोटा दइसँ पहिने जसमति इजोतक गरे पानिकेँ देखलक, देखैक कारण माछी-मच्छर पड़ब छेलै। एकटा खढ़क महिक्का टुकड़ी जकाँ ऊपरमे दहलाइत रहै तेकरा कनछिया कऽ नीचाँ फेक पतिक हाथमे लोटा पकड़बैत जेना देब-लेबक विचार दुनूक मनमे उठलै। जसमतिक मनमे उठल, अहिना पहनुमा निवेदन पतिकेँ सभ दिन करिऐन। पतिक आँखिपर आँखि घुसकौलैन। तहिना रामखेलौनक मनमे उठैत, यएह छी परिवार आ अही परिवारमे रहब भेल हमर जिनगी। मुदा लगले मोन पत्नीक देल समैपर उनैट गेलइ। हाँइ-हाँइ कऽ जसमतिक हाथसँ लोटा पकैड़ मुँह-कान धोइले आगू-आगू अचोना दिस बढ़ल। मुँह-हाथ धोला पछाइत रामखेलौनकेँ जसमति कहलकैन- "लाउ लोटा।"

पत्नीक बात सुनि रामखेलौन ठमैक गेल। मोन पड़ि गेलै सासुर।

केना बड़का भाइक लोटा छोटका भाए हाथमे लऽ, दिशा-मैदान दिस जाइतोकाल आ ऐबतोकाल हँसैत खुशीसँ लेने अबैत-जाइत रहैए...। मनमे तरंग उठए लगलै। पैखानासँ पहिने आ पछातिक एके परिस्थिति अछि। अपन गंदगी दोसराक सिर मढ़ब की नै भेल? धड़फड़ा कऽ रामखेलौन ओसारपर बैस खेनाइ खए लगल। अदहा सेर भँट्टाक तरकारी, अदहा सेरक सन्नामे की अन्तर भेल। सन्ने अछि तँ की हेतइ, झोरक बदला पानि पीब लेब, कोनो कि आन जकाँ खोंइचा फेकल जाइ छै जे सेहो कमत।

आगूमे बैस जसमति अपन परीक्षा-फल पुछए चाहली। मुदा लगले मनमे उठि गेलैन- ई तँ जिनगीक परीक्षा छी जे कहिया की खाइले भेटत। तखन विन्यास बनबैक परीक्षा तँ दिनानुदिनक छीहे। एक भनसियाक बनौल तरकारी सभ दिन एक रंग नै होइ छइ। मुदा सन्ना बनबैक परीक्षे की, आगिमे पका पानिमे धोइ कऽ सिलौटपर लोढ़ीक जोगारसँ बनेलौं। एतबेमे की कलाकारी भेल जे पुछबैन आ कहता...। तँए पाशा बदलैत जसमति बजली-

“ताबे अहाँ खाउ, बिछान बिछौनाइ छुटले अछि, बिछेने अबै छी।”

कहि जसमति उठि बिछान बिछबए गेली। बिछान समेट जखन बाढ़ैनसँ बाहरए लगली आकि धक-दे मनमे उठलैन, रातिमे बाढ़ैन बर्जित अछि। मुदा उपए? हँ उपए अछि, बिछानकेँ बिछा दुनू कातक कोण पकैड़ दू-चारि झाड़ैन देलासँ अदहा बाढ़ैनक काज भऽ जाइ छइ। मुदा बिछान बिछैबते-काल मनमे उठलैन- खेबाकाल पुछलयैन कहाँ जे खाइ-जोकर भेल किने? एक तँ दुनियाँमे के केकरा पुछैए, मुदा हमरा दुनियासँ कोन काज। हमर तँ दुनियाँ अपन घरे छी...।

बिछान तँ बिछा नेने छेली मुदा धड़फड़ेने सिरमा बिच्चेमे छुटि

गेलैन। पति लग आबि जसमति कानक सोझे मुँह बना बजली-

"पुरुख जाबे परसन नै लइ छैथ, ताबे मन झुड़झुड़ाइते रहै छैन, भरिसक खेबा जोग नै बनल की?"

पत्नीक बातकेँ अनसुनी करैत रामखेलौन खा कऽ उठि, हाथ धोइ कऽ ओछाइनपर पहुँच गेल।

ओछाइनपर पतिकेँ पहुँचल देखि जसमतिक देहक पानि आरो तेज भऽ गेलैन। तेकर कारण अपन खेतीक विचार करब छेलैन। खेतिहर तँ वएह ने भेला जे खेतक प्रति समरपित छैथ, अपना हाथ-पैरसँ कर्म कऽ फसिल लगबैथ, सेवा करैक माने फसिलक जन्मसँ मृत्यु धरिक बीचक किरियाक लूरि भेल। दुनू योगक बीच खेतिहर भेला। यएह ने भेल जिनगी आ वएह खेत ने भेल जीवनदात्री माता। जेते देबैन तइसँ बेसी देती। मुदा निमूधन रहने हुनका ई दोखो लगाएब केतए धरि उचित अछि, जे हुनके किरदानीसँ नाशो भऽ गेल। खाएर-जे-से। अपन जिनगीक विचार जँ अपन परिवारक बीच नै करब तँ समस्या ओहेन भऽ जाइ छै जेहेन घोड़ागाड़ीमे इंजन लगौने हएत...।

जसमतिक हाथ-पएर घरक काज सम्हारैमे व्यस्त रहैन आ मन दस धूर अपन खेतमे पतिक संग बैस भविसक चान-सुरूज देखैन। थारी-लोटा धोइले जसमतिकेँ रहबे करैन तइ बिच्चेमे मन उमैक गेलैन। उमैक ई गेलैन जे हो-न-हो अपने जाबे बिछानपर जाएब तइसँ पहिनहि ने कहीं हुनका नीनियाँ देवी आबि कऽ दाबि दन्हि, तखन तँ सभ पानिमे चलि जाएत। बिना आँइठ-काँठ धोनहि, ओसारेपर थारी लोटा छोड़ि, पति लग आबि हियासए लगली जे जागल छैथ आकि सुतल।

ओना, रामखेलौन जगले मुदा अपन जिनगीक हिसाब जोड़ैमे तेते वौड़ा गेल जे आँखिक पीपनी खसल, शरीर निश्तेज भेल पड़ल। जसमतिक उताहुल मन मानि गेलैन जे सुति रहला। सुतब मनमे ऐबते

ठनका जकाँ खसलैन। मुदा ठनको खसैकाल लोक अपन आँखि-कान बन्न कऽ लगोक खसल ठनकासँ अपन आँखि-कान बँचाइए लइए। मुदा जसमतिकेँ से नै भेलैन, पहिने जरैत डिबियाकेँ अढ़ केलैन, जइसँ झल अन्हार भेने आँखि खोलता। जँ नै खोलता तँ बुझब सुतल छैथ। जागलसँ नीन भेर सुतल बीचक हजारो सीढ़ी छै, पहिले सीढ़ीपर सँ जसमति टपि गेली, पति ने पीपनी उठौलकैन आ ने झलअन्हारी एलइ। डिबिया लगसँ कनी आगू घुसैक जसमति हाथपर हाथ देलकैन।

हाथपर हाथ पड़िते रामखेलौन पतिक स्वरमे बाजल-

"थारी-लोटा समेट घरमे रखलौं?"

पतिक बोल सुनि जसमति ठमैक गेली। सुतल छैथ कि जागल, तइ बिच्चेमे तेना लटैक गेली जे ने अक् चलैन ने बक्। एकटा मन कहैन जे कहू ई केहेन भेल जे हुनका हाथपर हम हाथ देलिऐन। सभ दिन ओ दैत रहला, आगूओ देता। मुदा तखन पत्नी आ परिवारी भेने विचारैक अधिकार तँ अछिए। ओहनो तँ लोक ऐछे जे अपनेटा देखैए, जँ एहेन पैदाइस भेल तँ परिवार आगू की बढ़त जे केतए दहला-भँसिया जाएत तेकर ठेकानो रहत? दुनियाँक झाड़ीमे तेना झड़ा जाएब जे ठेकाने ने रहत जे अपना-ले की केलौं आ जेकर जवाबदेही, बाल-बच्चासँ समाज धरि, अपना ऊपर छल तेकरा-ले की केलिऐ...।

पतिक बोल सुनि जसमति बिना अकार-सकार केने उन्टे पएरे थारी-लोटा माँजए विदा भेली। पीपनी खसौने रामखेलौन अपनाकेँ पढ़ैत-जखने बोनिहारक घरमे जन्म भेल, तखने ने दस दुआरी भेलौं? चिड़ै जकाँ जेतए अहरा-चहरा भेटत तेतए जा कऽ ने बास करब। जहियासँ काज करैबला हाथ-पएर भेल तहियेसँ ऐ समाज आ गामक ने एकोटा खेत अछि जइ खेतमे काज नै केने छी आ ने ओहेन किसान छैथ जिनका काजमे सहयोग नै केने छी, आकि अन्न नै खेने छी। तेतबे नहि, गामक

एहेन एकोटा कल नै अछि जेकर पानि नै पीने छी। नै नौत-पिहाने तँ काजक जलखैयो तँ जरूर केनै छी...। जइ धरतीक एते सेवा केलौं, ओ हमरा की देली? ऐठाम आबि रामखेलौन लसैक गेल। लसैक ई गेल जे केलहे बिसैर गेल जे कोन खेतमे कोन जजाति कोन मासमे लगेलौं आ कोन मासमे कटलौं। कटैपर नजैर पड़िते मोन पड़लै, केते जजात तँ जनिजातिये कटै-उसारै छैथ से केना पुरुख बुझत। तँए पत्नीक जिज्ञासा करैत रामखेलौन खोंखी केलक। पति-पत्नीक बीचक खोंखीक माने तँ ओते अछि जेते पति आ पत्नीक संख्या अछि। मुदा से नहि, जसमति बुझलैन जे भरिसक सोर पाड़ि रहल छैथ, तँए ओसारक चौकैठे लगसँ बजली-

"ऐबते तँ छी।"

'ऐबते' सुनि रामखेलौन बाजल-

"कुरथी कोन महिनामे उखाड़ल जाइ छै?"

जसमतियो बिसैर गेली। बिसरबो केना ने करितैथ। गामसँ कुरथीक खेतीए उपैट गेल। बरसाती दलिहन, अधिक बरखा भेने आकि बाढ़िमे डुमने फसिल नष्ट भऽ जाइ छइ। जहिना करहर आकि मखानक पनिपत पकैड़ करहरो उखाड़निहार आ मखानो उखाड़निहारे ने नार पकैड़ उखाड़ि गजुरा फलो खाइए। गजुराएल खेरही आकि बदाम ओते तगतगर होइए जे माटिक ऊपर होइए, सौरखी आ मखान तँ सहजे ओहेन माटिपर होइए जे अथाह पानिमे डुमल रहैए।

बिसरा-बिसरीमे जहिना रामखेलौन तहिना जसमति। बात आकि विचार तँ काजमे सटल चलै छै, काज चलैत रहल, विचार चलैत रहल। काज छुटि गेल आकि बिसैर गेल तँ बातो-विचार हराइये जाइ छइ। दुनू एक दोसरपर नजरियो दैत आ नजैर निच्चो कऽ लैत। नजैर उठा जेना बिसरबकें गलती बुझि डाँटए चाहैत तहिना अपन बिसरब बुझि नजैर

नीचाँ कऽ लैत, रातियो अपना गतिये चलि रहल अछि रामखेलौन आ जसमति बिसरा-बिसरीमे झूलि रहल अछि। मखानेक बीची जकाँ कुरथीक नाँगैर पकैड़ नचबैत जसमति बजली-

"कोन मासमे कुरथी बागु करै छेलिऐ से कहू तँ मोन पड़ि जाएत। कुरथी मौसमी फसिल छी तँए तीन-चारि मासमे हेबे करत। बागुसँ उखाड़ैक समय तीन-चारि मास आगू भेल।"

पत्नीक प्रश्न सुनि रामखेलौन बाजल-

"जाए दियौ कुरथीकेँ, जहिना बाढ़ि-पानि गामसँ ओकरा उपटौलक तहिना ओहो पथरोगिया सभकेँ उपटबैत रहऽ।"

एके चौतालमे जहिना घोड़ा-मिलान होइ छै तहिना दुनूक बीच समझौता भऽ गेल...।

रामखेलौन बाजल- "ऐ समयमे कोन-कोन फसिल लगौल जाएत आ कोन-कोन कटत, से ठेकानपर अछि?"

जेना जसमतिकेँ ठोरेपर रहैन तहिना बजली- "आँखि कि भगवान नै देने छैथ, अपना नहियोँ अछि तैयो तँ अनकर देखिते छिऐ। काल्हि अहूँ टहैल कऽ गाम घुमि लेब आ हमहूँ घुमि लेब।"

पत्नीक विचार सुनि रामखेलौनक मनमे शीतल समीरक सिहकी सिहकल। अनायास हाफी भेलइ। हल्लुक मन होइत देखि नीनियाँ देवीक स्मरण केलक, करिते अपना गोदीमे सुता लेलखिन।

भोरमे नीन टुटिते रामखेलौन ओछाइनेपर सँ हियाबए लगल जे गामक पाहि केना लगाएब। जँ एक भागेसँ दुनू परानी देखब शुरू करब तँ बामी-दहिनीक भाँजमे किछु छुटियो सकैए। तइसँ नीक हएत जे एक भागसँ अपने आ दोसर भागसँ हुनका देखैले कहि दिऐन...।

विचारमे मजगूती देखि सुतले-सुतल रामखेलौन बाजल- "नीन तोड़ू, भोर भेल।"

‘नीन तोड़ू भोर भेल’ सुनि जसमति कड़ैक बजली-

“नीन तँ टुटले अछि, अहाँकेँ की खगल से कहू।”

पत्नीक बोल सुनि रामखेलौन आगू बात कहब छोड़ि मने-मन विचार करए लगल जे एना किए भेल? भोरे-भोर भगवानक नाओं लोक मधुर ध्वनिसँ लैत अछि तैठाम फुटल झालि जकाँ आवाज किए खनखनाएल छैन। मुदा लगले मनमे उठलै जे जहिना कड़ची, संठी आकि कोनो बौस तोड़ैकाल गोटे टन-दे टुटि दू टुकड़ी भऽ जाइए आ गोटे टुटलो पछाइत जोड़ले रहैए, भरिसक तहिना भेल। मन मानि गेलै, बाजल-

“साफसँ नीन तोड़ू, आब उठैबेर भेल अहूँ काज करए जाएब हमहूँ जाएब। काजे छिऐ, जँ डेढ़-वार भेल तँ दिने डेढ़-वार भऽ जाएत। जखने समय डेढ़-वार भेल आकि बातो-विचार डेढ़-वार भऽ जाएत। जइसँ कहीं रौतुका निअरलाहा काजे ने छुटि जाए।”

पतिक गपसँ जसमतिकेँ सुतैकालक बात मोन पड़लैन। मोन पड़लैन ई जे दुनू बेकती एके ओछाइन, एके सिरहौनापर मुड़ी रखि ने विचारने रही तखन जँ ओ मोन पाड़ए चाहलैन तँ एना किए दुतकारलिऐन। भिनसुरका समय तँ जिनगीक प्रभात बेला छी, जखने अपन ठर-ठेकान छोड़ब तखने हवा-विहाड़ि सुगन्ध लऽ कऽ उड़ि जाएत। जइसँ बिनु गंधक फूल जकाँ ने भऽ जाएब। जखन ओहन भऽ जाएब तखन सुगन्धित फूल कहेबा-जोकर रहब? किछु छी तँ पति-पत्नीक बीचक विचार छी। ओना, पति-पत्नीक सम्बन्धक जे रूप पकड़ने अछि, तइसँ भिन्न, चाहे दोसतियारे हुअ आकि पति-पत्नीक बिआह, पहिल प्रश्न तँ यएह ने होइत जे नमहर जिनगीक बीच मिलानसँ डेग-मे-डेग मिला चलब केना? क्षणिक दोस्तियो होइ छै आ केते देशमे बिआहो ओहेन होइ छै जे भोर घटकैती दुपहर बिआह आ साँझमे छोड़ा-छोड़ी कऽ दुनू पुरबते कुमार बनि जाइए। मुदा तेहल्ला–तेहल्लीक काजकेँ नजैरसँ कनी घुसका

अपन दुनू बेकतीक बीच नजैर राखू, पहिलुका हिसाबे पाँच-सात बर्खक अवस्थासँ मरै धरिक सम्बन्धक व्रत छी बिआह। तैठाम जँ साए बर्खक जिनगी मानब तँ नबे-पनचानबे बरख भेल। नहि जँ अस्सी मानब तँ सत्तैर-पचहत्तैर बरख भेल। सेहो नहि जँ सरकारी मानब तँ साठि बर्खक भेल। तैयो तँ पचास-पचपन बरख भेबे कएल। मुदा समय एहेन दुरकाल भऽ गेल जे...। विद्योपति कानि-कानि कहलैन- 'जनम अवध हम रूप निहारल, नयन न तिरपित भेल।'

किछुकाल गुमा-गुमीमे समय घुसैक गेल। मुदा घुसकल कहाँ, जहिना रामखेलौनक मन पति-पत्नीक प्रेमक खेत तामए लगल तहिना जसमति अपन बोधक खेत...।

सिनेहक पान करैत रामखेलौन बाजल-

"भकुआएल छी, नीन तोड़ू। रातियोमे तँ तेहेन जगरना नहियेँ भेल जे आँखि करूआएत।"

जहिना कोढ़िया बरद मारिक डरसँ आड़िक कातमे जा कऽ देह पटबैत जे मारियो लागत तँ अदहा आड़ियोमे लगतै, तहिना आड़िक गर देखि जसमति बिहुसैत बजली-

"मेद-मेदीनक राति जकाँ राति बीतल तखन किए करूआएले आकि भकुआएले रहब। हम कि रौतुका निअरलाहा बात बिसैर गेलौं।"

लत्तीक मुड़ी जकाँ सुढ़िआएल जसमतिक विचारमे विचारक सोंगर लगबैत रामखेलौन बाजल-

"सौंसे गाम घुमि कऽ दुनू परानीकेँ देखै-परखैक अछि। तँए बामा भागक भाँज अहाँक रहल आ दहिना भागक भाँज अपन रहल।"

बामा-दहिनाक कारण जसमतिकेँ बुझल नहि, तँए पूरक प्रश्न उठबैत बजली- "जँ दुनू गोरे संग मिलि देखि-देखि मुँह-मिलानी करैत चलब तँ बेसी नीक हएत किने?"

एक संग रामखेलौनक सोझहामे दूटा प्रश्न उठि गेल। पहिल जे चलैकाल जँ नजैर दुनू कात चलाएब तँ रस्ताक घुचीमे पएर पड़ने आकि ठेंसे लगने खसैयोक डर आ ठोकरोक कारण तँ अछिए। दोसर ईहो तँ नीके अछि जे दुनू बेकती देखि-देखि मुँह मिलानी करैत चलब। जइसँ कोनो ओझरी पछुआएल नै रहत।

तर्क-वितर्क करैत रामखेलौन ओछाइनसँ उठैत बाजल-

“बेसी ओझरी-सोझरीमे कथीले पड़ब, अपना नजरिये जे देखैक मन हुअए से देखब, जे नै देखैक मन हुअए तेकरा छोड़ि देबइ।”

सिरमापर सँ मुड़ी उठबैत मुँह-मिलानी करैत जसमति बजली-

“हमर माए-बाप अहाँकेँ पुरुख जानि हाथ पकड़ौने रहैथ, से की हम बिसैर गेलौं। पति-पत्नीक बीच जिनगीक सम्बन्ध छी, तँए सुतलोमे आ जगलोमे अहाँक संग छोड़ि केतए जाएब, जँ केतौ अपना मने असगरे चलियो जाएब तेकर रक्षाक भार अहाँ ऊपर थोड़े रहत।”

जहिना राति-दिनक संगम स्थल भोर-भिनसर छी तहिना रामखेलौन, दुनू परानीक बीच संगम घाट बनबैत बाजल-

“अपने दुनू बेकती ने नट-नटीन आ जट-जटीन भेलिऐ, दुनियाँक रंग-मंचपर दुनू मिलि नचबै, लोक देखि-देखि हँसतै।”

बजैकाल तँ रामखेलौन बाजि गेल मुदा लगले मनमे भेलै जे हँसियो तँ नीकोक होइ छै आ अधलोक, से केना बुझब। सौनक मेघ जकाँ रामखेलौनक मन उमड़ए-घुमड़ए लगल। उमड़ए-घुमड़ए ई लगल जे हँसी तँ ओहन महाभारतक पात्र जकाँ अछि जे मौगी छी आकि मरद से कियो परेखनिहारे नहि। नीकोमे खुशी रूपमे हँसब होइ छै, आ अधलो देखि तँ लोक हँसिते अछि। तखन? हँ तखन ई जे खुशीक जे हँसी होइ छै, ओ नीक भेल। मुदा जेतए लोक अनका हँसीक पात्र बनबैए तैठाम की अपन मन नै हँसै छै? हँसै छइ। मुदा जहिना भिनसुरके सुरूज देखि ने कियो

दिन भरिक अनुमान करैए तहिना हँसबकैं चौपेत रामखेलौन मनमे रखि बाजल-

"अनेरे दुनू गोरे संगे गाम घुमब। जहिना केरा खेती-ले भादो भदबा होइ छै तहिना पुरुख-पुरुखक गपक बीच अहूँ भदवा भऽ जाएब, तँए नीक हएत जे अहाँ घरे-अँगनाक काज सम्हारू जइसँ तुकपर खेनाइयो-जलखै हएत आ काजोक तुक मिलत।"

नीन टुटिते बिछानपर सँ उठब आ टुटल नीने बिछानपर पड़ल रहब, दुनू दू भेल। बिछान छोड़ि लगले उठि जाएब पुरुखपना भेल आ पड़ल रहब रोगपना वा कोढ़िपना भेल...। ई बात जसमतिकैं मनमे उठिते बिछानसँ नीचाँ उतरैत बजली- "जाउ अहूँ जेतए जाएब से जाउ, अनेरे सभटा काज जकथक भेल अछि।"

पनरह अखार बीति गेल मुदा बरखा नै भेने अजोध जेठ जकाँ समैयक रूपरेखा। केतौ-केतौ कोनो-कोनो वस्तु रोपलो जाइत आ सुखल-अधसुखू सजमैन-कदीमाक लत्तीकैं लोक उनटा-उनटा पसाहियो लगबैत। चैतक रोपल आमक गाछ केतौ-केतौ कलशो देने केतौ-केतौ सुखियो गेल। धानोक तहिना, बोरिंग-नहरबला बाधक रोपैन भऽ गेल, बिनु बोरिंग-नहरबलाक धानक बीहैन काटि-काटि गाए-महींसक पूजा होइत, इत्यादि-इत्यादि...।

गाम घुमला पछाइत रामखेलौन निर्णये नै कऽ सकल जे की देखलौं। मन हुमड़लै- एना किए भेल? जिनगी भरि जे गाममे रहि देखबो केलौं, काजो केलौं, रोपबो केलौं आ कटबो केलौं, मुदा ई नै बुझि पेलौं जे अखन खेतमे कथी लगौल जाए! एना किए भेल? करैक लूरि तँ सभ रंगक अछि मुदा बुझैक लूरि किए ने भेल?

रामखेलौन पाछू उनैट तकलक तँ बुझि पड़लै जे खेत-बोनिहार रहने एकर खगते ने भेल। जइसँ किसानक बीच तँ रहल मुदा बोनिहारक

बीचसँ ससैर गेल। तखन?

मने-मन रामखेलौनक बीच घमर्थन उठल। घमर्थन ई उठल जे एक तँ सभ किसानकेँ सभ रंगक- ऊँचगर, मध्यम आ नीचरस खेत नै छैन, जइसँ कटा-खोंटा कऽ एकभग्गु भऽ गेल छैथ, दोसर ईहो तँ ऐछे जे बखारी-बखारी धान-गहुम उपजेनिहार किसान, खेत रहितो तीमनो-तरकारी आ फलो-फलहरी हाटे-बजारसँ कीनि-कीनि खाइ छैथ.!

जेते रामखेलौन आगू बढ़ैत तेते माही भेल घाट जकाँ मन इछाइन-बिसाइन हुअ लगलै। मुदा लगले मनमे उठलै- 'मन चंगा कठौती गंगा।' अनेरे मनकेँ वौअबै छी। एते तरहक हवा-विहाड़ि मनुखक बीच उठल मुदा विमले भायटा एहेन छैथ जे चौथापनोमे झूठ बजैसँ परहेज केने छैथ। अनेरे केतए जाएब, केकरासँ पुछब।

रामखेलौनकेँ देखिते विमल भाय बजला- "पहिने तमाकुल खुआबह रामखेलौन, पछाइत कुशलवर्ता हेतइ।"

रामखेलौनकेँ फबल, बाजल-

"भाय, बूढ़ भेने अहूँ भँसिया जाइ छी, पहिने तमाकुल चुनौल जाइ छै तेकर पछाइत ने मुँहमे पड़ै छइ। जाबे तमाकुल चुनाएब ताबे तँ गामसँ लऽ कऽ अमेरिका तकक गप कऽ लेब।"

रामखेलौनक खनहन मन आँकि विमल भाय बुझि गेला जे पहिने किछु गप करए चाहैए...।

बजला- "की हाल-चाल गाम-घरक अछि?"

गाम-घर सुनि रामखेलौन कैरमवोर्डक गोटी जकाँ ठिकिया कऽ बाजल- "भाय की रहत, दस धूर चौमास वाड़ी भेल, तामि-कोरि ढुढुर बना सेरियौने छी...।"

ऐगला बात रामखेलौनक पेटेमे रहल आकि बिच्चेमे विमल भाय टोकि देलखिन- "अपन की विचार छह?"

विमल भाइक बात सुनि रामखेलौन टीक कुरियाबए लगल, जेना किछु मनमे होइ मुदा निकैल नै पबैत रहै, तहिना। विमल भाय बुझि गेला जे किछु मनमे छै जेकरा निकालैत संकोच भऽ रहल छइ। दहलबैत बजला-

“मन छह आकि बिसैर गेलह?”

बिसरब सुनि रामखेलौन बाजल-

“कोन गप भाय साहैब, कनी आगूसँ कहियौ ने।”

“तेसर साल जे माघक शीतलहरीमे बारह बजे बोरिंगक पानिक नम्बर बोरिंगबला देलक आ दुनू गोरे चोरबत्ती हाथे खेत पटेलौं की छोड़ि देलिऐ... ।”

विमल भाइक बात सुनि जेना रामखेलौनक काज मनकेँ हुमचलक। हुमचाइते जेना पुरुखपना जगलै। बाजल-

“पुरुख बनि जखन काज करए डेग उठेबै तखन माघक शीतलहरी हौउ आकि हथियाक झटकी, बिना केने घुमि जाएब।”

रामखेलौनक जगैत पुरुखत्वकेँ आँकि विमल भाय अपना दिस अनलैन। बजला-

“वाड़ी-झाड़ीक की हाल-चाल छह?”

अपन गोटी ससारैत रामखेलौन बाजल- “भाय साहैब, नौउए-कौउए दस धूर चौमास वाड़ी नसीब भेल, तइमे कथीक खेती करब से बुझिये ने पाबि रहलौं हेन? अपना मनमे बहु दिनसँ सिहिन्ता लगल अछि जे एक बीट केरा आ पाँचटा आमक गाछ होइतए।”

रामखेलौनक मनक मुरादक समय नहि। भदवारिमे केराक खेती करब जहिना वर्जित अछि, तहिना आमोक अछि। आमक उपयुक्त समय चैत होइत, जे गाछ लगिते कलैश जाइत। अखाढ़ छी, पानि पछुआएल

अछि तँए ने, नहि तँ आद्रा अन्तिमपर अछि...।

लगले मनमे भेलैन जे सभ बात किए ने कहि दिऐ। बजला-

“रामखेलौन, दस गाछ बैगन लगा लिअ, घेरा-सजमैन लगबैले मचान बनबए पड़त। केरा-आम अखन नै लगाउ। आसीनमे जखन दुर्गा महरानी औती तखन दसो दुआरि खुजत। अन-तीमन, फल-फलहरी, सभ किछु लगबैक समय औत। ओहो लगा लेब।”

विमल भाइक बात सुनि रामखेलौन बाजल- “गेल माघ उनतीस दिन बाँचल, भाय एतेटा जिनगी सवुरे केलौं तीन मास कोन पहाड़ भेल। जे कहलौं सएह करब।”



तिथि: 19 सितम्बर 2014, शब्द संख्या: 6110

घरवास

चारि बजे भोरेसँ दुनू भैंयों 'नवीन आ किशोर' आ दुनू दियादनियों 'मणिका आ प्रेमा' आ माइयो 'कमला काकी' ओछाइन छोड़ि-छोड़ि उठि चारू दिसक काजमे जुटि गेल। चारू दिस काज, अँगना-घर बाहरैसँ लऽ कऽ फूल तोड़ब, ठाँउ करब, माल-जालकेँ घरसँ बाहर करब इत्यादि इत्यादि। तैसंग ऐगला काज करैले सेहो अपनाकेँ तैयार केने...।

ओछाइनपर पड़ल सुवल काका मने-मन सोचैथ जे आइ केमहर सुरूज उगला जे सभ किछु बदलल-बदलल बुझि पड़ैए। आन दिन अपने छह बजेमे ओछाइन छोड़ै छेलौं तँ देखै छेलौं जे सभ ओछाइने धेने अछि आ आइ की बात छिऐ जे चारि बजे भोरेसँ सभ बीन-बीन केने घुड़ैए.!

सुवल काकाकेँ बुझल नै जे आइ घरवास छी, बुझलो केना रहितैन, घरमे जखन रहिते छैथ तखन बास की भेल.?

मुदा मनकेँ थामि रखने छैथ जे कियो जखन किछु पूछत तखन ने किछु बाजब। भने ओहो सभ बुझैए जे सुतले छैथ। मुदा कमला काकीकेँ चुप भेल नै रहल गेलैन, रहलो केना जइतैन। सभ घरवासक ब्योंतमे लागल आ हिनका कोनो धैनियेँ ने छैन। दरबज्जापर आबि पतिकेँ उठबैत बजली-

"घरमे धुमसाही काज अछि आ अहाँ अखन तक सुतले छी?"

एक तँ भिनसुरका समय तैपर पत्नीक दुतकार सुनि सुवल काका बजला- "कोन धुमसाही काज घरमे आएल आ हम बुझबो ने केलौं?"

पतिक बात सुनि कमला काकीकेँ जेना अस्सी मन पानि एक्केबेर मनमे पड़ि गेल होइन तहिना भेलैन। जे घरक सिरिष छैथ हुनके नै बुझल छैन! कहू ई केहेन भेल? हम पत्नियेँ भेलिऐन, नवीन आ किशोर बेटे भेलैन, पुतोहुकेँ छोड़लो जा सकैए, मुदा जइ परिवारमे घरक सिरिषकेँ पत्नियेँ आकि बेटे नै पुछ करैन हुनक मन केहेन कलपैत हेतैन...।

फेर नजैर अपनापर पड़लैन। दुनू बेटा तँ सहजे अपना-अपना काज-रोजगारमे लगल रहैए, अपनो काज आ धियो-पुतो, परिवारोक चिन्ता करए पड़ै छै, बिसैरयो गेल हएत। बिसरबो कोनो अनरगल नहियेँ भेल। काज-उदेममे वौड़ा गेने अहुना होइ छै...। नीको काज नजैरसँ उतैर जाइ छै, मुदा अपने तँ से नै छी। घरे-अँगनामे रहैवाली छी, तखन जँ एना भेल तँ अपनाकेँ दोखी होइसँ केना बँचा सकै छी। मुदा अपन दोखो मानैक सोभाव तँ लोकमे एहेन ऐछे जे घोरन आकि चुट्टी जकाँ जेतए पकड़त ओ पकड़नहि रहि जाएत, भलेँ अधडड़ेरेपर सँ किए ने टुटि कऽ जान गमा लिअए।

तहिना कमलो काकीकेँ भेलैन। बेटा दिससँ नजैर उतारि पुतोहु दिस देलैन। कोनो कि हमहींटा आँगनमे रहै छी, बुढ़-पुरान भेलौं, बिसैरयो गेल हएब मुदा ई दुनू ‘पुतोहु’ तँ से नै अछि। तहूमे जाबे घरक भार दुनू परानीपर छल, जइमे बेटा-बेटीक सेवा, पढ़ौनाइ-लिखौनाइसँ लऽ कऽ बिआह-दानक छल, से तँ निमाहबे केलौं, आब तँ ओ सभ अपने करबारी भेल तखन हमरा कोन मतलब अछि जे अनेरे दोखी बनब। अपनाकेँ निरदोख बुझि कमला काकी बजली-

“दुनू भैंयोँ आ दुनू पुतोहुओक बीच हमहूँ छेलौं तेहीमे विचार भेल जे एकादसीए दिन घरवासो लऽ लेब आ किछु उधवो-बाधव कऽ लेब।”

सुवल काका काजक पारखी तँए मुँहक ओते महत नहियेँ दैथ मुदा चालि-ढालिसँ आगम बुझिते रहैथ। नजैर ओइठाम गरौने रहैथ जे काज

नीक करए आकि अधला मुदा समयकेँ जँ काजमे लगौने रहल तँ काजे ओकरा सीखबैत रहतै जे नीक केना होइ छै आ अधला केना भऽ जाइ छै...। तँए मन समगमपर सुवल कक्काक रहबे करैन। तहूमे चारिमपनक पत्नी आ भिनसुरका समय सेहो पइर लागिये गेल रहैन बजला-

"मर्र ई की भेल! जइ घरमे रहिते छी तइ घरक बास हएत। खाएर जे हौउ। आरो की सब हएत?"

'आरो की सब हएत' पाछूसँ बाजल रहैथ तँए कमला काकीक ऊपरक मनमे खुशी भेलैन, मुदा जखन पैछला बातक सोर पकैड़ पाछू दिस बढ़ली तँ मन धुमनाइन हुअ लगलैन। धुमनाइनक माने आगिपर देल धुमनक सुगन्धो आ धुमनाहा आमक जे सुआद होइ छै सेहो, दुनू कमला काकीकेँ मोन पड़लैन। एके रस्तामे कटारियो आ टाटो लगौल रहने चलनिहारकेँ ओइठाम अँटैक आगूक रस्ता जहिना हियाबऽ पड़ै छै तहिना कमला काकी हियबैत बजली-

"जेठका बेटो आ जेठकी पुतोहुओकेँ बहू-दिनसँ मनमे छेलै जे चौपहरा पूजा करब।"

एक तँ सत्-नारायण भगवानक पूजा तहूमे चौपहरा, सुनि सुवल कक्काक मन गद्-गद् होइत जाइन मुदा कमला काकीक परेशानी बेसियाएले जाइत रहैन। बेसियेबो केना ने करितैन, परिवारक ति-मुहाँनीपर बैसल ने कमला काकी छेली। एक दिस पिता-पुत्रक बीच, दोसर- माए-बेटाक बीच आ तेसर- पति-पत्नीक बीच। दूटा बाँसकेँ कनोतब असान होइ छै, मुँह मिला कऽ बान्हि देबै, मुदा तीनटा बाँसकेँ कनोतब माइए सन कलाकार बान्हि सकै छैथ, मुदा गर लगबैमे तँ किछु नजैरक काज पड़िते छै तँए कमला काकीकेँ गर अँटबैमे कनी-मनी परेशानी होइत रहैन...।

काकीक परेशानी देखि सुवल काका बजला- "जेठजन आ

जेठजनीक विचारसँ ने चौपहरा पूजा हएत, आ छोट-जनक?”

‘जेठ’ ‘छोट’ सुनि कमला काकीक विचारलाहा काज फुरफुरेलैन। फुरफुराइते बजली-

“जेठ जन-जनीक तँ एकमुहरी विचार भेल चौपहरा पूजा, मुदा छोट जन-जनीक बीच मन-भेद भऽ गेल।”

‘मन-भेद’ सुनि सुवलो कक्काक मन सेहो फुरफुरेलैन। अकचकाइत बजला- “की मन-भेद भेल?”

पतिक जिज्ञासा देखि कमला काकी माए-बेटा आ सासु-पुतोहुक सीमापर ओझरा गेली। ओझरा ई गेली जे दुनू दियादनीक अपन माए तँ हमरे ने पुतोहु बना बेटीकेँ पठौलक। जँ पुतोहु-जनीक मनमे किछु कमना हेतैन तँ ऐ घरमे नै पुरतैन, तँ आन घरमे थोड़े पुरतैन। दोसर दिस ईहो होइन जे बेटाक बात पुतोहु सोझा-सोझी नै मानि रहल अछि, तखन एहेन पुरुखकेँ टीक पकैड़ झुलौत की नहि...।

असमंजसमे कमला काकीकेँ पड़ल देखि सुवल काका, सम्हारैत बजला-

“अनेरे अहाँ मनकेँ विसविसाइन-विसविसाइन केने छी, ओकरे सबहक ने घर छिऐ तइले अहाँ किए एते तबाह छी?”

पतिक बात सुनि कमला काकीक मनक बोझ कनी कमलैन। बजली-

“किशोरक मन छै जे दस मुरते भनडरो करब?”

‘भनडारा’ सुनि सुवल काका बिच्चेमे टोनलैन-

“केहेन बढ़ियाँ तँ विचार छै, तइले मन-भेद किए हएत। जाबे दस मुरतेक भनडारा घरमे नै भेल ताबे घरवास केना भेल! भनडरे ने भण्डार भरै छै!”

कक्काक बात सुनि काकीक मन कनी खरहर भेलैन। जहिना

मसुआएल अन्न खापैड़मे पड़ने खरहर होइत तहिना बजली- “छोट जनीक मन छैन जे आन समाजक बेटी छी तँए समाजक दस गोरेक बीच हमहूँ किए ने अपना भानस करैक लूरिक परीक्षा दइए दिऐ। फेर कहिया भाँजपर काज औत कहिया नहि।”

सभ रंगक विचार सुनि सुवल कक्काक मन चढ़ि गेलैन। बजला-

“एक दिनमे एते काज केना सम्हरत?”

योजना आयोगक प्रमुख सदस्य जकाँ कमला काकी अपन योजना प्रस्तुत केलैन-

“आइ सतनारायण भगवानक चौपहरा पूजा हएत। दोसर कोनो काज नै हएत। पूजेक विहित पुरबैत-पुरबैत सभ समांग तबाह रहब। तैबीच दोसर केना सम्हरत?”

काजक ठेकनगर गर देखि सुवल काका बजला-

“घरवासो हएत आ सतनारायण भगवानक पूजो हएत। तहूमे कहै छी जे दिनेसँ पूजा शुरू हएत। घरवास तँ रातिके होइ छइ।”

सुवल काका जे बात बाजए चाहै छला से नै बाजि विचारक रूप पत्नीमे देखैत फेर बजला-

“सतनारायण भगवानक पूजा तँ कोनो जग भेला पछाइत होइए, तखन?”

ओना, सुवल कक्काक प्रश्नमे केतौ कोनो ओझरी नै रहैन, मुदा काजक दिन रहितो पत्नी केते समय गमबै छैथ, मन तैपर रहैन। काजसँ पहिने तँ तीनपहरा पूजा हएब शत-प्रतिशत सधाएल रूप भेल। साँझुक पूजा तँ विसरजनक भेल। तैबीचमे घरवास हएत।

जेना महजालकेँ समेट कियो एके बेर हाँसूसँ काटए लगैए तहिना कमला काकी सभ ओझरीकेँ काटैत बजली- “काज-उदेममे अहिना होइ छइ। तँए आगू-पाछूक हिसाब नै होइ छै, काजक हिसाब होइ छइ।”

पत्नीक बात सुनि सुवल काकाकेँ सवुर भेलैन। मुदा तैयो एकटा झटहा सबुरदानाक गाछक घौरपर फेकैत बजला-

“हमरा तँ बुझले ने छेलए, खाएर जे भेल से नीके भेल। अरवनसँ कि हमहूँ केतौ जाएब थोड़े, तँए हमरो नाओं काजकरतेमे लिखि लेब।”

पतिक उपस्थिति मनक डायरीमे दर्ज करैत कमला काकी बजली-

“धिया-पुता केना करै छै, से तँ देखबै किने।”

नअ बजे पूजा प्रारम्भ भऽ जाएत। चारि पहरक दिनमे तीन पहर पुराएब अछि। चारिम पूजा तँ साँझमे हएत। अपन काजक नीवित बुझि नवीन माइयो, भाइयो आ दुनू दियादनियोंकेँ एकठाम समेट बाजल-

“चौपहरा पूजा छी, अद्दी-गुद्दी नै छी। तँए सभ देह-झाड़ि कऽ लागब तखने पार लगत।”

एक तँ ओहुना सबहक विचार पहिनहिसँ रहबे करैन, तैपर नवीनक विचार सुनि आरो सभ चौकन्ना भेल। नवीन पूजापर बैसत, तँए सहए पड़तै। एक दिस काजक बढ़ोतरी आ दोसर दिस खेनाइ-पीनाइमे कटौती हेबे करतै! से खाली नवीनेटा लेल नै भेल। मणिका केना नै पतिक संग पुरती, ओहो भरि दिन निराहारे रहैक विचार पहिनहिसँ कऽ नेने छेली। आँगनमे पूजा हएत भैंसुरो आ जेठ दियादनियोँ भरि दिन सहती आ छोट दियादनी- ‘प्रेमा’ केना उपास नै करती, तँए ओहो सहती। मुदा किशोर तँ करबारी छी, तहूमे आइ काजो दोहरा गेल, अपन वेपारक काजक संग-संग परिवारक काज सेहो छै...।

अपन स्वतंत्र विचारक काज केनिहार लेल तँ जटिल समस्या उपस्थित नहियेँ होइए मुदा सभ काजो तँ एके रंग नहियेँ होइ छइ। स्वतंत्र काज किछु एहनो होइए जइमे दोसरक हस्तक्षेप नै होइ छै, आ किछु एहनो तँ होइते अछि जइमे होइ छइ। ओना, नोकरी केनिहारकेँ अलग ढंगक जिनगी होइ छैन। छुट्टी भेटला पछाइत ड्यूटीसँ पूर्ण स्वतंत्र भऽ

दोसर काज करै छैथ। मुदा एहनो तँ होइते अछि जे परिवारमे पैघ-सँ-पैघ आकि जरूरी-सँ-जरूरी काज किए ने हुअए, जेकर दरमाहा लइए, पहिने ओकर काज करए पड़ै छइ।

जहिना नवीन तहिना दुनू दियादनियोँ भरि दिन सहती। जे बात किशोरो बुझलक। मुदा बुझैमे कनी फेड़ भऽ गेलै, फेड़ ई भेलै जे करबारी बुधिये सोचलक तँए उपासक महत्-क बात बुझबे ने केलक। मनमे भेलै जे जखन भनसिया अपने नै खाएत तखन भानसो तँ तहिना ओंघाइत करत, तइसँ नीक जे नहियेँ खाएब। भने ईहो तँ भइये जाएत जे सबहक संग पुरलौं।

भैयारीमे तँ बात फरिया गेल। जे चारू गोरे 'दुनू भैंयोँ आ दुनू दियादनियोँ' भरि दिन उपासल रहत। बीचमे पाँचम माए, तहूमे सीमा परक भेली। जखन बेटा-पुतोहु सहत आ बीचमे अपने खाएब से माएकेँ नीक नै लगलैन। अपने फुरने बाजि गेली जे हमहूँ उपास करब। पाँच गोरेक उपाससँ दिनमे चुल्हे किए पजरत तहूमे घरवासो छी। मुदा एक गोरे 'सुवल काका' तँ बाँकीए छैथ। तहूमे चुल्हिक पूजा तँ ओहन पूजा छी जे एक गोरे रही आकि दस गोरे, प्रक्रिया एके रंग हएत...।

भानस करैसँ अपन जान बँचबैत प्रेमा सासुकेँ हाथक टुसकी देलैन-

"बाबुओ-जीसँ पुछि लथुन।"

एक तँ पुतोहुक टुसकी दोसर अपनो सहब कमला काकीकेँ हूबा बढ़ौनहि रहैन। टुसकी पबिते काकी, काका लग पहुँच बजली-

"आइ चुल्हि नै पजरत, से पछाइत किछु बजबै नहि।"

परिवारक सबहक विचार सुवल काका दरबज्जेपर सँ कान ठाढ़ कऽ सुनि नेने रहैथ। बजला-

"आइ घरवास छी तखन जँ चुल्हिये नै चढ़त तँ ओहेन घरमे लोक

बास कए दिन कऽ पौत?”

सुवल कक्काक बात नीक जकाँ कमला काकी नै बुझली। मुदा बाता-बातीमे चुपो रहब तँ हारबे भेल। तहूमे दुनू परानीक बीच। भलें बाता-बातीमे महत विला किए ने जाउ।

बजली-

“साँझू पहर ने हएत, दिनका गप कहलौं।”

कमला काकीक सम्हार देखि सुवल काका बजला-

“चुल्होकेँ कि सीमा-नाँगैर छै, ओइपर तँ केते रंगक समान बनैए, टटको बनबैए आ बसियो खाइबला बनबैए। टटका नै चढ़त तँ नै चढ़ह, कौल्हुको-परसुका चढ़लाहासँ तँ काज चलिते अछि। सएह करब।”

कक्काक जवाबमे काकी फेर भोथिया गेली। बजली-

“बाइस-तेबाइस केहेन खाइमे लागत?”

काकीक भँसियाएब काका बुझि गेला। बजला-

“ओइबेर जे बैजनाथसँ पेरा अनने रही से मोन अछि किने जे छह मास तक टटकेक सुआदमे रहल।”

बुझल-गमल काज कमला काकीकेँ, तँए कनी सहैम गेली। मुदा निर्णय तक तँ पहुँचबे छेलैन। बजली-

“ई तँ कहिया कतक गप भेल। मुदा आइ की करब से कहू।”

सुवल काका बुझि गेला जे भरिसक कोनो दोसर काज दिस नजैर चलि गेलैन तँए अगुता रहली अछि। बजला-

“जखन सभ उपासे करब तँ हमरे-ले किए चुल्हि पजारल जाएत। अखन ते घरमे चूड़ो ऐछे, दहियो ऐछे, चीनियोँ ऐछे, केरो ऐछे तखन बाँकीए कथी रहल जे भूखल रहब।”

बेटा-पुतोहु लग अपन जीतैत पाशा देखि कमला काकी बजली-

“जखन सभ उपासे करत तँ बीचमे अहीं किए खाएब?”

मुस्की दैत सुवल काका बजला-

“आब कोन दिन-ले उपास रहि जोगा कऽ राखब। खाइते-पीविते रामलला।”

घरवासक संग चौपहरा पूजा सुवल काका ऐठाम छिऐन, से गुल-गुली तीन दिन पहिनहिसँ गाममे गुलगुलाइत, ओना, यज्ञ-जपमे हकारक प्रथा अदौसँ आबि रहल अछि। मुदा जेना-जेना लगिचाएल अबैत तेना-तेना गामक धीओ आ पुतोहुओक बीच पूजाक उपास करैक विचार बढ़ल जाइत। तैसंग ईहो विचार मनमे उठिते जे जखन सत्-नारायण भगवानक उपास करब तखन जँ निअम-निष्ठासँ नै करब तँ ओइ उपासक महते की? जँ कियो दिन-राति झूठेक खेती करए आ एकटा बात करवनो सते बाजि लिअए तँ ओइ बातक असरिये केते हएत...। तँए, केते गोरे जखनेसँ सुनलक तखनेसँ अशुद्ध भोजन, अशुद्ध बोल आ अशुद्ध काजक तियाग करैत अपनाकेँ पूजाक समय अबै धरि पुजेगरी रूप बनबए लगल।

एक तँ गाममे अखन तक माने बीस बर्खक बीच ने कियो सत्-नारायण भगवानक चौपहरा पूजा केलैन आ ने कियो उपास केलैन, तँए उपास केनिहारि लेल एकटा नव संकल्प सेहो भेल। नव संकल्प ई जे पूजा वीहिते लोक अपन नीक जिनगी बनेबाक संकल्प लइए। अहुना अपना ऐठाम ठेकनाएल उपास ‘जन्माष्टमी, रामनवमी, शिवराति इत्यादि’ ऐछे मुदा किछु एहनो तँ होइते अछि जे बेठेकनाएल सेहो होइए। अनको ऐठाम सत्-नारायणक पूजा भेने आनो-आन भरि दिन सहि भगवानक चरनोदक परसाद पेला पछाइते अन-जल करैए। ओना, एकपहरा पूजाक चलैन बेसी रहने सहनिहारि सभ बहुत बिसरियो गेल छैथ मुदा चौपहरा पूजाक उपास तँ सहजे पहिले-पहिल हएत, तँए ई लोक थोड़े बिसरत...।

जहिना चारि पहरक दिन आ चारि पहरक रातियो होइ छै, तहिना

ने लोकोक जिनगी बँटाएल अछि। दू जिनगीक जोड़ जहिना नअ बजे दिनसँ नअ बजे राति धरि अछि तहिना ने नअ बजे रातिसँ नअ बजे दिनो अछि। चौपहरा पूजा सेहो दिन-रातिक जोड़क प्रक्रिया छी।

आइ एकादसी सेहो छी, भने दुनू उपास संगे हएत, सुखठीक वेपार आ पशुपतिनाथक दर्शनो हेबे करत। मुदा एकमुहरियो गाममे बाधा तँ रहिते अछि। सरधा दीदीक मन सोल्हो-अना उपास करैक छैन मुदा दुनू परिवार–सरधा दीदीक परिवार आ सुवल कक्काक परिवार–क बीच नोत-हकार सभ बन्न अछि। कोनो बाते झगड़ा भेलैन कहा-कहीमे कहा गेलैन जे अहाँक छाँह देने नै चलब। दुनू ऐपर अड़ि गेला, जइसँ पाबैनक बेनसँ लऽ कऽ बेटा-बेटीक बिआहो-दानमे आएब-जाएब बन्ने छैन।

मुदा तैयो सरधा दीदीक मन परिवारक सभ झगड़ाकेँ फानि विचारि लेलैन जे सत्-नारायण भगवान किनको बाँटल छैन, सबहक छियाह तखन किए ने उपास करब। मुदा लगले मन अँटैक गेलैन जे भरि दिन सहला पछाइत बिनु चरनोदक-परसाद मुँहमे नेने केना उपासक पारन करब.!

दीदीक मन ओझरा गेलैन। मुदा लगले मनमे उठलैन जे जखन डोराक ओझरी हौउ आकि डोरीक, अपन दुनू हाथे भलेँ नै सोझराए मुदा दोसर-तेसर हाथ पड़ने तँ सोझराइये जाइए, यएह सोचि सरधा दीदी लाल काकीक आँगन जा कहलखिन-

"भौजी, किछु छी तँ समाजक चौपहरा पूजा छी, केना नै उपास करब।"

बिच्चेमे लाल काकी टोनि देलखिन-

"एकरा के काटत?"

'काटब' सुनि सरधा दीदीक हूबाक संग मनसूबो बढ़लैन। बजली-

"एहनो तँ भइये सकैए जे अहाँकेँ जे चरनोदक परसाद भेटत,

तेहीमे सँ कनी-मनी हमरो दऽ देब।”

दीदीक सोझराएल विचार सुनि लाल काकी बजली- “एना किए मुँह दाबि बजै छी, सतनारायण भगवान केकरो बाँटल छिऐन, हुनका नीविते जे पूजापर चढ़ल ओ सबहक भेल। तइमे मेख-रोखक की परियोजन।”

लाल काकीक विचार सुनि सरधा दीदीक मनमे ओहने खुशी भेलैन जेहने दूर गेनिहारकेँ लगक संगी भेट गेने होइत। लगक संगीक माने ई जे संगीक उच्चतम् अवस्था। तही बीच पूजाक हकरिया हकार दिअ पहुँच गेल। बाल-बोध हकरिया, कोनो कि सरधा दीदीक परिवारक झगड़ा ओकरा बुझल रहै, बहादूर नोकर जकाँ सौंसे गाम हकार परसैक रहै, सरधो दीदीकेँ किए छोड़त। सोझहेमे सरधो दीदी आ लालो काकी रहबे करैथ, तही बीच हकरिया हकार बाँटि गेल...।

ओना, हकार देबाक चलैन एक दिन पहिनुक अछि, नै हएत तँ उपास केना हएत। ई भेल समाजक बीच सत्-नारायण भगवानक पूजाक। मुदा से नै भेल नवीनक मनमे नै आएल। तँए बिसैर गेल। पछाइत मोन पड़लै तँए हड़बड़मे जे सोझहामे पड़ल तेकरे हकार दिअ पठा देलक।

हकार पाबि सरधा दीदीक मनमे खुट-खुटी उठलैन। खुट-खुटी ई जे बाल-बोधक फूसि बाजब जहिना फूसि नै छै तहिना तँ सत्तोक हएत। माने ई जे जहिना छोट बच्चाकेँ माए-बाप करवनो नीको बात सीखबैए आ रातिमे जखन ओछाइनपर गंदा कऽ दइ छै तखन ओइ नीक बातकेँ उनैट अन्हारकेँ देखबैत ओकरा भूत कहिते छैथ, जइ डरसँ बच्चा माए संग छोड़ि, जाबे माए कलपर सँ पानि आनि ओछाइन धोती आकि ओछाइने बदलती ताबे असथिर रहैए आ तहिना बिजलियोबला घरक माए आन-आन बौलकेँ मिझा एकटा रखै छैथ। तेकर कारण ई जे मल-मूत्र

तियागला पछाइत मन हल्लुक होइ छै, तहूमे नबका हाथ-पएरबलाक। जेमहर-जेमहर जाएब तेमहर-तेमहर ओहो जेबो करत आ उकठपनो करबे करत, जइसँ छोटो काज नमहर बनैत जाएत, तँए ओकरा भूतक आड़ि माने अन्हार-इजोतक आड़ि दऽ राखए पड़ै छइ। जेहेन लाल काकीक मनमे खुशी रहैन तइसँ दब दीदीक बुझि पड़लैन। खसल मन देखि लाल काकी बजली-

"मन उछट करू। चरनोदको आ परसादोक बात आब थोड़े रहल, आब तँ हकार पौनिहारि भेलौं। आब कि कोनो बाधा रहल जे कियो चौपहरा पूजाक उपासकेँ काटि देत।"

लाल काकीक उत्साहित बात सुनि सरधा दीदी मनक विकार बोकैर देलैन-

"कहुना भेल तँ बाल-बोधेक हकार भेल किने.!"

सरधा दीदीक बात सुनि लाल काकीक मन जेना विचारकेँ धकैल देलकैन। बजली-

"एक तँ समाजक बीच चौपहरा पूजा, तहूमे जैठाम सतनारायण भगवानक पूजाकेँ, समाजक बहिन, बेटी अपन-अपन संकल्पक उपास करि पूजाक आरो शोभा बढ़बैत, तैठाम जँ कोनो बिहंगरा ठाढ़ हएत तँ की हम मुँह तकैत रहब... ।"

लाल काकीक विचार सुनि सरधा दीदी बजली-

"किछु भेल तँ समाजक धारमे बहब भेल किने। जैठाम लोक जिनगी-मृत्युक बीचक बाट पकैड़ गंगा-यमुना-सरस्वतीक संगमपर पहुँचए चाहैए।"

हँसी-खुशीक वातावरणमे चौपहरा पूजो आ घरवासोक काज सम्पन्न भेल। आब कि घोरूआ परसादक चलैन रहल जे बेसी तरद्दुत करए पड़त। काजो हल्लुके भऽ गेल अछि। पूजाक तीन दिनक पछाइत आइ

भनडारा हएत। काज तँ झमेलिया अछिए। झमेल ई जे किशोरक पत्नी 'प्रेमा'क काज पछुआ गेल। कहलो जाइ छै- भोजक आगू जँ खेबा-पीबाक बिनु बनौल समान सठि गेल तखन तँ हमर विचार मनेमे मरि गेल किने? मुर्दघटीक बरियाती जकाँ ने भेल। मुदा तँए कि वेचारीकेँ संग नै पुरए पड़तै, तहूमे अपन पतिक आराधना छिऐन। ओना, तैयो अदहा काजक विचारी तँ भेबे केली...।

प्रेमे जकाँ दुनू परानी नवीनक बीच सेहो विचारक झमेल उठबे कएल। सत्-नारायण भगवानक पूजा अगुआ कऽ हम केलौं, सभ मिलि निमाहलौं, तहिना तँ परिवारेक काज ईहो ने भेल। यएह ने भेल जे किशोरक मनक उपज छिऐ, तँए जँ ओ अपना विचारसँ करत तँ अपन बुझि अपना जकाँ काज करत, से बेसी नीक हएत। जे ओकरे काजक भार सुमझा अपने सहयोगी बनि जाए। तँ बेसी नीक हएत...।

काजक दौड़, तँए सभ एकमुहरी भऽ पहिने काजक मुँह-मिलानी करए एकठाम बैसल। बैसते नवीन किशोरकेँ कहलक-

"बौआ, औझुका काज तोरा मनक छिअ, तँए तोंही ऐ काजक अगुआ भेलह। हम सभ पीठपोहू रहबह।"

नवीनक विचारक कनोजैर पकैड़ते कमला काकीक मुँह अलगलैन। बजली-

"बौआ, गाममे दू रंगक लोक अछि। भनडाराकेँ लोक वैष्णव भोजन मानैए। बिल्कुल शाकाहारी। तँए समाजमे जेते वैष्णव छैथ ओतेककेँ भनडारा कऽ लैह। आ पुतोहुजनीक जे मन छैन जे अपन लूरिक परीक्षा दिऐ, तँ शाकाहारीसँ मांशाहारी धरिक भोज परसू कऽ लेब।"

कमला काकीक विचारकेँ मणिका दहलाइत देखि बजली-

"माए, पानिमे माँछ आ नअ-नअ कुटिया बखरा, अनेरे करै छैथ।

आइ जइ काजक दिन छी पहिने तेकरा सम्हारि लेथु। अखन औझुका काजक ने विचार करती।"

मणिकाक विचारसँ कमला काकीक मनमे मिसियो भरि दुख नै भेलैन। बजली-

"देखहक, एक पंथक लोक दोसर पंथक ने छुबल खाइए आ ने एक पाँतिमे बैस बातो-विचार करैए, तँए असथिरसँ विचार करए पड़तह जे एको गोरे गाममे छुटैथ नहि।"

कमला काकीक विचार सुनि चारू गोरे, दुनू भैंयों आ दुनू दियादनियों अकबका गेल। अकबका ई गेल जे जखन सभ वैष्णवे भेला तखन एक-दोसरमे बारा-बारी किए अछि? मुदा प्रश्न ई तँ नै जे किए अछि, प्रश्न तँ ई भेल जे समाजमे एहेन अछिए। जहिना लोक जाति-पाँतिमे बँटल अछि, तहिना ने पंथो-पंथाइ तँ बँटले अछि। तखन की करब? ने कमला काकीकेँ जवाब फुरैन जे काजकेँ सुतिया आगू बढ़ौती आ ने दुनू भैंयेकेँ।

ओना, किशोर दुनू परानी वेपारसँ जुड़ल अछि, गाम-समाजक बेवहारक बात नै जनैए तँए कोनो बात नहि। ओना, अछि दुनू परानी पढ़ल-लिखल मुदा जिनगीक काज बदलने जीवनोक किछु काज तँ छुटबे करै छै, से भेल। मुदा तइसँ कियो समाजक किरिया-कलाप वा रीति-नीतिसँ छुटकारा पाबि जाएत सेहो नहियेँ अछि। खाएर जे अछि, मुदा भैयारियोमे आ मतो-पिताक आगू तँ बच्चे भेल...।

पाँचो गोरेक बीच गुमा-गुमी पसैर गेल। गुमा-गुमी देखि किशोर नवीनकेँ कहलक-

"भैया, अहाँ शिक्षक छी पढ़ौनीक काज करै छी, तखन किए चुप छी?"

किशोरक बात सुनि नवीनकेँ तामस नै उठल। मने-मन किशोरक

विचारकेँ गौर करए लगल। मुदा कोनो विचारकेँ निर्णय तक पहुँचबैमे दोहरी कारक अछि, पहिल बुझल आ दोसर बिनु बुझल। नवीनकेँ ने बुझल आ ने बुझैक दिशा-बोध, जइसँ किछु अनुमानो करैत। जहिना दिशा बोधबला दिशा पकैड़ डेग आगू बढ़बैत जाइए, मुदा बिनु दिशा बोधबला केमहर डेग बढ़ौत से बोधे ने रहै छै, जइसँ बेसी भोतियेबेक डर रहै छइ। नवीनोक मनमे सएह भेल, तँए परिवारमे दोखी बनैक डरसँ मोटा पटैक बाजल-

"जखन घरमे श्रेष्ठजन छैथ तखन कोनो नव काज करैसँ पहिने विचारि लेब नीक हएत। तँए बाबूकेँ पुछि लेब नीक हएत।"

पिताक नाओं सुनि कमला काकीक मनमे अपन बड़प्पनक बोध भेलैन, जइसँ ललौन गुलाब जकाँ चेहराक रंग बदललैन। मुदा बजली किछु ने। पतिक विचारकेँ पाछूसँ ठेलैत मणिका सासुकेँ कहलैन-

"एना मुँह चोरौने हेतैन? जाबे काजक विचार नीक जकाँ नै कऽ लेती, ताबे काजमे हाथ लगतैन?"

दू-दिसिया सोंगर जहिना घरकेँ सोझ करैए तहिना कमला काकीक मन सेहो सोझ भऽ गेलैन। बजली-

"ओहो, की कियो आन छैथ जे पुछैमे धरी-धोखा हएत, हमहीं बाजब मुदा सबहक रहब बेसी नीक हेतह।"

सुवल काकाकेँ कमला काकी पुछलखिन-

"गाममे रंग-रंगक वैष्णवजन छैथ, एक-दोसर लग ने बैस कऽ खेता आ ने बनौल खेता, तखन केना हेतइ?"

कमला काकीक बात सुनि सुवल काका मने-मन विचारए लगला। विचारए ई लगला जे समाजमे एहेन प्रश्न तँ अछिए। मुदा लगले मनमे उठलैन जे जँ एहेन अछि तँ एहनो तँ ऐछे जे एक सामूहिक रूपमे आ दोसर खण्ड रूपमे बेकतीगत सेहो अछिए। बेकतीगत रूपमे ई जे, एक

मुरते, दू मुरते फुटा कऽ सेहो होइते अछि। पंथाइक झगड़ा जेतए छै तेतए रहौ, मुदा ऐठाम से तँ नै छी। घरवास छी, पथ-पथिक होथु आकि हेराएल-वौआएल बटोही होथु, सबहक आश्रयक आश्रम छी। तैसंग ईहो तँ छीहे जे समाजक बीच रहने समाजक सेहो छीहे। सोझराएल विचार मनमे ऐबते, बजला-

"दूध-माछक बाँतरक झगड़ा हौउ आकि सजमैन-कदीमाक भैंसुर-भावोक, हमरा ओइसँ कोन मतलब अछि। अपनेसँ जा कऽ सभकेँ दल दऽ अबियनु।"

जेना कमला काकी सुवल कक्काक बात बेसी बुझलैन तहिना किशोरकेँ कहलखिन-

"बौआ, अपनेसँ जा कऽ सभकेँ कहिहौन, जँ कियो किछु कहथुन तेकर विचार पछाइत हएत। अखन काजकेँ अँटकाबह नहि।"

कमला काकी जे बाजल होइथ मुदा सुवल काका बुझलैन जे भरिसक खाइ-पीबैक बात बजली। बातकेँ सम्हारैत बजला-

"बौआ, बेसीसँ बेसी कियो कहथुन जे अपने बना कऽ खाएब, तँ ओहो बढ़ियाँ। भने सभ वस्तु पुछि कऽ सुमझा देबैन। तइसँ ईहो हएत जे जश-अजशक भागीसँ बँचि जाएब।"

सुवल कक्काक बात सुनि नवीन बाजल-

"बाबू, जखन जेहेन समय औत, तखन तइ ढंगसँ विचारि काज करब। अखन अगुआ कऽ किछु बाजब, बेसी हएत।"

सह दैत मणिका बजली-

"जहिना चौपहरा पूजामे हकार पुरए सभ एला, तहिना सभ औता। तँए पहिने किछु अनुमान करब, नीको भऽ सकैए आ अधलो भऽ सकैए।"

किशोर दल दिअ विदा भेल। ओना, गाममे सभ पंथक वैष्णवजन

छैथ मुदा तीन स्तरमे बँटल छैथ। पहिल जे स्वच्छ-जन छैथ ओ अपनाकेँ भोज्य पदार्थसँ लऽ कऽ करनी-भरनी तक अपन संकल्पकेँ निमाहि रहला अछि तँए वैष्णवजन होइथ आकि वैष्णव-जनसँ वृहत होइथ देव स्वरूप मानव बुझि अपनाकेँ भक्त स्वरूप 'गुरु-शिष्य हौउ आकि गुरु-चेला' व्रत निमाहि रहल छैथ, मुदा एहेन जन कम छैथ। तँए ऐ बीच दल स्वीकार करैमे कोनो बाधा उपस्थित भेबे ने कएल। दोसर स्तरक जे छैथ, ओ घरक ओहन खुटा जकाँ छैथ जे सदिकाल 'हवा उठौ आकि झाँट-पानि हौउ' हिलडोल करैत रहता जइसँ घरो हिल-डोल करिते रहैए।

एहेनक संख्या बेसी रहने किशोरक सोझा बेसी प्रश्नो उठल। मुदा जहिना सुवल काका कहने रहथिन तहिना किशोर वैष्णव-जनक प्रश्न सुनि जवाब स्वरूप प्रश्न पुछैत-

"मनुखक समाजक मनुखक रूपमे भोजन करबए चाहै छी, तँए हँ-नइमे कहू।"

किशोरक प्रश्न, जन-जनकेँ जेना छातीमे बेध दैत तहिना अपन नचारी सुनबैत मानि-मानि लेलैन। ओना, किशोरकेँ समाजक बीच ईहो देखल-सुनल जे फल्लाँ, साले-साल भदवारिमे शीकपर कण्ठी रखि घरक पछुआरमे टाँगल टौहकी-पहटा लऽ भदवारिक मौज-मस्ती कऽ लैत आ चर-चाँचर सुखिते, जेठुआ वैष्णव-बबाजी बनि अमैया भनडरो पुरि चद्दैर-टाका लऽ कऽ प्रतिष्ठितो बनि जाइत। तेतबे किए, एक पंथाइ जखन बुझैए जे हवा उनटल जाइ छै तखन जँ अपने नै गर घुमब तँ अनेरे धँसनो तरमे पड़ि जाएब, तइसँ नीक जे करे घुमि जाइ। तँए एहनो बबाजीक कमी नहियेँ अछि जे राजनीते जकाँ सतरहटा पंथाइ भोज-भात नै खेने हुअए। खाएर जे से...।

मुदा तेसर स्तरक तीनटा महंथनुमा छैथ। तीनूकेँ कटोरिया धोइध, बोनैया दाढ़ी जकाँ नहि, दिनमे पचासो बेर ककही फेड़ल, मक्खन लगौल,

बरह-बरखा कनियाँ जकाँ चानिपर खोपा, धपधपौआ एकरंगा वस्त्र, मुदा गामकेँ अपन खनदानी डीह बुझि सालमे दू-चारि दिन रहै छैथ, बाँकी समय स्थान सभसँ लऽ कऽ रेलेगाड़ीमे बीतै छैन...।

संयोग एहेन भेल जे तीनू महंथ गामेमे। जे बात सुवल काकाकेँ बुझल। मनमे रहैन जे नमक हरामीक संख्या जइ रूपेँ बढ़ि रहल अछि ओ समाजक लेल शुभ नहि। पहिने भेलैन जे भरिसक ओ सभ 'तीनू' अबैसँ कतरेता, जँ कतरेता तखन उपए? फेर मनमे उठलैन- भाय, जखने कियो जँ केकरो कोनो टाट लगा रोकैए आकि अपनो ओइ दिशामे तँ रोकाइये जाइए। तँए सुवल कक्काक मनमे एको मिसिया हिलकोर उठबे ने केलैन।

ओना, किशोरकेँ बुझले नै थनो परहक केलहा काज रहै जे अपन बिआही पत्नीकेँ, चारिटा बाल-बच्चा भेला पछाइत, रहैत दोसर बिआह करए लगल कि केसमे फँसि गेल। ओ बँचेलहा उपकारी छी। दोसर, जेकरा बिआहमे बरियातीक गवाह छी जे ओ बबाजी बनला पछाइत अपना हाथे अपना पत्नीकेँ दोसर बिआह करा संकल्प नेने जे बिआह नै करब। ओना, अखन धरि निमाहनौं अछि। तेसरो ओही उमेरक, मुदा पहिल दुनूसँ भिन्न। पहिल दुनू समाजसँ सोलहन्नी कटल मुदा तेसर से नहि। गाम-समाजसँ जुड़ल, ज्ञान-धियान करैत समाजक बीच अपन हश्ती बरकरार रखने छैथ। तँए समाजक काज केनिहार स्वत: समाजसँ जुड़ल तँए तीनू नकार-नुकार केने बिना दल मानि लेलैन।

घरवासक दोसर प्रक्रिया, साधु भोजन सेहो भऽ गेल। ओना, पान-सात दिनक काजक झमार सभकेँ झमारि देने तँए आगूक काज दिस डेग बढ़बैक हिम्मते कमि गेल। मुदा परिवारोक यज्ञक तँ एक प्रक्रिया पछुआएले अछि। ओना, कमलो काकी आ सुवलो कक्काक मनमे रहबे करैन जे भैयारीक चारिम पौदानपर बैसल प्रेमा छैथ, तँए जहिना क्रमश: सबहक आराधनाक पूर्ति भेल, तहिना जँ चारिमोकेँ नै होइ ई तँ परिवारमे अन्याय हएत।

ओना, कमला काकीक नजैरसँ हटि गेलैन जे प्रेमा अपन लूरिक परीक्षा समाजमे दिअ चाहै छैथ, मुदा एते तँ रहबे करैन जे जहिना राम-लक्ष्मणक भैयारी तहिना ने सीतो-उर्मिलाक दियादनी। भलेँ सीतासँ बेसी उर्मिले किए ने मने-मन जरल होइथ, मुदा अग्नि परीक्षा सीतेकेँ ने दिअ पड़लैन।

ओना, सुवल काका काजक सुतिहार तँए मनमे नचैत जे तीनूक–नवीन-मणिका आ किशोर–आराधनासँ ओझरौठ आराधना छोटकी पुतोहुक छैन। जे बात मनमे छैन, ओकरा पुरबैमे बेसी समय लगत। बेठेकान समय। सालो भरि। भोज भलेँ चैतमे किए ने हुअए मुदा अचार जेठुए ने रहत। तहिना अदौरी फुसियेने-पनियेने मानत, जखन वएह मर-मसल्ला आ दालि मिलि विवाद उठौत तँ ओकर बर-बरीक हक नै देबै? तँए ओकरा आठ दिन पहिनहिसँ जँ नै पूजबै तँ अपन रंग थोड़े चढ़ए देत। धड़-फड़मे बरी गढ़ि लेब मुदा अमैनियाँ दालि बनबैमे बिनु गंग-स्नाने पवित्र थोड़े होइए...।

एक दिस जहिना पछुआ पकैड़ अँचार, अदौरी, बरी, बर रखने तहिना दोसर दिस दही कण्ठपर चढ़त जे टटका छोड़ि जखने बसिया करमेँ तखने तोरो मुँह बसियाइन होइत खटाइन कइये देबौ। मुदा जानए जअ आ जानए जत्ता। भाय, अराधैएकाल ने केकरो विचार कऽ लेबा चाही जे केहेन अराधै छी...।

प्रेमाकेँ कमला काकीक माध्यमे सुवल काका कहलखिन-

“कनियाँकेँ कहि दिऔन जे अपना काजक अगुआ अपने भेलौं, बाँकी सभ सहयोगी भेला, तँए अपन काजकेँ सुतियाएब शुरू करैथ”

पतिक विचारमे कमला काकी अपनो विचार फेंटैत प्रेमाकेँ कहलखिन-

“कनियाँ, जहिना कोरपछू बेटी दुलारू होइ छै तहिना घरमे अहूँ

भेलौं। नैहरमे जहिना माए-बापक बात-विचारमे रहै छेलौं तहिना ने हमरो लग रहब।"

जादूगर जहिना अपन खेल पसारैसँ पहिनहि देखनिहारकेँ नजैर बन्न कऽ दैत तहिना भावुक प्रेमाक नजैर बन्न भऽ गेल। कल्पना लोकमे पहुँच सासुक नजैर निहारि बुदबुदाएल-

"कियो पागल कहए आकि दिवाना, मुदा धरती तँ बादले बुझैए।"

समय मंगैत बाजल-

"माए, काज केतौ पड़ाएल जाइ छै, ओ तँ गुड्डी जकाँ अकासमे उड़ै छै, लपेटाक संग केना लपेटबै ओ तँ उड़ौनिहारेक काज भेल किने?"

ओना, सुवल काका दरबज्जेपर सँ प्रेमाक बात सुनि नेने रहैथ तँए बुझैमे केतौ बेवधान नै रहैन, मुदा एते तँ शंका मनमे उठिये गेल रहैन जे जइ माध्यमसँ जवाब औत, ओइमे किछु नून-मिरचाइ मिलाएले रहत। तँए अपना ढंगसँ बुझैक अछि। सएह भेल। कमला काकी प्रश्नोत्तर करैत पतिकेँ कहलखिन-

"कनियाँक मन बड़ खुशी देखलयैन।"

पत्नीक बातकेँ सुवल काका चौपेत कऽ मनमे रखि आगूक किरिया दिस नजैर फेकलैन। मनमे उठलैन प्रेमाक प्रेमिल विचार। एते पैघ आराधनाक साहस। अदौसँ माने जखन साग आश्रित मनुख छल तहियासँ लऽ कऽ बर-बरी धरिक जुटान, जे दालि उसनासँ बर-बरी बनैमे पचीसो-पचास हजारक जिनगी पौने अछि, जे कुशियार चीनी बनैमे हजारो बरख खेलक, एतेक जुटान बाल-बोधक खेल छी। देखा चाही, केनिहारिकेँ?

आराधनाक अनुकूल वातावरण भेटनौं प्रेमा धड़फड़ाएल नहि। चुप्पी साधि, पहिने भोजक विचार केलक। भोजक विचार ई जे, भोज्य-पदार्थ बढ़ने, भोजन विपरीत दिशामे बढ़ि अवघाती बनि गेल अछि।

अधिक भोज्य पदार्थ अनुकूल-प्रतिकूल गुणोक तँ समावेश भइये जाइए। तैसंग ईहो तँ होइते अछि जे हमरा सन चारिम सीढ़ीक लोक, एते एकत्रित केना कऽ सकत। नान्हिटा अँचारे अछि फल-फलहरीसँ लऽ कऽ तीमन-तरकारीक संग सागो-मुरै धरिक बनल अछि। सागेकेँ की कहबै। बरहमसिया छी, मुदा एके साग बारहो मास थोड़े हएत। अपन-अपन समैयक संग ने रंग पकड़ने अछि। जँ से नै अछि तँ ललका ठढ़िया रंग-बदलैत बेदरंग होइत हरिअर होइत उज्जर भऽ भुल्ला कहबए लगैए...।

अगममे बहैत प्रेमा अपन विचारकेँ दोसर दिस मोड़लक। मोड़लक ई जे एते वृहत पदार्थक बीच जँ गोटे चितकाबर भऽ जाइए, तइले एते लोक ढोल किए पीटत। ओकर नौतिकता ओहीमे छै, पचासो विन्यासक बीच पेट नै भरलै। यएह छी मिथिलाक गौरव जे खाइकाल नै बाजी। एहेन समाजमे नीको काज तँ अधले दिस बढ़ि जाइए। तखन? तखन किछु ने, जे जुड़त तइसँ मनकमना पुराइये लेब। ने समाज केतौ पड़ाएल जाइए आ ने अपने केतौ पड़ाएल जाइ छी। जिनगी रहत तँ दिनकेँ के कहए जे मिनटो-क्षण परीक्षेक घड़ी रहैए। तइले एते मनमे घमरथने किए...।

प्रेमाक आराधनाक भोजक परीक्षा सेहो भइये गेल।

भोजक दस बजे राति, सभ काज समाप्त भऽ उसैर गेल। सभ कियो अपन-अपन ओछाइनपर पहुँच गेल। सुवल काका, काकीकेँ पुछलखिन-

“पचास बर्खक संगी तँ ओहूँ भेलौं किने, ऐ बेरक घरवास कैअम छी?”

पतिक प्रश्न सुनि कमला काकी जिनगीक पैछला छोर पकैड़ पाछू मुहेँ ससरैत सासुरक पहिलवास लग पहुँच गेली। पहुँच गेली ओतए जेतए पहिल दिन गाममे प्रवेश केली। मनमे उठलैन- यएह देह छी, तीनटा टटघर आ एकटा भीतघरमे बसै छेलौं, तेहेन रौदी भेल जे घर छारल नै

गेल। तीन सालक अँटकल पानि डूम्मा बरिसल। एकोटा घर दढ़ नै रहल जेतए चैनसँ रहि सकितौं।

मुदा समय बदलल, नार हटा खपड़ा देलिऐ। निच्चाँ भीत ऊपर खपड़ा, सतासीक बाढ़िमे भीते खसि पड़ल। जिनगीमे अहिना सभ दिनसँ होइत एलैए, मुदा आजुक परिस्थितिक अनुकूल जिनगी बनबैक खगता तँ ऐछे...।

खपड़ाक पछाइत भीतघरो आ टटघरोपर एस्वेस्टस चढ़ौला पछातिक घरवास सुवल काका आ कमला काकीक छेलैन। तँए मनमे ओते उत्सुकतो नहियेँ। मुदा ई तँ खुशी भेबे केलैन जे अपना अछैते अगिलोक बास भेल।



तिथि: 26 सितम्बर 2014, शब्द संख्या: 4,879

समधीन

बरदहट्टामे जहिना गोटे बरदक जोड़ा एहेन रहैत जेकर सिंग-सिंगहारक संग रंगो-रूप आ पूछो-पैरक एहेन मिलान रहैए जे अनठियाकेँ परेखेमे ने अबैए जे दुनू दू छी आकि एक्के, तहिना गाममे सिनुरिया काका आ खजुरिया समधीनक बीच अछि।

ओना, सिनुरिया कक्काक असल नाओं 'राधारमण' आ खजुरिया समधीनक नाओं 'हसीना खातून' छिऐन। मुदा से छिऐन माए-बापक देल नाओं। जाबे राधारमणक माता-पिता जीबैत रहथिन ताबे तक तँ राधारमणे नाओं बेसी लोक जनै छेलैन मुदा अपन आँखि-पाँखि भेला पछाइत 'सिनुरिया काका' नाओं अरैज लेलैन। जइसँ पैछला नाओं मटिया-मेट भऽ गेलैन आ 'सिनुरिया काका'क नाओंसँ सभ जानए लगलैन, जनैत-जनैत नाउँए पड़ि गेलैन। मुदा तइले सिनुरिया काकाकेँ मिसियो भरि रोग-राग मनमे नै छैन, जहाँ धरि खुशीए छैन। खुशीक कारण ई छैन जे गामक लोक जखन बहराए लगल आ जाबे तक गाम बिसराएल नै छेलै ताबे तक जे कोनो-कोनो फूल, फल, तरकारी आ अन्नोक बीआ अनतएसँ आनि गाममे लगौलक, तहीमे दस-बारह तरहक सिनुरिया आम सेहो आबि गेल। ओना, सभ आमक रंगो आ साइजो एके रंग नहियेँ आ ने सुआदे आकि रसे-गुद्दा एकरंग होइए। मुदा देखैमे तँ लाले-लाल, सिनुराएल लाल, अलाएल लाल, गुलाएल लाल तँ अछिए। किछु एहनो अछि जे जखने टिकुला होइए तखनेसँ ललए लगैए आ किछु एहनो अछि जे जखन कोशाइए तखन लाली पकड़ै छै आ किछु एहनो

अछि जे जुआइत-जुआइत पकड़ै छइ। ओना, पकलापर तँ अधिकांश आनो आम ललिआइए जाइए। गाममे आम तँ दस-बारह रंगक बढ़ि गेल, मुदा नाओं सबहक हेरा गेल। हेराएल ऐ दुआरे जे रोपिनिहारे बिसैर गेला। बिनु फड़ने गौंआँकेँ मतलबे कोन, बिसरबो केना ने करैत, समय छल जखन उत्तर-प्रदेश, भोजपुरसँ लऽ कऽ ढाका-बंगाल तक जोड़ल छल, जे ससैर पंजाब दिस बढ़ल आ बढ़ैत-बढ़ैत दिल्ली, बंगलोर, बम्बइ दिस बढ़ि गेल। नोकरीए करैक छै तँ जेतए बेसी पाइ हेतै, तेतए जाएत। ओकरा कोन जरूरी छै जे गामक गुलाब खासक सिनुर परखत। जखन गामेक नै परखत तँ आनठामक तँ सहजे बाढ़िक पानि जकाँ आएल-गेल...।

सुभ्यस्त समय भेने अदरो नक्षत्र अपन रंग जहिना देखा देलक, तहिना गामक आमो गाछी देखौलक। लाले-लाल गाछी सबहक बहरबैया आम चमकए लगल। कोनो नव वस्तु भेटने मनमे उत्साह जगिते छै, तहिना आमक रंग देखि-देखि लोकोकेँ जगल। मुदा सभ साइजक रहितो सबहक रंग एकरंगाहे छइ। गुलाब-लाल, सिनुर-लाल आ आल-लाल परखैक लोककेँ जरूरते की छइ। आम छी खाइक वस्तु भेल। ओकर गुण तँ ओतबे ने भेल जे मीठो हुअए आ बेसियो हुअए। तैसंग बेसी फड़बो करए। गौंआँक उत्साह एते बढ़ि गेल जे आमक विचार करब जरूरी भऽ गेल। तइमे सबहक गाछीक आम सहरगंजा भऽ गेल। एक तँ अपन जे पुश्तैनी अछि ओ तँ अपन नाओं जपिये रहल अछि मुदा नबकाक नामकरण भेने बिना काज केना चलत। अही नामकरणक उत्सवमे राधारमणक नाओं 'सिनुरिया काका' पड़ि गेलैन। जेकरो पित्ती हेथिन सेहो कक्के कहए लगलैन। आ जेकर भातीज हेथिन सेहो कके कहए लगलैन। अहुना लोक अपन नामो बाबा, दादा, काका इत्यादि रखिते अछि...।

सिनुरिया काका नाओं किए समाज देलकैन? एके समयमे सभ बहरबैया आम पकैक समय भेल, अहुना जेठसँ शुरू भऽ अखाढ़मे भरखैर पकिते अछि। उत्सवक माहौल रहबे करइ, गाछीए-कलम देखैत-देखैत

दस गोरे बिनु बजौले एकठाम भऽ बैस गेला। बैसारमे प्रश्न उठल जे, जे आम टिकुलासँ जुआइ धरि लाले-सिनुराएले अछि, ओ जे पाकत से केना बुझबै? दोसर प्रश्न उठल जे कोन राज्यसँ कोन आम आएल अछि तेकरो ठेकान नहियेँ अछि, ओ केना ठेकनाएब? तेसर प्रश्न उठल जे कोन आम कोगर हएत, कोन गुदगर हएत आ कोन रसगर हएत से ठेकान केना पाएब? तहूमे सभ आम सभकेँ ऐछो नहियेँ, तँए अन्हराक हाथी भऽ जाएत, जेकर रसगर हएत ओ रसगरे बुझबै आ जेकर गुदगर हएत ओ गुदगरे बुझबै। रंग-बिरंगक प्रश्नक बीच सभ ओझरा गेला। मुदा बिना रस्ता भेटने समाज चलबो केना करत। जहिना लोक चलैए तहिना ने समाजो चलै छइ। गुम्मा-गुम्मी बैसार देखि राधारमण फनैक बाजल-

"एतबे टा ओझरीमे जखन सभ ओझरा गेलह, तखन काज केना चलतह?"

राधारमणक विचार सुनिते सुकरतिया प्रश्नकेँ उनटबैत बाजल-

"राधारमणे जे कहता से सभ मानि लेब।"

आगू-पाछू जेते राधारमण सोचने हुअए मुदा ठाँहि-पठाँहि बाजल-

"भाय, आम तँ सहजे आमे छी जे सिनुरिया चानिकेँ सेहो चीन्हि सकै छी।"

तहीपर गौंआँ 'सिनुरिया काका' नाओं रखि बजबए लगलैन। अपन अरजल नाओं छिऐन तँए केकरो अधला नजरिये देखबे किए करता। पितातुल्य पित्तीए भेला।

खजुरिया समधीन गामक समधीन छैथ। अपन माए-बापक देल नाओं 'हसीना खातून' छेलैन। मुदा जगह बदलने बेटीए ने कनियाँ आ आकि आरो-आरो नाओं अरजैत अछि। तीस बर्खसँ अपने बेटी-जमाए लग रहै छैथ। ताड़क आ खजूरक पातक बौस गढ़ैक लूरिसँ हसीना भरल। जहिना खजूर-पातक ओछाइन, सिरमा, पौती बीअनि इत्यादि

रंग-रंगक बौस बनबैक लूरि, तहिना ताड़क पातकैं चटाइ, पंखा, झुनझुना इत्यादि गढ़ैक लूरिसँ सेहो भरल छैथ। जहिये बेटी ऐठाम हसीना पएर रोपि काजमे भागीदारिनी भेली तहियेसँ लोक 'खजुरिया समधीन' कहए लगलैन। ओना, वयस पौला पछाइत समैध-समधीनक समय अबैए मुदा से हसीनाक संग नै भेल। जहिना कु-समैयोमे अन्हर-विहाड़ि, पानि-पाथर आबि जाइ छै तहिना खजुरियो समधीनकैं भेल...।

सिनुरियो काका समधीने कहै छैन आ जे सभ सिनुरिया कक्काकैं 'सिनुरिया काका' कहै छैन सेहो खजुरिये समधीन कहै छैन। मुदा जे जे कहैन, समाज तँ विशेषाधिकार दइए देने छैन। जइसँ किए ओ बुझती जे गाम अपन नै छी, तहूमे बराबरीक हिस्सा। कहुना भेली तँ गामक समधीन भेली, किए मनमे कुवाथ हेतैन जे कोनो पुरुख आँखि चढ़ि किछु कहैए। बजैक अधिकार जेते समैधकैं तइसँ कम किए समधीनकैं हेतैन। हएबो उचित नहियेँ। किएक तँ सृष्टिक सृजनमे दुनू एहेन अछि जे जात जकाँ असगरे चलियो नहियेँ सकैए। ओना, महिला जगत नमहर अछि, तँए रंग-रंगक घर-दुआर, बोल-बाइन, सर-सम्बन्ध तँ ऐछे मुदा तइमे समधीन ऐगला मुहराक भेली। ऐगले मुहरा ने गाड़ीकैं रस्तो धड़ा चला सकैए आ दब-उनार करैत उनटाइयो सकैए। जँ समैध प्रेमसँ कहथिन, तँ समधीनो प्रमाग्नि भऽ बजती, नहि जँ क्रोधसँ कहथिन तँ ओहो क्रोधाग्नि नै होइथ, सेहो उचित नहियेँ...।

मुदा से बात सिनुरिया काका आ खजुरिया समधीनक बीच नै अछि। जहिना राधारमणकैं सौंसे गामक लोक सिनुरिया काका कहै छैन तहिना हसीनाकैं सेहो 'खजुरिया समधीन' कहिते छैन। से कोनो पुरुखे-पात्र नै महिलो-पात्र। जहिना एक उमेरिया दुनू तहिना एक कान्हीक सेहो। रंगो-रूप भगवानेक देल। कोन भगवानक देल, से ओ दुनू जानैथ। मुदा मासक हिसावसँ जहिना भगवान रंग बँटै छैथ तहिना दुनूकैं एकमसुआ बुझि रंगो-टीप देने छथिन। तेतबे नहि, हाथो-पैरक मिलान

एहेन जे तेहल्लाकेँ परखब कठिन...। एक तँ अहुना जखन लोक घर छोड़ि आगू निकलैए तखन बोलीमे टाँस आनए पड़ै छै, हसीना तँ सहजे माए-बापक घरसँ सासु-ससुरक घर होइत बेटी-जमाए ऐठाम समधीन बनि रहली अछि, तँए तेखार कएल खेत जकाँ जहिना गामक समधीन तहिना समतल बोल...। सिनुरियो काका तेहने, जखन जे मनमे उचरल तखन सएह बजलौं। मुदा से पारखी खजुरिया समधीन। तहूमे ताड़-खजूरक बीच रहनिहारि, जइ जगहपर टगल-मरल आबि सिंहासन जमा सिंह बनि घण्टे भरिमे केते राज-पाट उनटा अपने उनैट घर दिस विदा होइए। तइ खेत परहक उपज हसीना।

ओना, सिनुरिया काका सौंसे गाम एक-बेर-दू-बेर दिनमे घुमिते छैथ, मुदा बैसार तीनियेँ-चारिठाम छैन। चारू बेवसायी जगह, जइमे एकटा खजुरियो समधीनक छैन। ओना, घर, बेटी-जमायक छी, मुदा घरोक बात तँ छोट-छीन नहियेँ अछि। जइ नाओंसँ बेसी लोक घरकेँ जनलक घर तेकर भेल। जेकरा समाजक अधिकार भेट जाइ छइ। केना नै भेटौ, जएह पञ्चवैया, सएह नीरनैया। मुदा किछु हौउ, हसना तँ हसने भेली। जमाए-रशूलोक विचारमे कोनो घटी-बढ़ी नहि। अनुकूले। अनुकूल ई जे घरक सभ कियो तँ जोटले छी, सभ सबहक तरी-घटी जनिते छी, तखन माइए-बापक नाओं ने लोक जगबए चाहैए से तँ ऐछे, जेहने अपन माए तेहने ने घरोवालीक माए। तेतबे किए, कुलक्षण-सुलक्षणक परीक्षा सेहो एकेठाम वृत्तिये अछि, भलेँ कियो अनेरूआ आ कियो कुलपूज हुअ...।

बरसाती समय भेने सिनुरिया काकाकेँ बैसारीमे बढ़ोतरी भऽ गेल छैन। हाटक काजसँ विदा भेला, रस्तामे खजुरिया समधीनक घर पड़ैत, दुनूकेँ अजमा नेने रहैथ। करीब अदहा किलो मीटरक दूरीमे दुनू गोरेक घर। ओना, ई बात सिनुरिया काकाकेँ बुझल जे माघक चद्दैर, भदबरिया छत्ता-लाठी लाइए कऽ घरसँ निकली मुदा गामसँ कनियेँ हटि हाट, करीब

किलो मीटरक दूरीपर। तहूमे जँघियाएल हाट। जँघियाएल ई जे एक दिन अहिना हाटपर रहैथ तखने बरखा शुरू भेलै, पुबरिया हवा सह दैत रहै आ पुबेसँ बरखो अबैत रहै, जेकरा लोक कातेसँ घुआँ जकाँ देखै। तीमन-तरकारी कीनि गमछामे बान्हि विदा होइत रहैथ आकि बर्खा-पानि अबैत देखलखिन। मनमे एलैन जे जखन हाटक काज भइये गेल तखन अनेरे किए हाटोकेँ अजबाड़ने रहबै। अनेरे हाट-बजार भरल रहने जेबीक हेरा-फेरी हएत। तहूमे पँजराक जेबी, एक-दोसरसँ सटल, लोकक जेबीमे हाथ दऽ दियौ, जँ बुझि गेल तँ कहबै, अपना जेबीमे दइ छेलिऐ, अहाँमे चलि गेल। जँ सुतरल तँ शिकारी भेलौं। नै सुतरल तँ शिकार भेलौं।

..धोतीक ढट्ठा बान्हि सिनुरिया काका घर दिस दौगला, घर तक दौगले एला, मुदा बरखाकेँ पकड़ऽ नै देलखिन। से केलहा अनुभव रहैन, तँए बेसी बिसवास छेलैन।

ओना, मेघो छँटल सन रहइ। दोसर, मनमे ईहो रहैन जे जखन टोले-टोल जाएब तखन जेतै बरखा हुअ लगतै, तेतै अँटैक जाएब। तहूमे कोनो कि हम ओहेन रूआबी लोक छी जे केकरो दुआर-दरबज्जा दिस तकबो ने करबै। तहूमे कोनो कि बड़का भोजनदास छी जे हजारटा रसगुल्ला, पनरह किलो अण्डाएल ललमुहाँ रोहु माछक ओरियान घरबैयाकेँ करए पड़तै। उनाड़ी बर्खाक ओकाइते केते होइ छै, दस-पाँच मिनट भेल, तइले एक जुम तमाकुले की कम भेल। खजुरिया समधीनक घरसँ कनी पाछूए रहैथ तखने टोपर बान्हि मेघ आबि टीपा-टीपी टीप-टीपाए लगल। टीपो-टीपी कि कोनो एके रंगक होइए, केतौ झिसियाएल, केतौ बुनियाएल, केतौ गोलियाएल, केतौ पथराएल, तँ केतौ बिजलियाएल...। मुदा से नै गोलियाएल टीपा-टीपी देखि सिनुरिया काका दौगल खजुरिया समधीनक ऐठाम पहुँचला। पुबे-पछिमे रस्ता, दछिन मुहेँ उत्तरसँ मुँह खुजल घर। ओना, घरक मुहोँ केते रंगक होइए, एक फीट, एक हाथ, दू फीट, डेढ़ हाथसँ साढ़े तीन फीट पर्याप्त भेल। मुदा जइ घरक

एक भागे खुजल रहत तेकरा की कहबै.? ओहने खुजल मुँहक खजुरिया समधीनक घर। रस्तेपर सँ छड़ैप कऽ सिनुरिया काका ऊपर चढ़ला। ऊपर चढ़िते, बजला-

"जेहने छुदराही घरवाली तेहने छुदराहा ओछाइन, केना पहुनमाक पैत बँचत?"

ओना, हसीना समधीनकेँ मनमे जोरसँ धक्का लगलैन, मुदा किछु जगह एहनो तँ होइते अछि जैठाम सोचै-विचारैक समैये ने भेटै छइ। बनौआ हुअ आकि सिरजौआ, मुदा भेल तँ समधीने मिलान। की ओ नै जनै छैथ जे हमरे सन नारी अपनो घरमे छैन्हे। तखन तँ भेल भरि मुँह बाजि जिनगीक सुख-दुखमे भागीदार बनब...।

सिनुरिया कक्काक बात सठलो ने छेलैन आकि बिच्चेमे खजुरिया समधीन बजली-

"जेहने छुदराएल पहुनमा तेहने ने सुआगत। केतौ प्रेमो भेटत केतौ परानो जाएत।"

ताड़क नमहर चटाइ। जैपर अपन समचा पसारि खजुरिया समधीन पंखा बनबैत रहैथ, सिनुरिया काकाकेँ देखिते, चीज-वौस एक भाग करए लगली। बिना एकबगली केने बैसैक जगहो नै बनैत। तैबीच अधभिज्जू काका गमछासँ देह परहक पानि पोछए लगला। ओना, खजुरियो समधीन बैसले-बैसल चीज-वौस नै बगलौलैन। उठि कऽ ठाढ़ भऽ नुहैर कऽ हटबए लगली। कारखानाक बीच जहिना समधीन तहिना स्नान कएल सिनुरिया काका। दुनू अपना-अपना नजरिये एक-दोसराकेँ पढ़बो करैथ। ओना, सिनुरिया काका देखौआ नहाएल नै रहैथ बर्खाक पानिमे भीजल छला। मुदा मन अपन से मानैले तैयारे नै रहैन। कहैन जे लोक कलोपर नहाइए, इनारोपर नहाइए, डबरोमे नहाइए, पोखैरोमे नहाइए, मरलो धार मे आ जीतहो धारमे तँ नहाइते अछि। तेतबे किए,

गंगाक सिमरिया घाट आ इलाहावादक त्रिवेणी घाटमे सेहो स्नान करिते अछि, मुदा वदलाएल स्नानकेँ की कहबै? मन मानि गेल रहैन जे समधीनियाँ-आँखि जेहेन चमकैन मुदा अपने तँ से नै छी। बजला-

“समधीन, की हाल-चाल अछि?”

सिनुरिया काका विचारकेँ दाबि छोट करैत बजला तेकर कारण जे एक तँ लोक अपने बेथे तेते बेथाएल अछि जे कियो सुनिनिहार नै भेटै छै, तैपर जँ खोंरना लऽ खोंचारि देबै तरवन तँ एकेबेर चुल्हे धधैक जाएत। मुदा मन गवाही दैत रहैन जे समधीन ओना, बुढ़ाएल जकाँ बुझि पड़ै छैथ, दस-पाँच बर्खक खेल छैन, मुदा मुर्दघट्टीक बाटपर तँ ठाढ़े छैथ। बिजली-पंखाक आगू ताड़क पंखाक पूछ केतेकाल, जेतेकाल बिजली नै रहल मात्र तेतेकाल। मुदा मुँहक बरीसँ पहुनमा थोड़े खुश हेता, जखने बिजली औत तखने कारखानाक इंजन सेहो औत। मुदा एते बात तँ जरूर जे समधीनक भोगल जिनगीक किछु रहस्यमय विचार छिपल अछि। जँ से नै अछि तँ लोक ऐ बेवसायकेँ अंगीकार किए केलक।

जाबे सिनुरिया काका देह-हाथ पोछि कऽ सुखौलैन ताबे खजुरियो समधीन चटाइकेँ दुनू कोड़ पकैड़ दू बेर झाड़ि आगूमे पसारि देलखिन। सिनुरिया काकाकेँ बैसबैत अपना बैसलो ने छेली आकि बिच्चेमे बजली-

“हमरा सबहक दिने-दुनियाँ बेपाट भऽ गेल अछि तखन तँ कहुना दिन खेपिये जाइ छी। ऐ देहक ठेकाने केते जेतेकाल आँखि तकै छी खाली तेते।”

एक संग खजुरिया समधीन अपन जिनगीक प्रश्न उठा सिनुरिया कक्काक मनकेँ तोपि देलकैन, मुदा दोसर दिस मनमे एलैन, आशा बान्हि जिनगीक बाट चलब...।

प्रश्न उठबैत काका पुछलखिन- “कारोबारक की हाल-चाल अछि?”

सिनुरिया कक्काक बात सुनि खजुरिया समधीनक मनमे उठलैन- हाल की रहत, बेहाल कहियौ आकि नेहाल कहियौ, छी तँ दुनूक बिच्चेमे। अपन झँपले-तोपल बात खजुरिया समधीन बेटी-जमाए घरक मान सेहो रखबे करती। बाघ रखए बोन आ बोन रखए बाघ। किछु भेलखिन तँ गामक खेलौनेटा नहि, बेटी-जमाए घरक सिरिष-जन सेहो भेली...।

बजली-

“खाइ-पीबै-जोकर जखन भइये जाइए तखन नीक नै कहबै तँ अधलो नहियेँ कहबै, सएह अछि।”

ठिकिया कऽ सिनुरिया काका जे विचार रखलैन से नै सुतरलैन। ओ ठीकियौने रहैथ जे पंखाक आमद-खर्चक बात उठौती, मुदा से नै उठौलैन। जहिना अपन चलाकी अढ़ दबि कऽ छेलैन तहिना ओहो अढ़े दाबि बजली। फेर मनमे उठलैन, मनुख की वनमानुख बनि बोनमे रहल, झाड़ी, डवहारी, दुभियाएल, छीलाएल, चिकनाएल सभतैर तँ ओकर बास छइहेँ। हालो-चाल की कोनो एके रंग रहैए, कियो सासुरसँ मारि खा अबैए तँ कियो सासु-ससुरकेँ मारि कऽ अबैए, कियो माए-बापक हाथे मारि खा चानक बनबैए, तँ कियो माए-बापकेँ मारि, बोहुक संग बंगलोर-बम्बइ ओगरैए। तहूमे परिवार तँ आरो बेसी झँखुराएल अछि। एक दिस बच्चाक स्कूलक समाचार रहल तँ दोसर दिस बेटी बिआहक, तेसर दिस पेटपूजाक रहल तँ चारिम दिस भोजनदासक। इत्यादि-इत्यादि...।

अपनाकेँ समटैत सिनुरिया काका बजला-

“केते उमेरमे पंखा बनौनाइ सिखलिऐ?”

ओना, मनक असल विचार अखनो नै रखलैन। मनमे पंखाक प्रयोजन रहैन जे केते दिन लोक एकरा अभावमे कष्ट कटलक, तेकर निमरजना लेल उपए सोचि कथी उपए केलक। मुदा से नहि, कियो पाकल आम देखि बेठिकियाएल गोला सोझा-सोझी फेक तोड़ि लेत से

केना मानल जेतै? किए ने मानल जेतै, अनुभवीक फेकब भलेँ नै हौउ, मुदा एहनो तँ सम्भव ऐछे जे आममे गोला लागियो सकै छइ। मन गुम्हरलैन। गुम्हरलैन ई जे एके तीरे आकि एके गोलीए निशान नै सधै, मुदा अनधुन हजार-पान साए फेकला बाद तँ आम टुटियो सकैए...।

जहिना प्रश्न फेक सिनुरिया कक्काक मन वौड़ाए लगलैन तहिना दोसर दिस खजुरिया समधीनक। समधीनक मनमे एक संग अनेको प्रश्न उठि गेलैन- अपन जन्म डीह थोड़े छी, जे झूठ बजने माए-बापक नाक कटाएत। तहूमे ऊपर बाइली बेटी-जमाए ऐठाम छी, कनी-मनी कलछपनक मोजर थोड़े हेतइ...।

खजुरिया समधीनक मनमे ई बात ऐबते जेना छाती सकतेलैन। छाती सकताइते ताना मारैत बजली-

"समैध, हाल-चाल की कहबैन, हिनके सबहक आँखि-मुँह देखि तीस बर्खसँ जीबैत एलिऐन, आब केते दिन जीबे करब, बस एतबे हकार देने जेबैन जे मुइला पछाइत देखि लिहैथ जे खजुरिया समधीन चोरी-छिनरपन कऽ धरतीक अन-पानि खेलकैन आकि अपन बाँहि-बलसँ कमा कऽ खेपलैन, जे किछु देलैन तेकरा उपयोग कऽ जीलकैन आकि उपभोग कऽ।"

गैंची माछ जकाँ खजुरिया समधीन तेना ने तरे-तर छछाड़ी कटैत तेते पनिगर थालमे पहुँच गेली जे सिनुरिया काकाकेँ भाँजे बेभाँज भऽ गेलैन। फेर मनमे भेलैन जे एना नै काज चलत। बजला-

"समधीन, बिआहमे केतेटा रहिऐ?"

सिनुरिया काका ई सोचि प्रश्न फेकलैन जे जुआनी-जबानी जिनगीक वसन्त छी। जेकरा सभ चाहैए, मुदा भऽ की रहल अछि? मुदा खजुरिया समधीनकेँ अपन जन्मदात्री माए-बापपर नजैर पहुँच गेलैन। देखल-भोगल माए-बापक परिवार, जइ परिवारसँ बिआह-संस्कार तक

भेलैन। साधारण किसान परिवार, कट्ठा दसेक अपन खेत, परदेशिया सबहक खेत मनखप लऽ पाँच बीघा जोतक किसान परिवार। खेतीसँ जुड़ल परिवार तँए खेतीक सभ लूरि परिवारमे सभकेँ। ओना, बिआह माए-बाप ठेकनाइए कऽ केने रहैन। ठेकनाएल ई जे अपने तरहक किसाने परिवारमे केने रहैथ।

..मुदा जातीय दुर्गुणक चलैत सभटा खेत बोहा गेलैन। बँचैत-बँचैत कट्ठा भरिक घराड़ीमे चौघारा घरटा बँचलैन। मुदा जहिना जातीय दुर्गुण छै तहिना सु-गुणो तँ छइहे। ताड़-खजूरक पत्ताक कारोबार करैक रोजगारो तँ आबिये रहल अछि...। मनमे उठिते जेना खजुरिया समधीनक छाती डोलि गेलैन। बाट-पड़ल घुच्चीक बीच अँटैक गेली। घुच्ची ऐ दुआरे जे मनुखमे अपन शक्ति छै, जे बाटक घुच्चीकेँ छीलि-छालि एकबट्ट कऽ लैत अछि। सासुर ऐबते खजुरिया समधीनक जिनगी घुच्चीमे फँसि मोड़ा गेलैन। जिनगीक बदलैक परिस्थिति बनलैन। जे हसीना माए-बापक ऐठाम अपन खेत-पथार, वाड़ी-फुलवाड़ीमे बारहो मास गीति गाबि समय बितबै छेली, सएह आइ हसीनाकेँ जिनगी मोड़ि सोलहन्नी अनाड़ी बना देलकैन।

तीन भाँइक भैयारीक परिवारमे खजुरिया समधीन छोट दियादनीक रूपमे सासुर एली। खगल घर, हाथे-पैरक बले चलैत। बरख दुइए-अढ़ाइयेक पछाइत भैयारीमे भीन-भिनौज भऽ गेल। कट्ठा भरि घराड़ीमे चौवगली घर, घरक आगूओ आ पाछूओमे किछु-किछु जमीन खाली। तीनू भाँइक बीच सबूतन छह धूर दू पौआ, दू कनमा, दस कनइ आ दस फनइक बँटबारा भेल। जे बँटवारा भाग लगा-लगा भेल, मुदा घरक अगवास तेहेन जे लग्गी-डण्टासँ बँटवारा हएबे कठिन भऽ गेल। तत्काल तँ घरे-घर आ अगवास साझीए रखलक, मुदा परिवारो तँ परिवार छी, दुनू जेठ भायकेँ तीन-तीन सन्तान, छोट भाए सन्तान विहीन। हालेमे बिआहो भेल आ उमेरोमे सभसँ छोट। चारि-पाँच बरख भीन-साझीक

बीच परिवार चलल। भीन-साझीक माने ई जे घरे-घर बँटा, चुल्हि गड़ा गेल, चारिम घर जे दरबज्जा जकाँ छल ओ साझीए रहल। ताड़-खजूरक पातक कारोबार। कारोबार ई जे जहिना खजूरक पातकेँ बीअनि, ओछाइन, मौनी-पौती बनबैत तहिना ताड़क पातकेँ पंखा, चटाइ, झुनझुना इत्यादि बनबैत। जे कारोबार घर-अँगनासँ बाहर धरिक छेलैन। घर-अँगनाक माने ई जे आँगन-घरमे बीनै छेली आ बाहर जा बिकाइ छेलैन। गाममे ताड़ो-खजूरक गाछक कमी नहियेँ। कमियोँ केना रहत जइ गामक लोक आमक शौखीन रहत ओइ गाममे आमक गाछी बेसी रहत, मुदा जइ गाममे ताड़ीक शौखीन रहत ओइ गाममे तँ तड़बोनीए-खजूरबोनी ने बेसी रहत। जहिना कँटाह खजूरक पात, तहिना धराह ताड़क पात। दुनू दिस धार, जहिना छाजामे तहिना पातमे। गाछक कँचका पातकेँ सुखबैले जगह चाही, ओना, खजूरक पात घरक चारपर सुखबैत, मुदा ताड़क छाजा तँ भारी होइ छै जे घरेक छार उजारत, तँए जमीनेपर सुखबए पड़ै छइ। तैपर सँ हरोथिया करची सेहो, जेकर डाँट पंखामे लगैत, आ बाँसो, जेकर बत्ती डाँटमे लगैत तइ रखैले रक्का-टोकी शुरू भइये गेल रहै, मुदा दोसरो कारण भेल।

..दोसर कारण ई भेल, जेठ दुनू भाँइक परिवार नमहर, काज केनिहार दू-दू गोरे, मुदा छोट-छोट बच्चाकेँ सम्हारैमे समय लगैत तँए तेसर भाएकेँ माने खजुरिया समधीनकेँ बेसी काज भेने आमदनियोँ बेसी होइ...। खसैत जिनगी अपन जेठ दुनू भाँइ उठैत तेसर भाइक जिनगीसँ द्वेष रोपि दोषारोपन शुरू करए लगल...।

माए-बापक देल संस्कार खजुरिया समधीनक परिवारकेँ अनुकूल बनौलक। अनुकूल ई बनौलक जे जहिना पिता तहिना माता बनि पोस पबैक लूरि सिखा देने रहथिन। जइसँ खजुरिया समधीन अपना पतिकेँ सेहो अनुकूल बना नेने रहैथ, जे यएह उमेर दुनियाँकेँ चिन्हैक अछि, ई उमेर अवोधसँ सुवोध बनैत सियान बनैत अछि। चाहे सियान पागल बनू

आकि सियान मनुख, मुदा हूसब तँ हूसैत-हूसैत हुसिया जाएब। जँ अपन तराजूपर घरमराजक काँटा लगा तौल लेब सेहो भऽ सकैए आ नहि जँ धोपचटेमे रहि जाएब तँ समाजक काँटा होइ आकि अपने वंशक, जइ दिन तौलल जाएब तइ दिन सभ कियो कानि कऽ रहि जाएत जे फल्लाँक वंश बँचल छै आकि बिलैट गेलइ। मुदा से नहि, सासुर ऐबते खजुरिया समधीन फाँड़ बान्हि जिनगीमे कूदि गेली। मनुखकेँ खगते केते छै, जेहेन जिनगी तेहेन खगता। जखन दुर्वासा मुनि दुभि खा कऽ कृष्णक गुरु बनैक दम अपनामे भरि लेलैन तखन हम सभ तँ अन्न खाइ छी...।

आगू दिस सम्बन्ध बनैक जहिना स्तर अछि तहिना पाछूओ दिस तँ ऐछे, ओही स्तरानुकूल दुनू जेठ भाइक परिवारक बीच सम्बन्धमे प्रगाढ़ता आएल आ तेसर भाएकेँ आगू बढ़ैसँ रोकैक षड्यंत्र रचए लगल। वएह रचना दुनू भैयारीक परिवारक धर्म ग्रन्थ बनि गेल। सात सालक बेटी खजुरिया समधीनकेँ, मुदा साँझ-परात दुनू दियादनियोँ आ भैंसुरोक मुँहक गारिसँ तरे-तर गड़ैत पताल पहुँच, अपनाकेँ सवुरक गाछमे बान्हि मानि लेलैन जे मुँहक गारि ताधैर लागि नै करैत जाधैर ओकरा बेवहारिक रूप नै देल जाएत। तँए जेठक बात छिऐन, अपन जिनगी तँ लोककेँ अपने हाथ-पैरक असिरवादे चलैए, हुनका सबहक बातकेँ असिरवादे बुझबैन, कमसँ कम अपन सम्बन्धक परिचय तँ कराइये रहल छैथ। खाएर जे से...।

दिन झूकि गेल रहै, मुदा साँझ नै पड़ल छल। संजोगसँ तीनू भैंयोँ आ तीनू दियादनियोँ अँगनेमे रहथिन। स्त्रीगणक बीच नैहरक बड़प्पन आ छोटप्पनक बात जेठकी दियादनी चालि देलैन। खजुरिया समधीन ई नै बुझि पेली जे स्त्रीगणक एहनो सु-भाव बनै छै जे जँ अपन सासुर परिवारमे डुमैत देखैए तँ नैहरक झाँपल-तोपल बातसँ दोसराकेँ झाँपए चाहैए...।

खजुरिया समधीनकेँ एक दिस भाए-बापक किसानी संस्कार आ दोसर दिस अपन लूरि-बुधिक संस्कार एते जोड़ मारि देलकैन जे फाँड़

बान्हि आँगनमे माटि फेक बजली-

"जँ केकरो माए-बाप जनमा दूध पिऔलकै तँ की हमरा पानि पीआ पोसलकै?"

नक्शा बनाएल सिपाही जकाँ एक दियादनी, खजुरिया समधीनक बाँहि पकैड़ आगूमे बेटाकेँ ठाढ़ केलक, तहिना एक भाँइ पतिकेँ। अनधुन तीनू बेटियो, अपनो आ पतियो मारि खेलक। मारि खेला पछाइत खजुरिया समधीन पतिकेँ कहलखिन-

"जिनगीक पहिल मरन भऽ गेल। जे बँचल अछि आकि बँचल रहत, ओहीसँ ऐगला जिनगी बनबैक अछि।"

अपना देहमे खजुरिया समधीनकेँ स्त्रीगणक मारि लगल रहैन तँए देहक चोट कम आ मनक बेसी रहैन, दोहरी चोट दुनू दियादनियोँ आ दुनू भैंसूरो मिलि पतिक सोझहामे नंगटे ठाढ़ कऽ देने रहैन। मुदा तैयो तीनूमे अपनाकेँ होशगर बुझि खजुरिया समधीन पतियो आ बेटियोक सेवा करए लगली। धिया-पुताक मारि, बेटी लगले नीक भऽ गेलैन, मुदा लाठीक मारिसँ पतिक कपारो फुटल, डेनो टुटल आ देहो चुराएल रहैन। एक मास धिसियौर काटि पति मरि गेलैन। ओना, लोक-लाज दुआरे दुनू दियादनियोँ आ भाइयो कनबे कएल, माटियो देलक मुदा खजुरिया समधीनक मन बड़प्पनसँ अड़प्पन दिस ससरए लगलैन।

पतिक मुइला पछाइत खजुरिया समधीन मास दिन तक ऐगला जिनगीक विचार करैमे हेराएल रहली। कारणो छल जे एक तँ पति विहीन सोग, दोसर काजो-उदेम आन समयसँ अलग बदैल गेलैन, जइसँ मन नव काज दिस खिंचा गेल रहैन...।

जेना-जेना आगू मुहेँ समय ससरए लगल तेना-तेना अपनो 'पतिक' सोग कमए लगलैन। जे सोभाविको अछि। सोभाविक ई जे जिनगीक जे मूल समस्या, जिनगी ठाढ़ भऽ चलैक, अछि ओ तँ आन कोनो समस्याकेँ

धकैलते अछि। ओना, दोसर कारण ईहो छेलैन्हे, जे पैछला जे कमाइ रहैन ओ पतिक दबाइ-दारूक संग पथ्य-पानि होइत दुनू माए-बेटीक खेनाइ-पीनाइ धरि पार लगौलकैन। मुदा मास दिन बीतैत-बीतैत ओहो सभटा जे घरक धएल-धरल रहैन, निङहैट गेलैन।

मास दिनक समय खजुरिया समधीनकेँ झिकझोड़ि देलकैन। पैछला जिनगीकेँ झिकझोड़ि खसा-पड़ा एकबट कऽ देलकैन। मुदा जाधैर मनुखो आ आनो-आन जीव-जन्तुक घटमे परान रहै छै ताधैर तँ जिनगीक आशा रहिते छइ। सएह खजुरिया समधीनकेँ सेहो भेलैन। आँखि उठा घर दिस तकली तँ बुझि पड़लैन जे घरक तँ चीनमारेक खुट्टा टुटि गेल! आब केना परिवार ठाढ़ रहत? कोनो परिवार उपारजनपर ठाढ़ रहैए। जेहेन उपारजन तेहेन घरक चुहचुही आ जेहेन घरक चुहचही तेहेन लोकक चुहचुही...।

खजुरिया समधीनक मनमे उठलैन, अछैते लूरिये जीब केना पाएब? ताड़-खजूरक पातक बौस बनबैक लूरि अछि, जेकर खगता अपनो अछि आ लोकोकेँ छै, मुदा पात हाथ तक पहुँचत केना? जहिना कुशल स्वावलंबी करीगर कँच्चा माल आ औजारक अभावमे अपनाकेँ अधमिरित बुझि आशा बान्हि हँसैत-खेलैत आगू डेग ई सोचि बढ़बैए जे जहिना जमीनसँ सात सीढ़ी ऊपर अकास अछि, तहिना सात सीढ़ी नीचाँ पतालो अछि जैबीच दुनियाँ अछि, तहीमे ने हमहूँ छी। परिवारक उपारजनक अदहा काज मरल देखलैन। मरल ई जे अपने सुखल पातकेँ चीरि बौस बनबै छी, से गाछसँ आँगन धरि पहुँचत केना। जहिना उत्तरी बिहारे नै आनो-आनो राज्यमे दछिनसँ सिमटी-लोहा पार नै भेने ईटाक घरे नै बनि पएल। आ जँ केतौ बनबो कएल तँ लोहाक काज लकड़ी आ सिमटीक काज माटि केलक, तहिना अपना मनकेँ खजुरिया समधीन पुछलैन- “रे मनमा! बाज, बिनु डारिक गाछपर चढ़ि कऽ ताड़-खजूरक पात काटल हेतौ?”

प्रश्न उठिते खजुरिया समधीनक मन थकथका गेलैन। थकथकाइते थाकक-थाक सोग-पीड़ा मनमे उचरलैन। उचरलैन ई गेलैन जे की एहेन समाजमे हमरा सन तीस बर्खक विधवाक बास सम्भव अछि? जे तीन भाँइक भैयारीक परिवारमे जे हाथ पकैड़ अनने छला ओ दुनियाँमे रहबे ने केलाह, तखन कहबो केकरा करबै...।

लगले मन तमतमा गेलैन, तमतमा ई गेलैन जे पुरुख हुअ आकि मौगी, जँ अपन झाँपन-तोपन अपने नै राखत तँ आनक आशा केतेकाल। लगले मन आगू बढ़ि निर्णय करए लगलैन। करए ई लगलैन जे कारोबार अधखरूआ भेला पछाइत जँ ओकरा पुरबै दिस नै बढ़ब तँ जिनगी भार भऽ जाएत। जैठाम परिवारक संग एते पैघ अन्याय भेल आ समाज मुँह तकैत रहि गेल, ओ समाज तँ अपने मरल अछि। तैठाम हमरा सन मनुखक बास हएत! तखन? तखन तँ यएह ने जे जेतएसँ ऐठाम आएल छी तैठाम जा बसी, आकि बेटी-जमाए ऐठाम जा बसी.?

तीन-मुहाँनीपर ऐबते खजुरिया समधीनक मन जेना लसैक गेलैन। एक दिस वृद्ध माता-पिता, दोसर दिस डम्हाइत बेटी-जमाए। माता-पिता मनमे ऐबते फुरलैन अपन जिनगीक भविस 'केते दिन जीब' आ माए-बापक भविस 'केते दिन जीवित रहता'मे बहुत अन्तर अछि। माए-बाप तँ बेटीए जकाँ बुझता मुदा भाए-भौजाइक सम्बन्धक जे हवा-विहाड़ि बहि गेल अछि तइमे तँ आरो दम घोंटि-घोंटि मरब.!

एक कोखिक सन्तानक बीच जैठाम एते दूरी बनि गेल अछि तैठाम मानव धर्म मात्र कल्पना छीहे भाए-भौजाइपर नजैर पड़िते खजुरियाक मन जेना मतमा गेलैन। होइन जे केते बाजी केते नहि, मुदा बकारे नै फुटलैन। वकारो केना फुटितैन, जैठामक पुरुख-महापात्र, सहोदर बहिनकेँ कोसो दूर भगबए चाहैए तैठाम आन तँ सहजे आने भेल...।

खजुरिया समधीनक मन फेर थकथका गेलैन। तीन बट्टीपर ठाढ़ भऽ हिया कऽ तकलैन तँ देखा पड़लैन जे एकटा मरिये गेल आ दोसर

अधमरूए अछि...। बेटी-जमाएपर तेसर नजैर गेलैन। ओहो तँ बन्ने अछि, लोक बजै छै जे दुनियाँमे भीख माँगि खाइ बेटी ऐठाम नै जाइ। तखन? हँ, तखन उपए अछि, मनुख-मनुखेक असरामे रहत, तखन तँ भेल जे पाहुनक रूपमे अपनाकेँ नै बुझि घरबैया बनि रही। मनमे खुशी एलैन। एते दिन पति करबारी छला आब जमाए हएत, तखन तँ एतबे ने अपन इमान राखए पड़त जे जइ समाजमे बास-भूमि छल से नै रहल तँए आन समाजकेँ पहुनाइक सनेस किछु दिऐ। जेते खेबै-पीबै तइसँ बेसी कमा कऽ देबइ...।

खजुरिया समधीनक मन मानि गेलैन जे बेटी-जमाए ऐठाम रहब। मुदा लगले मनमे उठलैन सहनाक बिआह ने दू बरख पहिने भेल, मुदा दुरागमन तँ नै भेल अछि। मन कुचकुचा गेलैन। कुचकुचा ई गेलैन जे दुरागमनोकेँ की सीमा-नाँगैर छै, तहूमे आब, आब लोक दुरागमन करैए आकि माल-जाल फरिछौट करैए। जँ माल-जालक फरिछौट नै होइ छै तँ पति-पत्नीक दुरागमन भेल, मुदा बाल-गोपालक की भेल? देखा-देखी अहिना ने दुनियाँ चलै छइ। मुदा लगले मन बसैसँ पहिने छोड़ैक विचार केलकैन। मनुख तँ मनुख, बोनैया जानवर आकि मेघैया चिड़ै थोड़े छी, चास-बासबला ने छी। घराड़ीकेँ जँ खड़का नै लेब तँ तेहेन-तेहेन गरदैन-कट दियाद सभ अछि जे घराड़ी कटैमे केते समय लगतै।

योगी जकाँ खजुरिया समधीन तीनू काजकेँ एकठाम जोड़लैथ। जोड़लैथ ई जे घराड़ी ओहेन लोकक हाथे बेच ली जे दुनू परिवारकेँ कहियो चैनसँ नै रहए दइ। फेर भेलैन जे जखन गामसँ जाइते छी, तखन जँ समाजो रूपेँ कहियो नजैर पड़ता तँ आँखि डोलि जाएत। तँए नीक हएत जे तेहल्लाक बीचमे आड़ि-पाटिक दरमे दुनू भैंयेकेँ दऽ देबैन। तइसँ ईहो हएत जे जँ पहिनौं दाम लऽ लेबै तैयो आशापर ओतेकाल रहबे करब, जेतेकाल बेटी-जमाइक संग घरसँ नै विदा हएब। मन आगू बढ़लैन। बेटीक संग जमाए आ तैसंग अपने जाएब नीक नहि, मुदा कएलो की

जाए? किछु ने। बेटीकेँ अगुआ अपने जाएब। खजुरिया समधीनक मन ठमकलैन। ठमैकते विचार करए लगली, जैठाम तीनूक संग चलैक बन्धन समाजमे अछि तैठाम जँ बन्धन तोड़ि निकली आ दोसर समाज रहैक अनुमति नै दिअए तखन केतए भऽ रहब.?

फेर लगले मन घुरलैन जे समाज तँ समुद्र छी, जइमे लाल मोतीक संग घोंघी-सितुआ सेहो रहिते अछि। तैठाम दुनूकेँ बेराएब कठिन अछि। केतेक एहेन पारखी अछि जे घोंघा-सितुआ आ लाल-मोतीक सम्बन्धकेँ परेख पौत? के बुझत जे घोंघे-सितुआक पेटसँ लाल मोती सेहो अबैए? एक जिनगीक इतिहास छी, तैठाम हमरा नुकाएल नै हएत। डंका बजा कऽ नै कहबै जे समधीन बनि आएल छी, कहबै जे अपन बेटी-जमाइक सेवा करए आएल छी। देखै छी जे नेपालमे नागरिकता लेल एते छान-बान रहितो लोक अपन अंगीतक ऐठाम रहि नागरिकता पाबिये लइए, गाम-समाज तँ ओइ देशसँ बहुत छोट भेल, मनमे ऐबते खजुरिया समधीनकेँ खुशी भेलैन। मन-मानि गेलैन जे बेटी-जमाए ऐठाम रहब अनुचित नै भेल। मुदा लगले फेर भेलैन, मुँह नुका कऽ गाम छोड़बो आ प्रवेशो करब नीक नहि। जँ गामसँ मुँह नुका कऽ जाएब तँ सभ दिन समाजक आगू मुँह खसले रहत, तहिना जइ गाममे छिप कऽ प्रवेश करब ओहो तँ तहिना हएत। ई सम्भव अछि जे जैठामसँ निकलब, तेकरा सोझा नै पड़ने मुँह निच्चाँ करैक प्रश्ने ने औत, मुदा जैठाम आगू जिनगी चलत तैठाम मुँह खसा कऽ रहब.?

खजुरिया समधीनक मन तरसऽ-कलपऽ लगलैन। जहिना एक समाजसँ तरस रहैन तहिना दोसर समाज तड़ैप कऽ पहुँचब छेलैन। लगले मनमे उठलैन सभसँ बड़ो समाज, समाज परिवार आ परिवारक लोककेँ जीवन-मरण दइक शक्ति रखैए। तँए पहिने अपना समाजकेँ पुछि, अनुमति लऽ ली। तखन भेल जे जइ समाजमे जाएब से समाज अंगीकार करत की नहि? किए ने करत, जखन ओइ समाजक सीख-लीख पकैड़

चलब तँ किए ने समाज समाज बुझत...।

मनमे उठिते खजुरिया समधीन अदहा रस्ता खोलि लेली आ अदहा खोलैक विचार करए लगली। समाजो तँ समुद्रे जकाँ ने गुँहखत्ताक पानिसँ लऽ कऽ गंगा-यमुना आ सरस्वती नदी धरिक पानि अपना पेटमे समेट रखने अछि। जँ समाजमे कियो एहेन अछि जे कोनो बातकेँ बिनु बुझनौं बतोत्तर करैए, तँ एहेनो तँ छैथे जे बातोत्तर करै छैथ, तखन? तखन किछु ने। एतबे जे पाँच-दस गोरेसँ विचारि ली। पाँच-दस मीलि करी काज हारने-जीतने कोनो ने लाज। आगू बढ़िते खजुरिया समधीन घरक थारी लोटा, घराड़ीक रुपैआक संग बेटीकेँ अगुआ जमाए ऐठाम विदा भेली...।

गामक सीमान टपिते पाछू घुमि गामकेँ गोर लागि दुनू माए-बेटी आगू बढ़ली। बाटमे बेटीकेँ कहलखिन-

“बुच्ची, बिनु पुरुखक परिवार ओहने भऽ जाइ छै, जहिना बोनमे राम विहीन सीताकेँ रावणक फाँसमे फँसि भेलैन।”

सहनाक मनमे कोनो विकार नहि। अखन ओ उमेर नै जे सासुरक बास बुझैत, दूधमुहौं बच्चा जहिना माइक संग काँट-कुशसँ लऽ कऽ कोठा-सोफा धरि, माइक संग एके रंग बुझैत, तहिना सहनो...। बाजल-

“से की, से की माए?”

बेटीक जिज्ञासा देखिते हसीना फूलक कोढ़ी जकाँ प्रस्फुटित होइत बजली-

“बेटी, बेटी चाहे राजघाटक हुअए आकि मुर्दघाटक, बेटी-बेटीए होइए।”

माइक झाँपल-तोपल बात सहना नै बुझि पेलक, फेर जिज्ञासा करैत बाजल- “से की माए?”

सह पबिते हसीना सहैट आगू बढ़ि बजली- “बुच्ची, जहिना सीता महरानी, महरानी नै बनि बोने-बोन बितेली, तहिना सभ बेटीकेँ बितबैले

कलेजा थामि लेबा चाही। जाबे तक आँखि तकै छी ताबैए तकक ने हमर आशा तोरो हेतौ, तेकर पछाइत तँ अपने लूरिये-मुहें ने जिनगी बितेमें।"

माइक बातसँ जेना सहनाकेँ माथपर किछु भार-स्वरूप पड़ल। मुदा भारो तँ साधारण नहियेँ जे सहना बुझि पबैत...।

आने मिथिलांगना जकाँ सहनो मुँह बन्न कऽ सुनि लेलक। बाजल किछु ने।

गामक सीमान माने सहनाक सासुर आ खजुरिया समधीनक समधियौरक सिमानपर पहुँचते दुनू माइ-धी बैस रहली। किरिण डुमैक समय। बाध-बोनसँ गैवार-महींसवारक संग गोबरबिछनी, घसवाहिनी सभ गाम दिस विदा भेल तँ दुनू माए-बेटीकेँ बैसल देखि एकटा घसवाहिनी बजली-

"सुआसिनी, कोन गाम जाएब?"

गैवार-महींसवार गाए-महींसक संग आगू बढ़ि गेल मुदा गोबरबिछनियोँ आ घसवाहिनियोँ ठाढ़ भऽ गेली। 'सुआसिनी' सुनि खजुरिया समधीनकेँ सुआस एलैन। सुआस ऐबते बजली-

"अखन धरि बटोही छेलौं, मुदा आब से नै छी, जँ ऐ गामक लोक रहए देता तँ अही गाममे रहि जाएब।"

'अही गाम' सुनि सभकेँ आगूक बात बुझैक जिज्ञासा भेलैन। घासक छिट्टो-खुरपी आ गोबरक पथियो सभ रखि चारूभर सँ दुनू माइ-धीकेँ घेरि कऽ बैस गेली। सोनियाँ दादी सभसँ उमेरगर, तँए सभ हुनके गप करैले देलकैन...।

सोनियाँ दादी खजुरियाकेँ पुछलखिन- "ऐ गाममे कियो अंगीतो छैथ?"

'अंगीत' सुनि खजुरिया समधीन सहनाकेँ देखबैत बजली- "ऐ बच्चाक सासुर छिऐ, बाप नै छै, हम माए छिऐ, तँए जिनका संग दान केने

छी तिनका लग पहुँचबए जा रहल छी।”

सहनाकेँ गामक बेटी नै पुतोहु बुझि संकोच करैत सोनियाँ दादी पुछलखिन-

“किनकर पुतोहु छथिन?”

जहिना पत्नी पतिक नाओं लइसँ संकोच करैत तहिना कनियाँक माइयो तँ संकोची भइये जाइ छैथ। से खजुरियो समधीनकेँ भेलैन, मुदा संकोचकेँ संकुचित करैत खजुरिया समधीन बजली-

“रशूल, जमाए हेता।”

रशूलक नाओं सुनिते सोनियाँ दादी थकमका गेली। थकमका ई गेली जे रशूलक घर तँ अपने घर लग अछि। लगक पड़ोसिया तँ हम भेबे केलिऐ, तँए अरियाति कऽ लऽ जाएब नीक हएत। बाल-बोध हुअ आकि सियान मुदा गामक बेटी नै पुतोहुए ने भेली। मुदा हमहूँ किछु भेलौं तँ तेहल्ले भेलौं। कोनो जरूरी छै जे दुनू परिवारमे प्रेमक मिलानीए होइ, गरमिलानियों तँ भइये सकै छइ। एहेन स्थितिमे संगे लऽ जाएब नीक हएत? अनेरे दुनू परिवारक बीच घड़हरिया जकाँ गनजन हएब। मुदा संगो छोड़बकेँ कियो नीक थोड़े कहत? अनेरे लोक कहबे करत जे सोनियाँ दादी चीन्हि कऽ अनचीन्ह केलक। असमनजसमे सोनियाँ दादी पड़ि गेली। मुदा लगले जुइत फुरलैन। जुइत ई फुरलैन जे एहेन विचार असगर-दुसगरमे आबि सकैए, ऐठाम कि कोनो असगरे छी। एक गोरेकेँ समदिया बना घरपर समाद पठा देब नीक हएत, समाज छी अपन सामाजिकता निमाहैक ताबैए तक ने भागी छी, जाबे तक घरवारीक कान तक समाद नै पहुँचल। सुनला पछाइते ने नीक-अधलाक विचार हएत...।

सहरगंजे सोनियाँ दादी बजली- “रशूल ऐठामक समदिया के हेमे?”

जहिना कोनो नव बात, नव काज वा नव समाचार पबिते कियो

ओकरा बाँटए चाहैए तहिना गोबरबिछनियोँ आ घसवाहिनियोँक बीच भेल। एककेँ के कहए जे अनेको समदिया भऽ गेल। दूटा अधढेरबा बच्चिया दियए समाद रशूलक परिवारमे पहुँचल। समाद पबिते रशूल माइक संग पहुँच दुनू गोरेकेँ अरियाति अपना ऐठाम अनलकैन। जेकरा तीस बरख भऽ गेल।

..अपन बात पुछि सिनुरिया काका खजुरिया समधीनपर नजैर अँटका उत्तर तलासए लगला। सिनुरिया कक्काक बात सुनि खजुरिया समधीन ठमैक गेली। ठमैकते मन नाचए लगलैन। नचैत मन माए-बापक संग वाड़ी-झाड़ीमे केना सजमैन, कदीमा इत्यादि अपन हाथक लगौल लत्तीसँ आनि खाइ छेलौं, मनमे ऐबते बिहुस गेली। बिहुसव देखि सिनुरिया काकाकेँ भेलैन जे समधीन नीक जकाँ सभ बात कहती, मुदा लगले खजुरिया समधीनक मन दहैक गेलैन। दहैक तखन गेलैन जखन नैहर-सासुरक बीच अपन टुटैत जिनगी देखलैन। देखिते दहकल मन बिदैक गेलैन।

समधीनक बिदकब देखि सिनुरिया काका भोथिया गेला। भोथिया ई गेला जे ई की भेल- एक मुँह कानब एक मुँह गीत.?

जहिना सिनुरिया काका भोथियाएल तहिना खजुरिया समधीन सेहो वौड़ाएल बतही बटोहिन जकाँ कखनो हँसैत तँ कखनो कनैक सुरसार करए लगली। मुदा बेटी-जमाए ऐठाम कानबो उचित नै बुझि अपन सासुरपर नजैर गेलैन। नजैरकेँ सासुर पहुँचते मुँह मुस्कियेलैन। मुस्कियाइते सिनुरिया काकापर नजैर एलैन तँ बुझि पड़लैन जे भरिसक अपने बातमे ओझराएल छैथ अखन सुनैक मन नै छैन। समैयो तँ सएह भऽ गेल अछि जे केकरा एते पलखैत छै जे माए-बाप आ सर-समाजक बात सुनत आकि बुझत। मुस्कियेली ऐ दुआरे जे जखन सासुरमे तीनू भैयारीमे अपनाकेँ उठैत देखलैन। मुदा लगले भैयारीक दुश्मनी मोन पाड़ि

मनकेँ चूड़ि देलकैन...।

लगले हसनमुँह आ लगले कननमुँह समधीनक देखि सिनुरिया काका आरो भोथिया गेला। ई की भेल? की बिपटाइ कला आ हँसोर कला एके भेल? जोकराइ तँ ओ भेल जे धारा छोड़ि कुधाराक प्रदर्शन करैए, मुदा...।

सिनुरिया कक्काक मन बेकाबू भऽ गेलैन। होश हवसा गेलैन। हवास होइते मनमे उठलैन जे एना झाँपि-तोपि बजने काज नै चलत। खोलि कऽ बजला-

“समधीन, अखन परिवारमे केते आमद अछि आ केते खरच?”

जहिना थलाह हाथे गैंची पकैड़ राखब, आकि अधडरेड़पर सँ बिलक साँप पकड़ब कठिन अछि तहिना खजुरिया समधीनक पेटक बात निकालब सिनुरिया काकाकेँ उकड़ू भऽ गेलैन। गैंची जकाँ ससैर खजुरिया समधीन बजली-

“जानए जअ आ जानए जत्ता। हम तँ उलफी भेलौं, अनेरे कोन जरूरी अछि केकरो घरक नीक-बेजए बुझैक।”

गैंची जकाँ गैंचियाइत समधीनकेँ देखि सिनुरिया कक्काक मनमे भेलैन, एना नै हएत। बजला-

“समधीन, जँ आइ अहाँक पाहुन भऽ जाइ तँ पौहुनाइ कराएब? देखिते छिऐ जे केहेन पानि होइए जे ने बाट छोड़ैए आ ने बाट पकड़ैए।”

ऐ बेर सिनुरिया काकाकेँ सुतरलैन। खजुरिया समधीन बजली-

“समैध, नै पान तँ पानक डण्टियो लऽ कऽ सुआगत करबे करबैन। जानियेँ कऽ तँ भगवान गरीब बनौने छैथ, तखन दरबज्जापर आएल पहुनकेँ नै किछु तँ एक लोटा पानियोँसँ तँ मान रखबे करबैन।”

जहिना पनहाइत गाए महींसकेँ मलकार परेख लैत अछि तहिना सिनुरिया काका खजुरिया समधीनकेँ परखलैन। परेख बजला- “भरि

दिनमे कएटा पंखा बना लइ छिऐ?”

‘कएटा बना लइ छिऐ’ सुनि खजुरिया समधीन ठमैक गेली। ठमैक ई गेली जे एके गरे काज थोड़े होइए। पहिने गाछसँ काँच डारि काटि सुखौल जाइए, तखन ओकरा पत्ताकेँ चीरि-चीरि छोड़ौल जाइए, तेकरा बाद ओकरा छाँटि-छूँटि बाँसक डाँट बना ने बनौल जाइए। तँए ठाँहि-पठाँहि किछु कहब कठिन अछि। बजली-

“कोनो कि एक दिनक काज छी जे दिने-दिन हिसाब बुझबै।”

जइ दुआरे सिनुरिया काका बात उठौलैन से फेर नै भेलैन। मनमे छैन जे एको गोरेसँ पातक भाँज लगलासँ सभ भाँज जँ नहियोँ तँ बहुत भाँज तँ लगिये जाएत। तेकर कारण भेलैन जे जहिना कोनो गाछक सिर उखाड़ला पछाइत उखाड़ैक सम्भावना बढि जाइए, तहिना भेलैन, मुदा गाछक मुसरा उखरत आकि नै उखरत ई तँ प्रश्न अछिए। उखड़ियो सकैए आ नहियोँ उखैड़ सकैए। ई तँ गाछपर निर्भर करैए। मुदा जिनगीक गाछक मुसरा सिराहेटा नै जलाहो होइए। सिनुरिया कक्काक मन थकमकेलैन। थकमकाइते पाछू उनैट देखलैन तँ एकटा मोटगर सोड़ि पकड़ल बुझि पड़लैन। बजला-

“समधीन, नै बुझलौं जे की कहलिऐ- जानियेँ कऽ गरीब भेलौं?”

खजुरिया समधीन जानि आ मानिक अरथे ने बुझै छेली। एकेकेँ दुनू बुझै छैथ, मुदा तेहेन बात पुछि रहल छैथ जे की कहबैन। धखाइत बजली-

“समधी, ईहो बड़ बतबनौन छैथ, हमरा गाम दिस अहिना लोक बजैए जे जान-मान एके छी।”

ओना, सिनुरिया काका जान-मानमे ओझरए लगला। मुदा मनमे एलैन, जिनगी जाल छी, एक दिस घुरछी छोड़बै छी तँ दोसर दिस लगि जाइए। आकि नबके बनि जाइए। आब कहू जे अमीर-गरीब जनमाउ छी

आकि बरखाउ? ई केना झाँपल-तोपलमे बुझब? होइ तँ दुनू छइहे, बुढ़ाड़ीमे बजैकाल सभ बजैए जे हमर जिनगीक अमुक समय स्वर्णकाल छल आ अमुक समय अन्धकारकाल। मुदा केना स्वर्णकाल एबो कएल आ गेबो कएल, से केना बुझबै? जीह जाँति बजला-

"समधीन, एहनो तँ समय रहबे ने कएल हएत जे नीक-निकुत खेबो-पीबो केने हएब आ घरो-दुआर बनौने हएब?"

सिनुरिया कक्काक बात सुनि खजुरिया समधीनक मनमे खुशी उधकलैन। उधैकते चौअनियाँ मुँह फुल-फुलेलैन। फुल-फुलाइते बजला-

"समधी, की दिन छल आ की दुनियाँ, चारूकात हरियरे देखिऐ। मुदा दिन धराबए तीन नाम।"

खजुरिया समधीनक बात सुनि सिनुरिया काका फेर भोथियए लगला। मनमे उठलैन कहू, ई की भेल? एक दिस 'हरिहरे' दोसर दिस 'तीन नाम' सेहो बाजिये देलैन। मन कहलकैन, जहिना अपनेकेँ पीछराह पुरुख बुझै छी तहिना भरिसक समधीनो पिछराहे छैथ। एक तँ एके पीच्छर केतेकेँ पीछरा खसबैए, तैपर टिकासन धेने समधीनो...।

लगले मन धक्का मारलकैन। बजला-

"घरक नोन-तेल आ जारैन-काठीसँ लऽ कऽ लत्ता-कपड़ा, घर-घरहट करैत हाथ-मुट्ठीमे केते सालक पछाइत बँचै छेलए?"

सिनुरिया कक्काक बात सुनि फेर खजुरिया समधीन सुरकुनियाँ मारि बजली-

"समधी, हिनकासँ कोनो लाथ किए करबैन। जहिना ई पोता-पोतीक बीच जीबै छैथ तहिना ने हमहूँ नाति-नातीनक संग अही समाजमे जीबै छी। दुनू गोरे एक बतरिया भेलौं, हम अहाँ जे करबै, जेना चलबै तहिना ने बालो-बच्चा ठेकना कऽ चलतै। जखन अहूँ बाबा-दादाक कोरामे छेलौं तही समय ने हमहूँ छेलौं, जखन दुनू गोरेक माए-बाबू एकठाम दुनू

गोरेकँ रखि खेलौने हेता तखन भइये -बहिनक सम्बन्ध बनौने हेता किने?"

एक संग अनेको प्रश्न खजुरिया समधीनक सिनुरिया कक्काक मनमे आबि अँटैक गेलैन। बर्खाक बुन्नो छोट होइत-होइत छुटि गेल। वादलो टुकड़ी-टुकड़ी होइत छँटए लगल। बीच दोग देने सुर्जक लाली उगल। लाली उगिते खजुरिया समधीनक मन सेहो ललियए लगलैन। सिनुरिया काका बजला-

"समधीन, जेतबो दिन हम सभ ललियाएल रहलौं तेतबो दिन धिया-पुता थोड़बे ललियाएल रहत। तखन तँ जेतबे दिन जीबै छी तेतबे दिनक ने भागी हेबइ। जाइ छी।"



तिथि: 04 अक्टूबर 2014, शब्द संख्या: 6098